वर्ष 42 अंक : 1 11.3.2019 सोमवार (जनवरी - फरवरी) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन ,सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनशुीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

2019
25

3 फरवरी 2019, प्रातः
जब ये मंदिर पूरा हो गया, तो इस साल महाराज हरेक को अक्षरधाम रूप रहता कर दें...
– प.पू. गुरुजी

अहो ! सांकरदा महातीर्थ में 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' की पूर्णाहुति...

अहो ! गुरुहरि योगीजी महाराज के संप, सुहृदभाव व एकता के सिद्धांत पर मनाई 'बंधुजोड़ी शताब्दी' के अंतिम सोपान की दिव्य स्मृतियाँ मानो हमें गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की प्रत्यक्ष हाज़िरी व उनकी प्रसन्नता का एहसास करा गई... क्योंकि इस महोत्सव के प्रत्येक विभाग में गुरुहरि काकाजी - गुरुहरि पप्पाजी द्वारा रचित, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के सेवक, भक्ति एवं ऋण अदा करने हेतु एक जुट हो गए थे। बस ! इसी की सुवास चहुँ ओर फैल रही थी। वे स्मृतियाँ हम सभी के हृदयाकाश में चिरंजीव रह कर, हमारा संबंध प्रत्यक्ष स्वरूप के साथ दृढ़ रखें, ऐसी प्रार्थना के साथ आइए **27** से **30 दिसंबर 2018** के दिव्य क्षणों का लेखनी द्वारा स्मरण करें...

सांकरदा के करीब पदमला गाँव के 'दुर्गा एस्टेट' के परिसर में महोत्सव का सारा आयोजन किया गया। **27 दिसंबर** की सुबह 9:30 बजे **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** एवं **प.पू. दिनकरभाई** ने महोत्सव के मुख्य द्वार **'परम स्नेहल धाम'** का उद्घाटन करके मानो अक्षरधाम का प्रवेश द्वार खोल दिया ! तत्पश्चात् **प.पू. हंसा दीदी** के वरद् हस्तों से सभा मंडप **'सुहृदम्'** का उद्घाटन हुआ और महोत्सव का शुभारंभ करने के लिए सभी उसमें प्रविष्ट हुए। आवाहन् श्लोक के नाद से वातावरण दिव्यता से भर गया। सर्वप्रथम प्रत्यक्ष स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों को शताब्दी पर्व का बॅच अर्पण किया गया। इसी दौरान **संत भगवंत प.पू. साहेबजी** के आगमन से सभी अत्यंत उत्साहित हो गए। तत्पश्चात् शताब्दी महोत्सव की सेवा में तत्पर सभी केन्द्रों के मुक्तों का अभिवादन करते हुए, **प.पू. भरतभाई** ने चतुर्दिवसीय महोत्सव में होने वाले कार्यक्रमों का संक्षिप्त में विवरण देकर, सुहृदभाव के रंगों से रंग जाने के लिए प्रार्थना की। सुरवृंद ने गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की स्मृति कराते हुए भजन प्रस्तुत किए ही थे कि मानो उनकी पुकार सुन कर गुणातीत समाज के शिरछत्र **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** ने 'सुहृदम्' में प्रवेश किया। प.पू. स्वामीजी के विराजमान होने के बाद पवई के मुक्तों ने स्वागत नृत्य 'बंधुबेलड़ी के पथ पर चलते मंगल घड़ी ये आई' प्रस्तुत किया... तत्पश्चात् इस महोत्सव के उपलक्ष्य में–

- गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रिय भजनों में से कुछ भजनों के संग्रह **'हाँजी भला साधु'** को ऑडियो सी.डी. के रूप में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** ने अनावरित किया।
- गुरुहरि काकाजी महाराज ने उन्हें हुए साक्षात्कार का वर्णन जो स्वयं किया था, उस परावाणी का उद्घाटन **'साक्षात्कार दर्शन'** सी.डी. के रूप में **प.पू. दिनकरभाई** ने किया।
- गुरुहरि काकाजी के आशीर्वचन की सी.डी. **'जेनी अमृतवाणी तो वही रही'** का अनावरण **प.पू. भरतभाई** ने किया।
- गुरुहरि योगीजी महाराज की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में सायं प्रस्तुत होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम **'युगपुरुष योगीजी महाराज'** के भजनों की सी.डी. का उद्घाटन **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने किया।
- **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने गुरुहरि पप्पाजी की अमृतवाणी की वीडियो सी.डी. **'शाश्वत् वचन अमृत'** का विमोचन किया।

* गुरुहरि पप्पाजी के संक्षिप्त आशीर्वचनों की ऑडियो सी.डी. **'सुरावली ब्रह्मनी'** का उद्घाटन **पू. दिलीपभाई भोजाणी** ने किया।
* 2016 में गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव जब शिकागो में मनाना था, तब वहाँ के युवकों को विचार आया कि गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी ने जिन संतों, युवकों, बहनों एवं गृहस्थों के जीवन में जो कार्य किया, वह उन्हीं के स्वमुख से जान कर इन 'विभूति पुरुषों' की सच्ची महिमा समझें और भक्ति अदा करें। इस हेतु सभी के इंटरव्यू लिए गए थे। पूर्णाहुति के अवसर पर उन्हीं भावनाओं को प.पू. भरतभाई एवं पवई के भाइयों ने **'अंतर करे प्रेमवंदना'** पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया, जिसका विमोचन **प.पू. स्वामीजी** के वरद् हस्तों से करवाया गया।

यहाँ पर प्रथम सत्र का समापन हुआ और...

गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की दिनचर्या, कार्य, अनुभव, भक्ति का अद्भुत दर्शन कराती प्रदर्शनी **'व्हाला तारी स्मृतिना सहारे'** का उद्घाटन करने के लिए **प.पू. स्वामीजी** गए। ऑडियो-वीडियो की नूतन तकनीक पर आधारित चार थियेटरों ने बंधुजोड़ी की दिव्य स्मृतियों से सबको इतना सराबोर कर दिया था कि वहाँ जाने के बाद समय का किसी को ख्याल ही नहीं रहता था और सबको एक शाश्वत् स्मृति मिल गई थी। दोपहर को सभी ने प्रसाद लिया।

वैसे मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त होने वाले यज्ञ के प्रवेश द्वार **'आहूति'** का उद्घाटन आज सुबह के सत्र में **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** एवं **प.पू. गुरुजी** के वरद् हस्तों से होना था, लेकिन प.पू. गुरुजी दोपहर 3:30 बजे के करीब सांकरदा पहुँच पाए थे; सो, **सायं 5:00 बजे प.पू. साहेबजी** ने प.पू. गुरुजी के साथ यज्ञशाला का उद्घाटन करके वहाँ प्रसादी का जल चहुँ ओर छिड़क कर, फिर **'सुहृदम्'** में प्रवेश किया। यहाँ **'युगपुरुष योगीजी महाराज'** सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने के लिए सभी एकत्र हुए थे। प.पू. वशीभाई द्वारा दिए जोशभरे परिचय के बाद 6:30 बजे कार्यक्रम शुरू हुआ। पृष्ठभूमि पर आधुनिक तकनीक से गुरुवर्य योगीजी महाराज के जीवन एवं कार्य को इतना जीवंत प्रस्तुत किया था कि जिन विभूति पुरुषों एवं संतों ने गुरुहरि योगीजी महाराज का सान्निध्य पाया है, वे तो मानो उस समय में लौट कर पुलकित हो रहे थे। कार्यक्रम के समापन के बाद, **को.प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** का उनके प्राकट्य दिन निमित्त अभिवादन किया गया और **प.पू. गुरुजी** ने तो सखाभाव से उन्हें अपनी गोद में बिठा लिया। 1967-68 के वर्षों में प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने दिल्ली में प.पू. गुरुजी की जो सेवा की थी, उसे प.पू. गुरुजी भूले नहीं। तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद लिया।

28 दिसंबर की प्रातः 9:30 बजे 'आहूति' यज्ञशाला में यज्ञ में भाग लेने के लिए 1001 युगलजोड़ी भक्तिभावना से एकत्र हुईं। पुरातन काल में जिस प्रकार ऋषि-मुनि यज्ञ करके वातावरण को शुद्ध बनाते थे, उसी का एहसास कराते हुए बांस की कलात्मक डिज़ाईन से यज्ञशाला तैयार की गई थी। फर्श पर मिट्टी और गोबर से लिपाई की हुई थी। यज्ञ हेतु कई कुंडियाँ बनाई थीं, जिनमें नौ विशिष्ट कुंडियाँ थीं, जिन्हें स्वधर्म-निर्दोषबुद्धि-आत्मीयता-दासत्व-माहात्म्य-सरलता-साधुता-भक्ति और सुहृदभाव नाम देकर, ऐसे गुण प्राप्त करने की मानो प्रार्थना की गई थी। अधिकतर मुक्त नीचे बैठे थे और जो नीचे बैठने में असमर्थ थे, उनके लिए कुर्सी-मेज की भलीभाँति व्यवस्था की गई थी। संतभगवंत प.पू. साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. अध्यात्मानंदस्वामीजी एवं प.पू. हंसा

दीदी की निश्रा में गुणातीत ज्योत एवं अनुपम मिशन के भाइयों ने मंत्रोच्चार के साथ महापूजा की विधि आरंभ की। यज्ञ दौरान प.पू. भरतभाई ने सभी की ओर से भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थनाभाव अर्पण किया। **गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी साहेब, सांसद पू. रंजनबहन, वडोदरा की मेयर पू. जिगीशाबेन, विधायक पू. केतनभाई, पू. पियुषभाई देसाई, पू. मनीषाबहन, पू. स्वामी नागेन्द्रजी, भाजपा के जिला प्रमुख दिलुभा** इत्यादि भी यज्ञ का लाभ लेने के लिए पधारे और गुणातीत स्वरूपों से आशीर्वाद प्राप्त किया। आहूति के पश्चात् **प.पू. अध्यात्मानंदस्वामीजी** ने भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों को हृदय से नमन करते हुए कहा–

...हम सभी के पुण्य होंगे कि काकाजी-पप्पाजी के अद्‌भुत शताब्दी महोत्सव और मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा महोत्सव में हम सभी एकत्र हुए हैं। यज्ञनारायण प्रगट ब्रह्म हैं... भगवान स्वामिनारायण ने दो सौ वर्ष पहले इस गाँव को प्रासादिक बनाया। इतने वर्ष के बाद भी करोड़ों के हृदय में वे प्रभु विराजमान हैं। प्रसादी के इतने छोटे-से गाँव में इतनी दिव्यता-भव्यता से यज्ञ हो रहा है। ***भगवान स्वामिनारायण जिन्हें हम अक्षरपुरुषोत्तम महाराज भी कहते हैं, तो काकाजी-पप्पाजी भी अक्षर एवं पुरुषोत्तम ही थे, यह निर्विवाद सत्य है।*** *अन्यथा हम इतने सारे एक साथ उपस्थित नहीं हो सकते। दरअसल,* ***काकाजी-पप्पाजी*** *का हृदय खूब विशाल है। एक की समाधि के मैंने दिल्ली में दर्शन किए हैं और एक के प्रत्यक्ष दर्शन किए हैं। उन्हें मैंने सिर से नख तक प्रेम से भरे हुए नज़दीक से देखा है और तीसरा योगदान* ***सोनाबा*** *का है जो गंगा, यमुना और सरस्वती के समान हैं। इन* ***तीनों ने योगी परिवार का बीजारोपण किया और परवरिश की है। आज उन्हीं के माध्यम से देश-विदेश में भगवान स्वामिनारायण का नाम गूंज रहा है।*** *कलियुग में यज्ञ करना उचित है और इससे अधिक उचित आज सुबह से हो रहा 'स्वामिनारायण' नामरटण है। कृष्ण परमात्मा ने कहा है–* ***'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि।'*** *मुझे बहुत आनंद है कि इस भूमि का दर्शन-स्पर्श मुझे प्राप्त हुआ है। परमात्मा सबका मंगल करें-सबका शुभ और कल्याण करें और भविष्य में भी गुजरात की धरती पर ऐसे ही धर्मकार्यों के कमल खिलते रहें–ऐसी शुभेच्छा के साथ दंडवत् प्रणाम सह जय स्वामिनारायण!*

प.पू. अध्यात्मानंदस्वामीजी के वक्तव्य के बाद गुजरात के **मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणी साहेब** को शाल एवं स्मृति भेंट अर्पण करके अभिवादन किया गया, तब उन्होंने संबोधित करते हुए कहा–

...यह सांकरदा गाँव भले ही छोटा है, लेकिन ऐतिहासिक है। क्योंकि स्वयं स्वामिनारायण भगवान ने यहाँ विचरण किया था और यहाँ ठहरे थे। सांकदरा में नूतन मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा के निमित्त योजित किया गया यह यज्ञ समग्र मानवजाति के कल्याण एवं चेतना को जागृत करने का यज्ञ बनेगा। ***पू. हरिप्रसादस्वामीजी*** *का योगदान भी गुजरात में बहुत महत्त्वपूर्ण है।* ***समग्र युवाओं को व्यसन मुक्ति से लेकर, समाज के सुख से सुखी और समाज के दुःख से दुःखी रहने की संस्कृति, धर्म, राष्ट्रप्रेरणा देते हुए उन्होंने गुजरात को मार्गदर्शन दिया है...*** *आशा करते हैं कि ऐसे संतों का शरीर एवं आयुष्य खूब अच्छा रहे।*

गुजरात में स्वामिनारायण के संतों ने हमेशा अथक परिश्रम करके, गाँव-गाँव घूम कर लोगों को धर्म और राष्ट्रवाद के साथ जोड़ कर तैयार किया है। समाज की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वामिनारायण के संत हमेशा सहयोगी बने हैं। ***स्वामी विवेकानंद के बाद स्वामिनारायण के संतों ने विश्वभर में हिन्दू धर्म की पताका***

फहरा कर उसे प्रस्थापित किया है। *यह महत्वपूर्ण व आवश्यक है क्योंकि दुनिया भारत-हिन्दू धर्म की ओर आकर्षित होने लगी है।*

इस कार्यक्रम में मुझे भी श्रीफल होमने का मौका मिला है, तो मैं खुद को भाग्यशाली समझता हूँ और भगवान स्वामिनारायण सबको ऐसी शक्ति दें कि गुजरात की वृद्धि हो - समृद्धमय - शक्तिशाली बने। ***महात्माजी और सरदार पटेल*** *के गुजरात की प्रतिष्ठा हम हमेशा संभाले रखें यही प्रार्थना के साथ सबका आभार, शुभेच्छा एवं अभिनंदन।*

श्री रुपाणी साहेब के प्रस्थान के बाद नैवेद्य एवं आरती के साथ यज्ञ का समापन हुआ। **प.पू. शांतिभाई साहेब** ने यज्ञ के मुख्य आचार्य **प.पू. भरतभाई** के द्वारा श्लोक के रूप में आशीर्वाद दिलवाया। तत्पश्चात् सभी गुणातीत स्वरूपों ने सभी यजमानों पर पवित्र जल छिड़क कर आशिषवर्षा की और अंत में **प.पू. वशीभाई** ने कल्याण भावना का पठन एवं धुन करके यज्ञ का समापन किया। तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया।

सायं 6:00 बजे भारत सरकार द्वारा **गुरुहरि काकाजी - गुरुहरि पप्पाजी** की जो **डाक टिकिट** जारी हो रही थी, उसका दर्शन करने - साक्षी बनने सभी 'सुहृदम्' में एकत्र हुए। आवाहन् धुन से इस सत्र की शुरुआत हुई। गुणातीत स्वरूपों के मंच पर विराजित होने के बाद विशिष्ट सभा का शुभारंभ हुआ। भारतीय डाकविभाग की मुख्य डाकपाल **श्रीमती मीरां हांडाजी**, 2003 में भारत सरकार द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज की डाक टिकिट जारी हुई थी, तब से दिल्ली मंदिर - प.पू. आनंदी दीदी से घनिष्ठता से जुड़ गईं थीं। वे मानो बंधुजोड़ी के प्रति भक्ति अदा करने के लिए दिल्ली से ख़ास आई थीं; जबकि उनके पिताश्री की तबियत काफ़ी नादुरुस्त थी। उत्सव का प्रारंभ करते ही सर्वप्रथम डाक विभाग के गणमान्य अधिकारी **श्री सुनील शर्माजी (निदेशक डाकविभाग मुख्यालय), श्री बी.एल. सोनलजी (निदेशक डाकविभाग वडोदरा), प्रॉटोकोल अधिकारी श्री जोशीजी** ने दीप प्रज्ज्वलित किया। गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी का सजदा करने हेतु 'रोम-रोम में योगी बिराजे...' भजन प्रस्तुत किया गया... तत्पश्चात् सभी गुणातीत स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए, **पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी** ने इन सभी का आभार व्यक्त किया और सभी को इस सेवा की धन्यता का एहसास कराया।

डाकविभाग के सभी अधिकारियों एवं दिल्ली से आए मिनिस्ट्री ऑफ टॅलीकम्यूनीकेशन के **पू. महेश सचदेवाजी** का महोत्सव की स्मृति भेंट द्वारा अभिनंदन करने के बाद, 'युगपुरुष योगीजी महाराज' सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार करने वाले निर्देशक एवं लेखक **पू. प्रदीपजी** एवं **पू. वेदकुमारीजी** के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, **प.पू. गुरुजी ने संतभगवंत साहेबजी द्वारा पू. प्रदीपजी** को बंधुजोड़ी की स्मृति भेंट दिलवा कर **सम्मानित किया।** दिल्ली मंदिर के बगल में दिल्ली विकास प्राधिकरण की भूमि के एक टुकड़े को प.पू. गुरुजी ने 'तीन फरवरी पार्क' के रूप में परिवर्तित किया है, उसे डॅवलप करवाने में डी.डी.ए. की पूर्व उच्च अधिकारी **पू. सविता भंडारीजी** ने भी खूब अपनेपन से सहयोग दिया है। वे इस महोत्सव में दिल्ली से ख़ास आई थीं, सो **पू. हंसा दीदी** ने उन्हें भी स्मृति भेंट देकर **सम्मानित** किया।

गुणातीत समाज का सर्जन करने हेतु गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी ने जो अथक् परिश्रम किया, उसका संक्षिप्त विवरण देते हुए **प.पू. वशीभाई** ने शताब्दी वंदना की–

...कल भरतभाई ने बताया था कि यहाँ – ऐसे गाँव में इतना मॉडर्न हॉल खड़ा करने पर स्वामीजी ने खूब प्रसन्नता बताई थी। मुझे ऐसा लगता है कि ***काकाजी और पप्पाजी*** *ने जो काम किया है, आध्यात्मिकता में उन्होंने जो क्रांति*

करी है, उसे उजागर करने के लिए इससे सौ गुणा भी करें तो भी कम है। **वे बहुत-बहुत-बहुत बड़े हैं। हमारी नज़र उन तक पहुँच नहीं सकती।** अक्षरपुरुषोत्तम संस्था बनी और फिर जब शास्त्रीजी महाराज स्वधाम गए, तब तक एक साधु बनता था, तो दूसरा साधु संसार में चला जाता था। योगीजी महाराज ने 51 साधु बनाने का बीड़ा उठाया और आज काकाजी-पप्पाजी ने ऐसे संत और बहनें बनाईं। **51 संत बनाए थे तब 1965 में योगीजी महाराज ने प्रमुखस्वामी महाराज को आशीर्वाद दिया था कि वे 700 संत बनाएँगे।** संस्था में आज करीब हज़ार संत हैं। एकांतिक से एकांतिक करें, ऐसी 1000 संत बहनें आज हमारे महिला केन्द्र में हैं। 700 से 800 ज्योत में, हरिधाम, दिल्ली, पवई और सांकरदा सब मिला कर 1000 हैं। एक व्यक्ति को साधु बनाना बहुत मुश्किल बात है।

छोटी-सी स्टोरी बताता हूँ–'एक गांव में एक बढ़ई ने स्त्री की एक सुंदर मूर्ति बनाई, जैसे हमने पवई में काकाजी की बनाई है। आज सुबह ही मुझे एक भक्त ने कहा कि आपके मंदिर में काकाजी एकदम हूबहू दिखते हैं... अब मेईन मुद्दे की बात पर आता हूँ। ब्रह्मविद्या सीखने के लिए ब्रह्मनिष्ठ गुरु की आवश्यकता होती है। तो, एक व्यक्ति ने ऐसे गुरु से ब्रह्मविद्या की शिक्षा प्राप्त की। उसे प्राणशक्ति का संचार करना भी आता था। जब वह मूर्ति के पास से गुज़र रहा था, तो उसे देख कर बहुत खुश हो गया और उसकी प्राणशक्ति के मंत्रोच्चार से मूर्ति लाइव हो गई। उसे देखते ही, पहला विचार उसे यही आया कि मैं ही इससे शादी कर लूँ!

कहने का तात्पर्य यह है कि इतना पढ़ा-लिखा प्रबुद्ध आदमी जब डिग सकता है, तो यहां एक हज़ार त्यागी साधु, कर्मयोगी साधु और साध्वी बनाना और निभाना कितनी बड़ी बात है! इसीलिए ये जो उत्सव हो रहा है, इस हेतु इससे हज़ार गुणा बढ़िया माहौल बनाएँ या पंडाल बनाएँ तो भी काकाजी-पप्पाजी के लिए वह कुछ नहीं है।

ऐसा अद्भुत काम करते हुए भी **काकाजी-पप्पाजी ने सादाई से वन टु वन बात करके स्पिरीच्युअल ज्ञान या लाईव स्पिरीच्युआलिटी भेंट में दी है।** जैसे कि कल सी.एम. आए थे, तो उनके आने से पहले सीक्योरिटी की चॅकिंग के लिए आये। इस क्षेत्र के **पुलिस चीफ वड़िया साहेब** ने मुझसे कहा–
आप मानो या न मानो, पर तुम्हारे यहां कोई दिव्यशक्ति काम करती है। मैं सात दिन से आता हूँ, तो हर रोज़ मैं कुछ न कुछ जो सोच कर आता हूँ वह हो जाता है। हर रोज़ कुछ न कुछ नया देखता हूँ। हमारी पुलिस चौकी में भी मैं जो भी काम सोच कर आता हूँ वो रोज़ हो जाता है। जिन्होंने उत्सव के लिए हमें ज़मीन दी उन्हें भी वड़िया साहेब ने कहा कि आप बहुत भाग्यशाली हो कि मंदिर के इतने बड़े संत-भक्त यहाँ आए हैं। इस जगह का कोई पुण्य-धन्यभाग्य है।

तो, **काकाजी पप्पाजी के लिए जितना भी करें वह कम है। अपने लहू की एक-एक बूंद भी सुखा कर उनके लिये दें तो भी कम है।** वर्षों पहले जब बापा द्वारा साधु बनाने की शुरुआत की थी, तब इन्होंने अक्षरविहारीस्वामीजी को सौंप दिया। ऐसा काकाजी-पप्पाजी का अप्रतिम बलिदान है और वो भी बिलकुल दिखावा किये बिना भक्ति के रूप में उन्होंने किया है।

अभी भी काकाजी-पप्पाजी इसी प्रकार कार्य करते हैं। हंसा दीदी, माया बहन रोज़ आते थे और सारी तैयारियाँ देख कर हमें कहते थे कि क्या होगा? कैसे होगा? पंडाल में ये नहीं है, वो नहीं है। एग्ज़ीबीशन तो सचमुच रुलाती थी। पर, धन्यवाद है कि **दिल्ली के युवक**–हमारे **आशीष एण्ड टीम** इत्यादि **आ गये**, वर्ना एग्ज़ीबीशन नहीं

होती। **उन्होंने 45-50 दिन का काम 10 दिन में किया है। इसलिए कहता हूँ कि यह सब काकाजी ने किया।**

काकाजी-पप्पाजी दोनों की लाइफ या 150-200 साल का इतिहास डेढ़-दो मिनिट में तो कैसे बताऊँ? बट, काकाजी ने हमारे जीवन का परिवर्तन करने के लिए जो टेक्नीक दी है - जो बेज़िक बातें कही हैं, वो आज भी वैसी ज़रूरी हैं। **टुडे वी आर लिविंग इन धी मोस्ट डिसकन्टीन्युअस चेईन्जींग लाइफ।** मालूम नहीं कल क्या होने वाला है... लेकिन, काकाजी ने कहा है कि आप साक्षीभाव रख कर दो - तीन मिनिट धुन करो, धेन थिंग्स विल ऑटोमॅटीकली हॅपन। यह बात हमने यहाँ लाइव देखी है। यज्ञ का होना था, तो किसी ने कहा कि फायर ब्रिगेड रखें तो ? हमें हुआ कि अब फायर ब्रिगेड ढूंढने कहाँ जाएँगे ? पर, सी.एम. आने वाले थे तो सिक्योरिटी वालों ने कहा कि मैं फायर ब्रिगेड भेज दूंगा। ऐसे सारा हल हो गया। **10 दिन में हमने भी प्रॅक्टीकली सीखा कि – 'लेट गॉड वर्क इन यॉर लाइफ।'** तो चेईन्जिंग वर्ल्ड में काकाजी ने यह सोल्यूशन दिया है। काकाजी कहते थे खुल्ला रहो - खुल्ला रहो, बी ओपन। मीन्स यु शुड एलाईंन यॉरसॅल्फ विध टुडेज़ सकम्स्टन्सिस। यु कॅन नॉट फाईट टुडेज़ वॉर विध यस्टरडॅज़ वेपन्स। एलाईंन मीन्स व्हॉट ?

काकाजी ने सिखाया कि तत्कालीन स्वरूप और भगवदी जो हैं, उनके साथ खुद को ब्राह्मीशक्ति द्वारा एलाइन कर दो।

पप्पाजी ने ये बताया कि हर दो घंटे पर दो मिनिट जपयज्ञ करो। एक-दो मिनिट में रीट्रीट हो जाओ। काकाजी ने उसमें एक मिनिट एड किया कि 3 मिनिट में रीट्रीट हो जाओ एन्ड धीस विल वर्क। तो, **काकाजी की ये महान से महान गिफ्ट है।**

जब 51 संत बनाये – अक्षरविहारीस्वामी साक्षी हैं, स्नेहलस्वामी ने अपना प्रसंग लिखा है कि 61 में साधु तो हो गए, बट धे हॅव ए टोटली डिफरन्ट लिविंग स्टाइल। काकाजी ने उस समय उन्हें स्वरूपयोग की करामत बताई। लिविंग अक्षरपुरुषोत्तम योगीजी महाराज के रूप में हैं। उन्हें याद करके तुम धुन-स्वरूप योग करोगे, तो नॉट ओनली तुम्हारा काम होगा, बट स्पिरीच्युअल लाइफ में भी तुम्हारी एडवांसमेंट होगी एण्ड यू विल फील धी फुलफिलमेंट विध इन यॉर सेल्फ। और... **आज हम देखते हैं कि एक-एक संत ऐसा काम कर रहे हैं। उनकी पोटेन्शियालिटी योगीजी महाराज और काकाजी ने उस समय पर देखी होगी।**

तो, वो काकाजी का शब्द **'अलाइन्मेंट'** इन **'एडेप्टीबिलिटी'** साकार दिखते हैं। मुकेश अंबानी ने जियो लाँच किया, तो किसी ने कहा कि इफ यू डू नॉट एलाइन योर सेल्फ, विध करंट सिनारियो यू विल बी इर्‌रलेवंट। आपकी हाज़िरी है या नहीं उसकी कोई एहमियत नहीं रहेगी। मुझे लगता है **ये जो ड्रामा हुआ , काकाजी की शताब्दी मनाई, वो कोई जबरदस्त चेईन्ज-रिवोल्यूशन का एक अभियान, शंख और बुलंद नाद है। जो बात है कि पत्ते-पत्ते पर स्वामिनारायण का नाम होने वाला है, वो तो होने वाला ही है। पप्पाजी कहते थे कि आपका वर्तन बातें करेगा।** अगर आप शांति और समता में रहते होंगे, तो सामने वाले व्यक्ति को लगेगा कि इसके पास कुछ है। **काकाजी और पप्पाजी का ज्ञान प्रॅक्टीकल था - एप्लाइड ज्ञान था। खुद पर आज़मा कर इन्होंने ये ज्ञान दिया था।** तो ऐसे काकाजी और पप्पाजी को करोड़ों धन्यवाद हैं...

मैं काकाजी के पास आया तो बहुत छोटा था। अभी भी चंचल हूँ, तो उस समय तो बहुत चंचल था। काकाजी ने मुझसे कहा – तुम सी.ए. की पढ़ाई करो। तो, सी.ए. करने में अपने आपको बहुत कॉन्सन्ट्रेट करना पड़ता है। एक ओर काकाजी ने पढ़ाई करने की आज्ञा दी और दूसरी ओर महापूजा करने की आज्ञा दी। उनकी आज्ञा और वचन के संकल्प में कितना बल होगा कि सी.ए. में वे मुझे 'डिलोएट' जो वन ऑफ धी सिक्स कंपनीज़ है, उसमें लेकर गए। यूँ कहाँ से कहाँ टॉप तक लेकर गए। सिमिलरली महापूजा में भक्ति करते-करते मुझे कहाँ तक लेकर गए हैं कि आज मुझसे अखंड महापूजा होती रहती है। दिल में याद करते हैं, तो काकाजी प्रगट हो जाते हैं।

*तो, **काकाजी और पप्पाजी के सचमुच हम बहुत ऋणी हैं। मैं तो कहता हूँ कि हर पल उन्हें 'थँक यू' कहना चाहिए। उनके लिए जीना चाहिए, उनका काम करना चाहिए, उन्हें राज़ी करना चाहिए और उनके भक्तों की भक्ति करनी चाहिए। वही सचमुच काकाजी को शताब्दी का वंदन होगा।** यही काकाजी को हमारी भेंट होगी और हमारे प्रत्यक्ष स्वरुप हरिप्रसादस्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी, दिनकरभाई और सभी को इस तरह से राजी करें कि उनके हृदय में हमारी ओर से हाश हो जाए। काकाजी और पप्पाजी ने कभी कम्फर्ट्स नहीं देखी।*

*मैं पोस्टल डिपार्टमेंट को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ कि हमारे काकाजी और पप्पाजी के कार्य को देखकर आपने पोस्टल स्टेम्प जारी की। अवर सेल्युट एन्ड धन्यवाद टु यू। क्योंकि गुणातीत समाज के सर्जन का जो काम हुआ है, वो खूब डिफिकल्ट है। **आने वाली पीढ़ी, आने वाली दुनिया ये सोचेगी और याद करेगी कि काकाजी ने ये क्या हमें काम करके दिया है, काकाजी ने हमें क्या दिया है!***

*वे खुद खूब सिम्प्लीसिटी से रहे। पप्पाजी का सिम्प्लीसिटी का प्रसंग बताता हूँ। पप्पाजी आणंद हास्पिटल में थे, हम उनसे मिलने के लिए गए। मुझे उनसे लगाव है, तो उन्हें बीमार देख कर दुःख होता था। सो प्रार्थना की कि पप्पाजी आप ऐसे बीमारी ग्रहण मत करो। वहां योगीजी महाराज की एक छोटी-सी मूर्ति थी। वो दिखा कर उन्होंने कहा – ये ही सब कुछ करते हैं। और... फिर कहा – '1952 से 1966 तक जो जिए, वो जिए; बाकी सब बेकार।' देखा जाए तो 1952 से 1966 तक का पीरियड मोस्ट प्रॉब्लमेटिक था। हर रोज़ प्रॉब्लम, हर रोज़ अपमान, हर रोज़ इनसल्ट, हर रोज़ निंदा, हर रोज़ अनकम्फर्ट का दौर था। आज हमें ठंड में सुबह गरम पानी नहीं मिले, तो मुसीबत लगती है। गर्मी में रात को ए.सी. नहीं मिले, तो मुसीबत लगती है। एकोमोडेशन ठीक से न हो, तो मुसीबत लगती है। लेकिन, **उन्होंने अनकम्फर्ट को सेलीब्रेशन माना।** इतने बड़े काकाजी हम जैसे सामान्य के साथ रहे। हमारे लेवल पर आकर हमें आध्यात्मिकता सिखाई कि तुम ये करो, तुम ऐसा करो – ये ट्रेनिंग लो, वो ट्रेनिंग लो... **काकाजी-पप्पाजी का इतना बड़ा कॉन्ट्रीब्युशन, संस्था में इतना बड़ा स्थान, फिर भी कैसे?** जागास्वामी के स्थान डांगरा में एक बार साक्षात् योगीजी महाराज विराजमान थे। उनके बैठने के लिए आसन नहीं था। तब पप्पाजी ने अपना कुर्ता निकाला और योगीजी महाराज के लिए आसन बना दिया। आई थिंक, वो कुर्ता आज भी ज्योत में प्रसादी के रूप में है। तो, लेट अस लर्न टु बी सिम्पल लाइक धेम। लेट अस लर्न टु बी रियलाइज़्ड लाईक धेम। लेट अस लर्न टु बी प्रेयरफुल लाइक धेम एण्ड लेट अस लर्न कि उन्होंने योगीजी महाराज के लिए, हमारे लिए इतना सहन किया है। **छोटी-छोटी बातों में हमारा मूड खराब न करें, गुस्सा न करें और हमारे संत की***

प्रसन्नता प्राप्त करके ऐसा जीवन जीएं कि हमें देख के हर कोई सोचे कि कैसे होंगे काकाजी - कैसे होंगे पप्पाजी।

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** की प्रेरणा से तैयार की गई गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के जीवन एवं कार्य का संक्षिप्त विवरण देती विडीयो क्लीप का सभी ने दर्शन किया।

गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की डाक टिकिट जारी करवाने की सिफारिश हेतु प.पू. गुरुजी ने कई मंत्रालयों में अरज़ी दे रखी थी। उसी दौरान अक्षरनिवासी पू. डॉ. नीतू मांडके की धर्मपत्नी **पू. डॉ. अल्का मांडके** के जरिये प.पू. गुरुजी का वाणिज्य, उद्योग एवं नागरिक विमानन मंत्री **माननीय श्री सुरेश प्रभुजी** से संपर्क हुआ। पहली मुलाकात में ही श्री सुरेशजी ने बहुत आदरभाव से प.पू. गुरुजी एवं साथी मुक्तों का अभिवादन किया था तथा डाक टिकिट को जारी करवाने के लिए अपनी स्ट्रोंग सिफारिश संबंधित अधिकारियों को भेजी थी। यूँ, डाक टिकिट जारी करवाने में उनकी बहुत विशिष्ट भूमिका रही है। मुलाकात के अल्प समय में श्री सुरेश प्रभुजी ने प.पू. गुरुजी के लिये जो महसूस किया, वह उनके द्वारा शताब्दी निमित्त भेजे ऑडियो-विडीयो के इस संदेश से ख्याल पड़ा–

स्वामी मुकुंदजीवनदासजी कई मुमुक्षुओं के प्रेरणास्रोत हैं। वे लोगों को अध्यात्म पथ पर चलते हुए जनकल्याण करने की शिक्षा देते हैं। वे केवल मार्गदर्शक नहीं हैं, बल्कि जनसमाज को प्रेरित करते हैं कि प्रभु के बल से वे किस प्रकार शांतिमय और आनंदमय जीवन व्यतीत करें। मुझे अत्यंत हर्ष है कि ऐसा मंगल उत्सव मनाया जा रहा है। मैं अपनी शुभकामनाएँ देते हुए स्वामीजी को नमन करता हूँ और आशा करता हूँ कि उनका आशीर्वाद, मार्गदर्शन और उनके द्वारा दिखाया गया सही मार्ग हमें निश्चित लक्ष्य प्राप्त कराएगा...

तत्पश्चात् पू. राकेशभाई ने प्रोटोकॉल के अनुसार भारतीय डाकविभाग की मुख्य डाकपाल **श्रीमती मीरां हांडाजी** से डाक टिकिट का विमोचन करने की प्रार्थना की। लेकिन, जो सत्संग में अपने ओहदे का तनिक भी ख्याल नहीं देतीं, ऐसी विनम्रता की मिसाल **श्रीमती मीरां हांडाजी** ने निम्न प्रार्थना की–

ऐसे महान आध्यात्मिक सत्पुरुषों की डाक टिकिट के विमोचन का कार्य वैसे ही आध्यात्मिक सत्पुरुषों के द्वारा होना चाहिए। सो, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी डाक टिकिट का विमोचन करें...

मंच पर उपस्थित सभी स्वरूपों ने एक साथ डाक टिकिट की ऑल्बम को खोल कर डाक टिकिट का उद्‌घाटन किया। उसी दौरान बहनों के विभाग में भी श्रीमती मीरां हांडाजी सहित वडील बहनों ने डाक टिकिट का दर्शन करवाया। डाक टिकिट विभाग के काउंटर पर डाक टिकिट, ब्रॉशर व फर्स्ट डे कवर इत्यादि सभी के लिए उपलब्ध रखे भी थे।

इसके अतिरिक्त डाक टिकिट विभाग की **'माई स्टेम्प' स्कीम** का लाभ उठा कर **प.पू. गुरुजी** ने **ब्रह्मस्वरूपीणी सोनाबा** की स्टेम्प बनवा कर 'गुणातीत ज्योत' की बहनों को भेंट स्वरूप भिजवाई।

आज की इस विशिष्ट सभा का महत्त्व बढ़ाते हुए **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** ने आशीर्दान दिया–

...प.पू. वशीभाई ने काकाजी-पप्पाजी के माहात्म्य की जो बात बताई, वह बहुत विचारणीय है... जैसे वशीभाई ने बताया –

काकाजी-पप्पाजी ये सभा मंडप या प्रदर्शनी इत्यादि सब जगह बसे हुए हैं, हमारे साथ हैं और उनकी उपस्थिति हम महसूस करें, वही हमारे लिए उनका सच्चा दर्शन होगा। *यहाँ सभी जगह पर काकाजी-पप्पाजी का आशीर्वाद है... यह सभा मंडप देख कर स्वामीजी ने आशीर्वाद दिया कि ऐसा हॉल मैंने कभी नहीं देखा।*

*तो, **जैसा सुंदर ये हॉल है, वैसा ही हमारे अंतर में बना कर उसमें काकाजी-पप्पाजी को बिठाएँगे यही इस उत्सव-प्रदर्शनी का फल होगा... हमारे भीतर जो मूर्ति है उसे बार-बार याद करके प्रत्यक्ष करके सुख लेने की चाहना रखें, यही इस महोत्सव का मक़सद पूरा होगा।** मेरी आप सबसे विनती है कि **काकाजी-पप्पाजी को अपने साथ यहाँ से लेकर जाएँ ताकि आप सुख, शांति और आनंद के भोक्ता बनें–ऐसी मेरी प्रार्थना और संकल्प है।***

तत्पश्चात् **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने आशीर्वाद दिया–

*कल से बंधुबेलड़ी शताब्दी का कार्यक्रम चल रहा है। जो-जो इसमें शामिल हुए, वे सचमुच प्रभु की कृपा वाले भाग्यशाली हैं। स्वामिनारायण भगवान का जो संकल्प था कि मानवमात्र सुख, शांति और आनंद का भोक्ता बने, वही कार्य शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने शुद्ध उपासना द्वारा हमारे लिए खुला किया और काकाजी-पप्पाजी ने समर्पित होकर 'गुणातीत समाज' की जो रचना की, उनके द्वारा साकार हो रहा है। कल प्ले में प्रदीप और वेदकुमारीजी ने जो प्रस्तुति की, उससे गुरुजी बहुत खुश हुए और आज प्रदीप का सम्मान भी किया। घनश्याम की भावना थी कि **योगीजी महाराज का 126वां प्रागट्य पर्व** चल रहा है, तो काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी पर्व पर वह भी मनाया जाए। **वशीभाई** ने माहात्म्य की अद्भुत बात की और आशीर्वाद भी दिया। **अक्षरविहारीस्वामी** ने भी संकल्प किया कि इधर जो लोग आए हैं, उनके भीतर का हॉल ऐसा बन जाए, जिसमें प्रभु की मूर्ति हो - उसका पूरा आनंद मिल जाए।*

***काकाजी-पप्पाजी ने हमारे जीवन में बहुत कुछ किया है, जिसका हम शब्दों में वर्णन नहीं कर सकते; लेकिन उसकी अनुभूति करते हैं।** हम पर उनका जो ऋण है, वह अदा करने के लिए 'जी हज़ूरी' रूप सब सेवा कर रहे हैं। योगीजी महाराज के कार्य में पप्पाजी और काकाजी ने समर्पित होकर हम सबको शामिल किया, तो हम उनके साथ रहे, उनके आशीर्वाद से इस मार्ग पर चलते रहे। इसमें से संत, व्रतधारी संत भाइयों, बहनों का अद्भुत समाज बना, जिसे **'गुणातीत समाज'** कहते हैं। **उसकी स्थापना भी काकाजी-पप्पाजी ने की है।** आज बहुत बड़ा काम भी हुआ। शताब्दी पर्व की स्मृति में पूज्य गुरुजी और दिल्ली मंडल के प्रयत्न-परिश्रम से और दिनकरभाई, भरतभाई और वशीभाई के साथ से **जो डाक टिकिट जारी हुई, वो बहुत अद्भुत काम हुआ है। हमारे लिए ये पूरे जीवन की स्मृति बनी रहेगी।** इस अवसर पर हम प्रार्थना करते हैं कि काकाजी-पप्पाजी ने हमारे लिए जो किया है, उसका ऋण अदा करें यही एक भाव हम सब में है। स्वामीजी और अक्षरविहारीस्वामीजी के आशीर्वाद से, भरतभाई, वशीभाई, दिनकरभाई ने गुरुजी-दिल्ली, पवई, विद्यानगर गुणातीत ज्योत, अनुपम मिशन सभी क्षेत्र के सबको साथ लेकर, **बापा के संप, सुहृदभाव, एकता और मिलजुल कर कार्य करने हेतु यह उत्सव किया है।** उसका पूरा दर्शन हो रहा है। इसकी अनुभूति नए संपर्क में आने वालों को भी हुई। तो, भगवान यहाँ प्रगट हैं, हैं और हैं। हमारे जीवन में हमेशा यह दृढ़ता रहे। स्वामिनारायण भगवान ने बताया और काकाजी ने यही सिखाया कि निर्दोषभाव रखो। काकाजी **'निर्दोषबुद्धि के राजा'** कहलाते थे। **भगवान और उनके संबंध वालों में निर्दोषभाव रखेंगे, तो हमारे कैसे भी दोष टल जाएँगे।** पप्पाजी ने भी यही बात कही कि संबंध वाले की महिमा समझो। भगवान के संबंध वाले भक्त कैसे भी हों, संबंध की महिमा देख कर सेवा करेंगे, तो हम कैसे भी होंगे लेकिन हम में रूपांतर आएगा। इससे भगवान राज़ी होते हैं, उनके अंतर की प्रसन्नता*

मिलती है... ये बातें यदि हमारे जीवन में साकार हों, हमारा जीवन धन्य बन जाए। जैसे अक्षरविहारीस्वामीजी ने कहा, वैसे ऐसा हॉल हमारे अंतर में बन जाए तो प्रभु अखंड विराजमान हो जाएँ और यही हमारा लक्ष्य है।

'गुणातीत समाज' यानि गुणातीतभाव में रहने के लिए इकट्ठे होकर साधना करते भक्त ! *गुणातीतभाव को प्राप्त करने के लिए काकाजी-पप्पाजी ने अद्‌भुत चाबी बताई। प्रभु का अद्‌भुत आसरा और उनकी शुद्ध उपासना के साथ* ***काकाजी-पप्पाजी जैसे अक्षररूप हुए साधु ने हम पर बड़ी से बड़ी कृपा की है कि हमें हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी, अश्विनभाई, शांतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई जैसे संतों, दीदी, प्रेमबहन, आनंदी दीदी जैसी संत बहनों की भेंट दी है।*** *उनके प्रति काकाजी-पप्पाजी का भाव रख कर, जहाँ हैं वहीं जुड़ कर आज्ञा का पालन करेंगे और जैसे कि काकाजी ने निर्दोषबुद्धि की बात की, पप्पाजी ने संबंध वाले की महिमा समझने की बात की, ऐसा करके गुणगान गाएँगे-सेवा करेंगे, तो भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी की कृपा से हम में रुपांतर आएगा ही। यह बात हमारे जीवन में साकार हो–ऐसी बंधुजोड़ी शताब्दी पर प्रार्थना है।*

डाक टिकिट जारी करने में जिन भाइयों-बहनों और ख़ास तो दिल्ली से जो मॅडम मीरां हांडा आई हैं, उन पर प्रभु खूब-खूब आशीर्वाद बरसाएँ। उनके हृदय में निहित भक्ति का भाव खिल उठे। कुटुंबसहित सभी तन, मन, धन और आत्मा से सुखी रहें, ऐसी प्रभुचरणों-गुरुचरणों में प्रार्थना...

सभा के अंत में **प.पू. गुरुजी** ने आशिषवर्षा की–

काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी मनाने का जो आयोजन हुआ, तो हम यह तनिक भी ऐसा न मानें कि 'गुरु मिले गुणवान...' यूँ गुरु का गुणगान करके आनंद करें–इस प्रकार यह उत्सव मनाया जा रहा है। जैसे कि अक्षरविहारीस्वामीजी और साहेबजी ने भी कहा कि ***यह एक ऐतिहासिक उत्सव है।*** *किस प्रकार ? तो काकाजी बातें करते थे–हमेशा तीन तबके में कोई काम पूर्ण होता है। फिर अपनी लाक्षणिक ढब से वे कहते –सत्व, रज और तम! काल, कर्म और माया! धाम, धामी और मुक्त! इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन, प्रोटोन। ऐसी बहुत चीजें गिनवाते और कहते कि तीन के आधार पर दुनिया चलती है। वे जब ऐसी बात करते, तो हमें बातें खूब पसंद आतीं। उनकी बातों में भाषालालित्य था।* ***'गतिस्थिरता – प्रकाशमय अंधकार'*** *जैसे नए-नए शब्द वे कॉईन करके आशीर्वचन में बोलते। मैंने पहले भी बताया है कि मैंने सायन्स पढ़ी है, पर मुझे मुंशी के नोवॅल पसंद आते क्योंकि वह रोमांटिक था। उनकी भाषा में लालित्य होता था, वह मुझे सहज ही गुदगुदी कर जाता था। पर, यह ऐसी बात नहीं है। यह पूरा ऐतिहासिक है।*

पहले तबके *में स्वामिनारायण भगवान प्रगट हुए, एक बिगुल बजा कि श्री कृष्ण के बाद धरती पर ये एक अवतार आए। उन्होंने खुद अपने ऐश्वर्य-प्रताप, रिद्धि-सिद्धि, अपने भक्तों के वर्तन से अपनी सर्वोपरिता स्थापित की। फिर* ***दूसरे तबके*** *में शास्त्रीजी महाराज पधारे। इन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना व्यापक करी। पहले कहीं-कहीं पर अक्षरब्रह्म के रूप गुणातीतानंदस्वामी की महिमा गाई जाती। शास्त्रीजी महाराज ने मूर्तियाँ पधरा कर, शिखरबद्ध मंदिर बांध कर उसे स्थापित कर दिया।* ***तीसरे तबके*** *में जैसे वचनामृत में महाराज ने कहा है कि ऐसे सत्संगी वैष्णव हैं वे हमारे सगे-संबंधी, वही हमारी नात-जात और बिरादरी है। साथ ही* ***वचनामृत अत्यं. 26***

में कहा है कि साधुगुण युक्त साधु-बहनों यानि जो *अखंड भगवान रखती हों, उनका समागम बहनों को करना चाहिए। ऐसी बहनें होंगी तभी समागम किया जाएगा न!*

तो, ***काकाजी-पप्पाजी द्वारा जो यह तीसरा तबका संपन्न हुआ है, उसकी शताब्दी मनाई जा रही है...*** *इतिहास का जो नया पन्ना खुला, उसका अभिवादन हो रहा है। यह स्टेम्प इत्यादि भी इसीलिए है। वर्ना, ऐसा नहीं कि केवल अपने गुरु का प्रचार करना है। हाँ, प्रचार करना भी एक सेवा ही है।* ***बापा*** *के स्वमुख से मैंने सुना था कि* ***जिनके द्वारा हमने ज्ञान पाया, ऐसे अपने गुरु को समाज में ज़ाहिर करना, उनका प्रचार करना बहुत बड़ी सेवा है।*** *अब जैसे कि ये स्टेम्प किसी लिफाफे पर लग कर जाएगी, वो एक तरीके का प्रचार-प्रसार ही है। मुझे याद है कि जब काकाजी की स्टेम्प निकलनी थी, तब कइयों के मन में ऐसा था कि हमें तो इस प्रकार स्टेम्प नहीं निकालनी चाहिए। राजनेताओं या मोन्यूमेन्ट्स इत्यादि की निकले वह ठीक है, लेकिन ऐसे स्वरूपों की स्टेम्प नहीं निकालनी चाहिए। फिर उसका कारण भी बताया कि स्टेम्प कवर के ऊपर लगेगी, उसके ऊपर ठप्पा लगेगा, कवर फाड़े जाएँगे, स्टेम्प ज़मीन पर गिरेगी, कितनों के पैरों के नीचे आएगी। हम उसके द्रोही नहीं बनेंगे क्या? सात्विक और व्यावहारिक रीति से देखें, यह बात गले उतर जाए ऐसी है। पर, तब पप्पाजी बोले थे–*

अरे भई! ***नंदे के वंदे, सिर पर चढ़ा कर या पैर से मसल कर जो 'स्वामिनारायण' का नाम लेगा, उसका भी हमें तो कल्याण करना है। यह हमारी प्रणालिका है।*** *कहने की ये बात नहीं है, पप्पाजी यह दिल से मानते होंगे, इसलिए उनके मुँह से सडनली यह बात निकली।*

उन्होंने जब मुझसे बात की, वो जगह भी मुझे याद है। हॉटल ताज में अजय (मल्कानी) की शादी हो रही थी। हमारा तो शादी में कोई काम था नहीं, पर मल्कानी नए-नए थे, तो ऐसा हुआ कि चलो उनके यहाँ जा आएँ। मेरे कहने पर उन्होंने भी सारी व्यवस्था अलग कर दी थी। तब वहाँ बैठे हुए पप्पाजी ने यह बात की थी।

मेरा यह कहना है कि जरूर-जरूर समझ कर जाना कि यह कोई सामान्य फंक्शन नहीं है। यह एक ऐतिहासिक फंक्शन है। ***जिस प्रकार शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना स्थापित की और उसकी शताब्दी मनाई, इसी प्रकार धाम, धामी और मुक्त की निष्ठा और ख़ास तो महिलाओं का आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्थान कराने के लिए इस बंधुजोड़ी ने जो असाधारण कार्य किया, उसकी यह शताब्दी मनाई जा रही है।***

अन्य कोई नई बात करनी नहीं है। इस बात को हम अंतर में बिठा कर जाएँ, उनका परिचय दें। कोई तनिक भी न मानें कि एक सामान्य शताब्दी मना ली। एक ऐतिहासिक घटना को हमने स्वीकारा है, उसका स्वागत और अभिवादन किया है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

सभा के विसर्जन के समय **पू. प्रसाद पाटिल** ने शताब्दी हेतु आज का सूत्र व्यक्त करते हुए प्रार्थना की – *हमारा कल का सूत्र था – 'शताब्दी हमारा जीवन है।' आज का सूत्र गुरुहरि काकाजी महाराज ने 1986 में जो मॅग्नाकार्टा दिया था, उसमें से वो लिया है। काकाजी ने कहा था – 'एक कलश तो चढ़ गया राजा, अब दूसरे कलश की बात – गुणातीतभावना वाले साधु बनो...' यह सूत्र सुनने में काफ़ी सिम्पल लगता है, लेकिन इसके पीछे बहुत बड़ा सिग्नीफिकंस है। गुणातीतानंदस्वामी ने चौथे प्रकरण की 143वीं बात में बड़े संत-साधु के 36 गुण लिखे हैं। उसमें लास्ट गुण है – कामिल, काबिल सब हुनर तेरे हाथ। ऐसे संत ही पारस से पारस बना सकते हैं।* ***गुणातीत***

संत ही जीव को गुणातीत करते हैं। *आज इतने सारे गुणातीत संत बैठे हैं, तो हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि गुरुहरि काकाजी महाराज - पप्पाजी महाराज की शताब्दी जब हम मना रहे हैं, तो आप हमें गुणातीतभावना वाला साधु बना देना, जो काकाजी-पप्पाजी की इच्छा है। सो, हमारा सूत्र है–* ***'हे गुणातीत, कर गुणातीत...'***
इस प्रकार जोशभरे स्वर में सभी ने सूत्र का उच्चारण किया और सांकरदा के **पू. स्नेहलस्वामीजी** को उनके **75वें जन्मदिन** की बधाई देते हुए विसर्जन प्रार्थना करके प्रसाद के लिए प्रस्थान किया।

बावन वर्ष पूर्व संस्था से पृथक होने के बाद, गुरुवर्य योगीजी महाराज की रुचि - रहस्य को समझ कर **गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी ने** प.पू. कांतिकाका - प.पू. सोनाबा के सहयोग से **'गुणातीत समाज की - योगी परिवार'** की रचना की और 1968 में श्रीजी महाराज के प्रासादिक तीर्थ **सांकरदा** में प्रथम **मंदिर** की स्थापना करके **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को महंत पद अर्पण किया।** 2018 में गुरुहरि काकाजी - गुरुहरि पप्पाजी की शताब्दी का अंतिम सोपान मनाने का निश्चित करना था, तो **2016 की 12 मार्च को दिल्ली अशोकविहार मंदिर** में प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी, प.पू. गुरुजी, प.पू दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई के सान्निध्य में हुई एक बैठक में निर्णय लिया गया कि **सांकरदा की भूमि पर दिव्य बंधुजोड़ी शताब्दी का अंतिम चरण**, हज़ारों - लाखों की भीड़ इकट्ठी करके या बड़े से बड़े महोत्सव के रूप में मनाने के बजाय, एक ठोस कार्य करते हुए **गुरुहरि काकाजी द्वारा स्थापित इस प्रथम मंदिर का जीर्णोद्धार** किया जाए। सब की सहमति से पवई के भाइयों ने इस भगीरथ कार्य को पूर्ण स्वरूप देने की ठान ली और दिन - रात एक करके सवा साल में मंदिर का पुनः निर्माण करवा कर दिव्य बंधुजोड़ी के प्रति अपनी भक्ति अदा की और... **29 दिसंबर की सुबह 9:00** बजे मंगल घड़ी आई, जब सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप मंदिर के गर्भगृह में मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा करने के लिए गणमान्य अतिथियों सहित विराजित हुए। **प.पू. वशीभाई** एवं गुरुहरि काकाजी के समय के पुराने जोगी **पू. विनोदभाई पुरोहित** ने वेदोक्त विधि से मूर्तिप्रतिष्ठा कराई। भगवान स्वामिनारायण की मूर्ति एवं प्रत्येक चेष्टा का दर्शन कराते हुए प्रार्थना के भजनों से पूरा माहौल दिव्यता से भरपूर था। प्राणप्रतिष्ठा विधि के बाद **प.पू. वशीभाई** ने आशिष याचना की –
मंदिर बन गया ! मंदिर बनाना ही बहुत बड़ी बात है... हमारे स्वरूपों ने मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा की, लेकिन प्रगट संत के बिना वह जीवंत नहीं रहेगा। बहुत जिम्मेदारी का इनका कार्य है। समय पर आरती हो, भजन, कीर्तन, कथावार्ता और भगवान को प्रसन्न रखना – बहुत मुश्किल कार्य है... आज स्वामीजी, साहेबजी सभी के चरणों में प्रार्थना करते हैं – हे दयालु ! इस तरीके से मंदिर जीवंत रहे और हम अखंड मंदिरमय, भगवानमय, पल - पल आपका आधार लेकर जिएँ – ऐसे आप आशीर्वाद दें... ***काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी का वारसा हमें मिला है और उन्होंने ऐसी भूमिका तैयार कर दी है कि हम खुद मंदिररूप - ब्रह्मरूप हो जाएँ...*** *हम कितने भाग्यशाली हैं कि दो सौ साल पहले वडोदरा जाते हुए* ***'महाराज'*** *यहाँ ठहरे थे। उनकी लाईफ कितनी डायनेमिक होगी कि वे एक ही रात ठहरे थे, लेकिन गाँव में कई जगह उनकी प्रसादी की वस्तुएँ आज भी मौजूद हैं। वे कितने पावरफुल होंगे ! कितनी महान घटना है कि पाँच सौ परमहंस, दोनों आचार्य – अयोध्याप्रसादजी महाराज एवं रघुवीरजी महाराज तथा दादाखाचर जैसे सभी भक्त हाज़िर थे। काकाजी की कैसी दीर्घ दृष्टि होगी कि सबसे इस ज़मीन के दस्तावेज इकट्ठे करके पप्पाजी, साहेब और संतों के सहयोग से यहाँ के अंबालालभाई, पूंजालाल, रावजीभाई जैसे प्रतिष्ठित*

हरिभक्तों का साथ लेकर बहुत कम समय में गुणातीत समाज का प्रथम मंदिर बना दिया। संत यहाँ रहे और संस्कृत पढ़े। गुरुजी भी यहाँ संस्कृत पढ़े। अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका जो छपती थी, उसके कई कितने 'सद्‌विचार' काकाजी ने गुरुजी को यहाँ लिखवाए हैं। ऐसी ये प्रासादिक भूमि है। हम कितने भाग्यशाली हैं कि जो स्वरूप एवं गणमान्य मुक्त उस समय हाज़िर थे, उन्हीं की हाज़िरी में आज मूर्तिप्रतिष्ठा कर रहे हैं... ***हरिप्रसादस्वामीजी से प्रार्थना है कि हे स्वामीजी ! आप जिस हेतु इतना परिश्रम करते हैं, ख़ुद को याहोम कर दिया है, लहू का पानी कर दिया है, उसे समझ कर हम जवाबदेही बनें।*** *आप जो दास के दास होने की बात करते हैं, वह समझें... हम सच में आपका परिचय बन कर, आपका मंदिर बन कर जिएँ।*

तत्पश्चात् **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** ने आशीर्वाद दिया–

...गुणातीत समाज के सभी मुक्त मंडल से एक ही प्रार्थना - विनती करनी है कि ***हम सभी को शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी जैसे सनातन दिव्य पुरुषों की बहुत शोभा बढ़ानी है।*** *हमारी दासत्वभक्ति किसी भी संजोग में तनिक भी कम न हो। हमारा संबंध आपके साथ निरंतर बढ़ता जाए, बढ़ता जाए, बढ़ता ही जाए। इसके पीछे एक ही मंगलकारी भावना समाई है कि आप राज़ी हों। ऐसी एक भावना की ओर निरंतर हमारा कदम बढ़ता जाए। अंतर की एक ही प्रार्थना है कि दासत्व बढ़ता जाए। गुणातीत पुरुष जो परिश्रम कर रहे हैं, उसके लिए धन्यवाद !* ***काकाजी - पप्पाजी तो हमारे प्राणस्वरूप थे ही।*** *साहेब, स्वामीजी भी परिश्रम कर रहे हैं, तो हमारा परम कर्तव्य है कि किसी भी प्रकार से किसी भी संजोग में टोटल ज़ीरो होकर, स्वरूपों की गोद में रहते हुए केवल वडीलों को राज़ी करने की भावना से हमारी प्रत्येक सैकण्ड गुज़रती जाए।*

जिसके फलस्वरूप–

हमारा संबंध बढ़ता जाए-बढ़ता जाए,

ब्रह्मभाव से हमारा संबंध बढ़ता जाए,

हमारा दासत्व अखंड बढ़ता जाए,

काकाजी-पप्पाजी जैसे सनातन स्वरूपों की हमारे प्रति प्रसन्नता बढ़ती जाए।

विशेष कोई प्रार्थना करनी नहीं है। गुणातीत परंपरा के दिव्य पुरुषों को राज़ी करना ही हमारा अंतिम फ़र्ज़ है; क्योंकि वे हमारे आधार हैं। हमारे लिए वे सर्वस्व हैं। तो, आज हम मगन होकर 'तू ही-तू ही' की पुकार से एक ही संकल्प करें कि हे महाराज, हे स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी हमारा जीवन सहजता से बीतता जाए-बीतता जाए। मेरा मुझमें कुछ नहीं, ऐसी एक मंगलकारी भावना से – 'दास का दास होकर, रहे जो सत्संग में, भक्ति उसकी नेक जानू मैं, नाचूँगा उसकी ताल में' – ऐसी भावना से स्वरूपों में डूबे रहें-डूबे रहें – खोए रहें... ***हे प्रभु ! हम आपके हैं और आपका होकर जीना है... हमारे लिए काकाजी - पप्पाजी ने बहुत परिश्रम किया है। उनका ऋण चुकाना ही हमारा अंतिम लक्ष्य है...*** *आपके परिश्रम को हम जीवंत रखें... आपकी रुचि के अनुसार हम वर्तते रहें और हमारे हृदय में एक सरीखी उमंग बढ़ती जाए-बढ़ती जाए, ऐसी सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणारविंद में अंतर से प्रार्थना...*

प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी ने आशीष दी–

...पू. स्वामीजी ने बहुत अच्छी बात की। हमें मिले जो दिव्य स्वरूप हैं, उनमें हम लीन रहें और संप, सुहृदभाव और एकता से जीने की प्रार्थना करें तथा जीतेजी अक्षरधाम का सुख भोगते हो जाएँ–ऐसी प्रभु से प्रार्थना करें। आज भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी, गोपालानंदस्वामी और दिव्य स्वरूप विराजमान हुए और स्वामीजी ने उनकी मूर्तिप्रतिष्ठा की। तो, स्वामीजी की प्रार्थना के अनुसार भगवान के समक्ष दृढ़ निश्चय करके जाएँ कि हमें जो संत मिले हैं, उनसे एकता करें, उनके साथ ओतप्रोत हों और जीतेजी सुख भोगते हो जाएँ। इसके लिए खूब-खूब बल, प्रेरणा और शक्ति मिले, इस हेतु ये सभी दिव्य स्वरूप हमारे लिए प्रार्थना करके बल दें–ऐसी प्रार्थना... ऐसा नियम है कि जिस दिन राजा गद्दी पर बैठता है, तो किसानों के कर्ज़ इत्यादि माफ़ कर देता है। उसी प्रकार, ***आज स्वामिनारायण भगवान विराजमान हुए हैं, हरिप्रसादस्वामीजी और साहेब से प्रार्थना है कि हम सभी के गुनाह और भूल-चूक हो, वह माफ़ करें ताकि हम नए सिरे से नया जीवन जीते हो जाएँ...***

तत्पश्चात् श्री ठाकुरजी के समक्ष **गुणातीत ज्योत** में से बन कर आए सौ व्यंजनों का अन्नकूट लगा कर थाल करके आरती की और मंत्रपुष्पांजलि के बाद संपूर्ण विधि संपन्न करके सभी ने महाप्रसाद लिया। गुणातीत स्वरूपों के प्रस्थान के बाद, मंदिर के दर्शन हेतु हरिभक्तों का तांता लगा रहा।

और... **दोपहर 3:00 बजे** मानो महिला सम्मेलन का डंका बजाते हुए गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्तियों की शोभायात्रा आरंभ हुई। गाड़ियों में बैठ कर स्वरूप बहनें सभी को दर्शन दे रही थीं और उनके आगे अलग-अलग प्रांत के नृत्यों द्वारा हरिभक्त बहनें अपनी खुशी ज़ाहिर कर रही थीं। यूँ हर्षोल्लास से सायं पौने पाँच बजे स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों ने 'सुहृदम्' में प्रवेश करके मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया। आवाह्न श्लोक के बाद पवई की युवतियों ने स्वागत नृत्य करके अभिवंदन किया और सभी केन्द्रों की दो-दो प्रतिनिधि बहनों ने मंचस्थ स्वरूपों एवं विशिष्ट अतिथियों को शताब्दी के निमित्त हार अर्पण किया।

श्रीजी महाराज के महाप्रासादिक गाँव सांकरदा की पुण्य भूमि पर मूर्तिप्रतिष्ठा और बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव मनाने वाले थे, उससे करीब पंद्रह दिन पहले एक सांकेतिक घटना बनी। दिल्ली मंदिर से आत्मीयता से जुड़े मुंबई निवासी पू. ओ.पी. अग्रवालजी अपने ऑफिस के कार्य के सिलसिले में वडोदरा राजघराने की राजकुमारी **श्रीमती आशाराजे गायकवाड़** से मिले। श्रीमती आशाजी का परिचय पाकर पू. ओ.पी. अग्रवालजी को सहज ही याद आया कि सयाजीराव गायकवाड़ सरकार के निमंत्रण पर भगवान स्वामिनारायण वडोदरा उनके महल **'लक्ष्मीविलास पॅलेस'** जाते हुए सांकरदा गाँव में ठहरे थे। पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने सारा वृतांत उन्हें बताया और महिला सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में आने के लिए उन्हें निमंत्रित किया। श्रीमती आशाजी ने सहर्ष 'हाँ' की और आज के इस सम्मेलन में शामिल होने के लिए ख़ास आईं। तालियों की गूंज से उनका स्वागत करके हार अर्पण किया गया।

महिला सम्मेलन में सर्वप्रथम **प.पू. माधुरी बहन** ने शताब्दी वंदना करी–

...हम सब बहुत नसीबदार हैं, आज स्वर्ण दिन है। आज का दिन बहुत-बहुत सुनहरा दिन है। जैसे महाराज के समय से जीवुबा-लाडुबा, झमकुबा ने महाराज की प्रसन्नता के लिए बहुत सहन किया, वैसे ही ताड़देव में काकाजी-पप्पाजी की निश्रा में साधना करती हुई बहनों ने बहुत ही सहन किया है। बापा के वचन से ताड़देव में बहनों का कार्य शुरू हुआ था। 6-डी सोनावाला बिल्डिंग में काकाजी-पप्पाजी रहते थे, उसी परिसर के 8सी में कांतिकाका-

सोनाबा रहते थे। ***शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से कांतिकाका और काकाजी के कुटुंब ने एक होकर नया इतिहास रचा।*** *काकाजी-पप्पाजी की कथावार्ता से सभी बहनों को भगवान भजने की प्रेरणा मिली।*

सोनाबा *ने ताड़देव में रहकर संतों की बहुत सेवा करी। सबके अपशब्द सहन किए, बहुत अपमान सहा। बा के निरपेक्ष प्रेम से कई युवक संत बनने के लिए तैयार हुए, तो कई युवक भी समर्पित होकर सत्संग की सेवा करने के लिए तत्पर हुए।*

उसी तरह से ***बेन*** *ने भी पप्पाजी की आज्ञा से सभी बहनों को महाराज का स्वरूप मानकर जीवन जिया। बेन की प्रेरणा से अन्य बहनें भी भगवान भजने के लिए तैयार हुईं।*

ज्योति बहन *ने हमें दीक्षा दी और हमारे लिए जो भजन किया, उसके लिए हम सब बहुत ही ऋणी हैं... ज्योति बहन हर प्रसंग पर हमें आध्यात्मिक सूझ देती थीं। काकाजी उन्हें* ***'निर्दोषबुद्धि की बुलबुल'*** *और* ***'लक्ष्मीजी'*** *का अवतार भी कहते थे।*

इसी तरह ***हंसा दीदी,*** *वे तो अखंड मूर्ति के साथ बातें करती हैं और महापूजा में सभी को भजन-प्रार्थना का बल देती हैं... ऐसे ही* ***तारा बहन*** *पप्पाजी से कहतीं – 'हुं तारी बंसी!' वे हमारी प्रेरणा मूर्ति हैं।*

ऐसे ही ***देवी बहन*** *ने वकील होते हुए भी – 'मैं इन सबकी दासी हूँ' – ऐसा मानकर सभी बहनों के साथ सहजता से जीवन जिया है और अभी भी सब बहनों को आनंद कराती हैं।*

इसी तरह ***जसु बहन*** *– जिन्हें काकाजी 'उदयपुर की रानी झमकुबा' कहते थे। पहले से ही शूरवीर और सबके लिए खूब भजन करती हैं। उनके भी हम बहुत ऋणी हैं।*

काकाजी ने शिविरों में बहुत कथावार्ता की। हमें लोनावाला, माथेरान कई जगह ले गए। दिल्ली से ***आनंदी दीदी*** *व बहनों को बुलाते थे। आनंदी दीदी ने बहुत सहन किया। बहुत कठिन साधना की है। काकाजी ने उन्हें वनलता बहन, मधु जीजी वगैरह के घरों में रखा। अभी सब बहनें उनकी निश्रा में साधना कर रही हैं।*

सतुभाई के घर दक्षा में ***प्रेम बहन*** *सभी बहनों के साथ कथावार्ता, भजन और अखंड धुन करते-कराते थे। वे अखंड स्वामिजी की तरफ नज़र रखकर सबके लिए भजन करती हैं और सभी को बल देती हैं।*

इसी तरह लंडन, सांकरदा, शिकागो में ***एन.जी. बहन, किरण बहन*** *हैं। काकाजी-पप्पाजी की कथावार्ता से, बा के प्रेम से ऐसे सब बहनें तैयार हो गईं। बापा कहते थे कि पढ़े-लिखे संत तैयार करने हैं, इसी तरह बा-बेन की निश्रा में इन्होंने पढ़ी-लिखी बहनें भी तैयार कीं!*

हम सब प्रशांत-पवई में ***योगिनी बहन*** *के साथ रहते थे और तब इन्होंने हम सभी बहनों को खूब ही संभाला है। मीना बहन, लीलू बहन, कुसुम ताई, सिद्धि बहन, कृपा बहन के साथ में रहकर, उन्होंने हमारे लिए बहुत ही भजन किया। ज्योति बहन के साथ उनका असाधारण प्रेम था। उनकी प्रेरणा से ही हमें भगवान भजने की प्रेरणा मिली है।*

एक दिन हम ताड़देव गए थे और काकाजी बैठे थे। मुझे पूछना था कि एग्ज़ाम के बाद मुझे आगे क्या करना है? उन्होंने ही अंतर्यामी रूप से कहा – पढ़ने जैसी तो 'ब्रह्मविद्या' है। उसी समय मैंने तै कर लिया था कि मुझे भगवान भजने हैं। काकाजी हमेशा धुन ही कराते थे। कुछ भी प्रसंग बने तो धुन करो...

तो, सभी के चरणों में यही प्रार्थना है कि अभी ये बंधुबेलड़ी शताब्दी यहीं पूरी नहीं होती है। हमारे जीवन में उनकी

अखंड स्मृति, अभिप्राय दृढ़ हो कि उन्हें हम से जो कराना है, वो हम कर पाएँ यहीं प्रार्थना।

तत्पश्चात् प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने आज की विशिष्ट अतिथि राजकुमारी श्रीमती आशाराजे गायकवाड़जी एवं चॅरिटी कमीश्नर श्रीमती सुवर्णा जोशीजी का संक्षिप्त परिचय दिया। महोत्सव की स्मृति भेंट प्राप्त करने के बाद **श्रीमती आशाजी** ने गायकवाड़ परिवार के साथ स्वामिनारायण भगवान के संबंधों पर प्रकाश डालते हुए कहा–

...आज श्री काकाजी-पप्पाजी के शताब्दी महोत्सव के शुभ अवसर पर मुझे जो सम्मान देकर यहां आमंत्रित किया है, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ। श्री दादुभाई पटेलजी जिन्हें लोग प्यार से 'काकाजी' कहते हैं, उन्होंने अपना पूरा जीवन योगीजी महाराज को समर्पित करके बिताया था। 'पप्पाजी' के समर्थन से, हरिप्रसादस्वामिजी, कांतिकाका और अन्य लोगों ने मिलकर समाज स्थापित किया था। ***बहनों के बारे में आज मुझे ज्ञात हुआ है कि किन परिस्थितियों में काकाजी महाराज और पप्पाजी महाराज ने बहनों को भगवान भजवाने का कार्य किया था और बहुत अच्छा अंजाम भी दिया।*** *इस संस्था में इतनी ज्यादा तादाद में स्त्रीशक्ति के रूप में भगवान भजती संत बहनें नई पीढ़ी को भगवान देने का कार्य कर रही हैं। मेरा जन्म और पालन- पोषण नेपाल में हुआ है। गीता, शिवपुराण, रामायण आदि ग्रंथों से मेरा जीवन सुसज्जित हुआ है, इसके लिए मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझती हूँ। मैं आज आपके सामने इसीलिए हूँ कि मैं महाराजा सियाजीरावजी की पुत्रवधु हूँ... ओ.पी. अग्रवालजी ने मुझे पूज्य वशीभाई जैसे संत से मिलवाया। उनके शुद्ध विचार और सादगी देखकर मैं बहुत प्रभावित हुई और मैंने यहाँ आने के लिए तुरंत हाँ कर दी... इतिहास में अंकित है कि सन् 1700 में गायकवाड़ सरकार कई बार वड़ताल और अमदावाद में भगवान स्वामिनारायण से मिले थे। बाद में सन् 1750 से 1800 के बीच महाराजा फत्तेसिंहराव (प्रथम), सयाजीराव (प्रथम), मनरजीराव और गोविन्दराम ने स्वामिनारायण संप्रदाय के अनुयायियों के साथ मधुर संबंध स्थापित किए।*

इतिहास में यह भी लिखा है कि भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें सन् 1700 में शिक्षापत्री जैसे ग्रंथ के रूप में उपदेश दिया।

सन् 1870 के दौरान महाराजा सयाजीराव (तृतीय) के बाद, वडोदरा के तेरहवें राजा का अभिवादन करते हुए, ***'नज़रबाग पॅलेस'*** *में स्वामिनारायण संप्रदाय के प्रतिनिधि आशीर्वाद देने के लिए भी आए थे।*

1877 में एक उत्सव पर बड़े दरबार में स्वामिनारायण के संतों ने भविष्यवाणी की थी कि महाराजा सयाजीराव वडोदरा स्टेट के बहुत प्रभावशाली राजा सिद्ध होंगे।

भगवान स्वामिनारायण के अनुयायियों के अनुरोध पर महाराजा सयाजीराव ने निर्णय लिया था कि वडोदरा राज्य की रेलवे लाईन्स को चरोत्तर क्षेत्र से जोड़ देंगे। स्वामिनारायण समाज के अनुयायी इस निर्णय से बहुत खुश हुए, क्योंकि रेलवे कनेक्शन के कारण वे आसानी से स्वामिनारायण मंदिरों में पहुँच सकते थे। ***आज भी वडोदरा के गायकवाड़ स्वामिनारायण संप्रदाय के अनुयायियों का वैसा ही सम्मान करते हैं...*** *मैं बयां नहीं कर सकती कि मुझे आप सबसे मिल कर कितनी खुशी हुई है।*

इसी प्रकार, चॅरिटी कमीश्नर **श्रीमती सुवर्णा जोशीजी** ने अल्प समय में हुए अपने अनुभवों से सबको अवगत कराया–

...मेरी ऊंचाई और मेरा कद बहुत छोटा है, लेकिन यहाँ बुलाकर वशीभाई ने मेरा कद बहुत बढ़ा दिया। उनका

बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं कल से ही ये माहौल देख रही हूँ। हरेक दीदी के चेहरे पर खुशी-सेवाभाव देख रही हूँ। एक-दूसरे के प्रति प्रेम देख रही हूँ। एक-दूसरे के लिए उनकी जो एटैचमेंट है और जो आए हैं उनकी सेवा करने की जो तन्मयता है, वो देख कर मैं बहुत खुश हो गई हूँ। यहाँ मुझे कौन लाया, वो अगर मैं न बताऊँ, तो वो मेरी गल्ती होगी। हमारे एक बहुत अच्छे इंसान एड्वोकेट ***शैलेष यादव*** *की वजह से मेरी पहचान* ***जिग्ना बहन*** *से हुई। जिग्ना बहन ने मुझे वशीभाई तक पहुँचाया और अन्नकूट के मौके पर मैं इनसे मिली। तब से पता नहीं एक कौन-सा अटैचमेंट है, जो मुझे जिग्ना बहन से बांधे रखता है। उसके बाद मेरी जिंदगी में आईं माधुरी बहन।* ***यहाँ भी मुझे लगता नहीं है कि मैं पहले किसी से मिली नहीं हूँ। किसी का नाम मुझे शायद मालूम न हो, पर ये 'बहन' और 'भाई' से मैं ये जान चुकी हूँ कि नाम की जरूरत नहीं है।*** *बस तुम्हारे पास दिल है, उससे सेवा करो। वही तुम्हारे लिए सब कुछ है... आप सबको शुभेच्छा-धन्यवाद देती हूँ।*

गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की शताब्दी का यह अंतिम सोपान था, तो सभी के हृदय में उनके प्रति भक्ति अदा करने का एक उत्साह और प्रार्थना करने की चाहना थी। सो, अपनी उमंग व आरज़ू व्यक्त करने के लिए **पू. डॉ. नीलम बहन** ने वंदना की–

मैं तो बहुत भाग्यशाली हूँ, मुझ पर कृपा का कोई पार नहीं है... जिस युग में काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा और बेन जैसे चार-चार स्वरुप गुणातीत ज्योत में स्थूल रूप से विद्यमान थे, तब मेरा जन्म और विकास हुआ एवं सेवा का मौका मिला। पप्पाजी और काकाजी अनेक जन्मों से कार्य करने के लिए आते ही रहे होंगे। महाराज का श्लोक–जिनके रोम-अणु सुछिद्र में ब्रह्मांड कोटि फिरते हैं–जब पढ़ते हैं, तो ऐसा होता है कि ***अनंत ब्रह्मांड में विचरते-विचरते पप्पाजी 1916 और काकाजी 1918 में इस पृथ्वी पर पधारे। उनके कार्य तो पूर्व नियोजित ही थे, लेकिन वह कब करना बस उसी का इंतज़ार था।***

अलमस्त काकाजी के दर्शन करते, तो उनमें से आनंद का फुआरा बरसता था! *वे अंतर्यामी थे। मुझे ऐसा होता था कि वे सब विचार पकड़ लेते हैं, तो ज़्यादा कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं।* ***काकाजी ने मुझे सिखाया कि रोज़ प्रभु से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि मुझे आपके स्वरुप की पहचान कराना।*** *हम अगर प्रत्यक्ष का बल लेना सीखें, तो यह साधना खूब आसान बनती है।*

पप्पाजी यानि प्रगल्भ, प्रसन्न, शांत मूर्ति! *उनकी सेवा में रहने का मुझे सौभाग्य मिला।* ***पप्पाजी ने ब्रह्मसूत्र दिया–'प्रथम प्रभु, फिर कदम' और काकाजी ने सूत्र दिया 'डोन्ट गो बाय धी फेक्ट्स, गो एकॉर्डिंग टु यॉर इनर कन्वीक्शन।'*** *लेकिन... हम हर बार प्रभु को भूल ही जाते हैं। गुणातीत ज्योत में 51 बहनें भगवान भजने आईं, तब संस्था ने विमुख किया था। तब पप्पाजी कहते थे–सत्पुरुष की स्मृति में ही हमेशा रहना, वे कल्याण करेंगे ही।*

सौ-सौ वर्ष तक जिन्होंने हमारे लिए संकल्प किया, हमारा जतन किया, वे क्या हमारा अधूरा रहने देंगे... ***अगर ज्योति बहन, तारा बहन, दीदी, देवी बहन नहीं होते तो क्या हमें इन पुरुषों की पहचान होती? उनका संकल्प है कि गुणातीत ज्योत अमर है। वह बाहर का मकान नहीं, क्वांटीटी ऑफ साधक नहीं, बट क्वालिटी ऑफ इच साधक!***

थोड़े दिन पहले दीदी ने बात बताई कि पप्पाजी ने एक बार कहा था–हंसा, तूने जो मुझमें विश्वास रखा है, वह

कभी निष्फल नहीं जाएगा। ***पप्पाजी-काकाजी*** *से हम कहते हैं कि* ***आपने हम में विश्वास रखा है,*** *तो सभी बहनें संप, सुहृदभाव, एकता से रहते हुए, परम भागवत संत बन कर, केवल पराभक्ति रूप जीवन जी कर* ***आपका विश्वास कभी निष्फल नहीं होने देंगी।*** *आज भी हम सब को* ***यह प्रोमिस देना है...***

तदोपरांत **प.पू. प्रेम बहन** ने आशीर्वाद दिया–

यह महिमा अपरंपार है। 'नेति-नेति' – जिसका कोई अंत नहीं; जितनी भी महिमा गाएँ वह कम है। इन स्वरुपों ने ऐसा कष्ट उठाया है... आनंदी दीदी ने दो-तीन बार मुझसे बात करी है कि सत्पुरुष धरती से जाएँ ही नहीं तो कितना अच्छा! हमें पता है कि ***हमें अपने जीवन में सत्पुरुष को हमेशा जीवंत, प्रत्यक्ष और प्रगट रखना है। उन्हें कभी भी जाने नहीं देना। काकाजी और पप्पाजी ने धरती पर आकर खूब परिश्रम उठाया।*** *शास्त्रीजी महाराज की एक ही आज्ञा से वचनामृत अंत्य 7 और 11 के अनुसार उन्होंने भक्तों और संबंध वालों की महिमा समझी।* ***भक्तों की सेवा बारातियों और दामाद की तरह करी।*** *अभी तो यह आसान है, पर उन दिनों बहुत मुश्किलें थीं। उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। स्वामीजी भी कहते हैं कि अंत्य 11 अनुसार विपरीत परिस्थिति में वे खुद ऐसा जिए और संबंध वालों में महिमा प्रगटाई...*

योगीजी महाराज ने एक बार काकाजी को राजकोट होकर गोंडल पहुँचने की आज्ञा करी थी। पर साथ में कोई हरिभक्त थे, उनके कहने पर वे सीधे गोंडल पहुँच गए। बापा ने पूछा राजकोट होकर आए ? काकाजी ने मना की तो बापा ने कहा – मैंने आपके लिए वहाँ भोजन बनवाया था, अब राजकोट जाकर आओ। काकाजी राजकोट पहुँचे, तो वे हरिभक्त किसी काम से बाहर गए थे, सो काकाजी गोंडल लौट आए। यूँ तीन-चार बार आना जाना हुआ। काकाजी बापा को सर्वज्ञ मानते थे कि जो कुछ हो रहा है वो बापा ही कर रहे हैं। उनके जीवन में मान-अपमान के कितने प्रसंग बने, पर खुद जीकर हमें सिखाया...

पप्पाजी की सिन्सीयारीटी कैसी! एक साधक को उन्होंने कहा था कि जो स्वभाव छोड़ने का प्रयत्न करे, उस पर मैं खूब राज़ी होता हूँ! ***मन्नत मानें, अपनी इच्छाएँ पूर्ण हों, रिद्धि-सिद्धि प्राप्त हो – ऐसे बहुत से सत्संग हैं, लेकिन 'स्वभाव छोड़ने का सत्संग' जगत में और कहीं नहीं है, बस यहीं है। जब तक स्वभाव है, तब तक आत्मा को कभी शांति होगी नहीं और सत्पुरुष कभी राज़ी नहीं होंगे – यह मूल बात पप्पाजी ने हमें सिखाई।*** *पप्पाजी कहते थे कि योगी बापा से मैंने कभी नहीं माँगा कि आप राज़ी रहना; उनकी मरज़ी में जीएँगे तो सत्पुरुष हमेशा राज़ी ही रहेंगे... बस हमें इतना ही करना है कि अपना मन छोड़ कर सत्पुरुष की आज्ञा में रहना है; पर वो बहुत बड़ी बात है।*

गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी ने बहनों के भगवान भजने हेतु जो राजमार्ग प्रशस्त किया है, उसका ऋण तो कभी अदा किया ही नहीं जा सकता... लेकिन, उनके उपकार के लिए निरंतर धन्यवाद करना भी एक भक्ति है। ऐसी भक्ति अदा करने हेतु दिल्ली में प.पू. आनंदी दीदी की निश्रा में भगवान भजती बहनों और सत्संग की बेटियों ने **'लुटाया तुमने प्यार, रक्षा करी हर बार...'** गरबा प्रस्तुत किया...

भावनृत्य प्रस्तुति के बाद ये बहनें सभी वडील बहनों से आशीर्वाद लेने के लिए गईं और महोत्सव की स्मृति हेतु प.पू. हंसा दीदी, प.पू. देवी बहन और प.पू. आनंदी दीदी के साथ फोटो खिंचवाने के लिए बैठीं, तो जैसे कि 2017 में **प.पू.**

ज्योति बहन ने प.पू. आनंदी दीदी को अपनी गोद में बिठा कर अनोखी स्मृति दी थी, उसी प्रकार पूरे एक वर्ष बाद **प.पू. हंसा दीदी** ने **प.पू. आनंदी दीदी** को अपनी गोद में बिठा कर न केवल नया जॅस्चर किया, वरन् **प.पू. ज्योति बहन की दिव्य हाज़िरी की प्रतीति करवा दी।**

कोई वस्तु जब हमें आसानी से मिल जाती है, शायद इसीलिए उसकी बहुमूल्यता का ख्याल नहीं होता। सो, गुणातीत समाज में जिस सहजता से बहनें भगवान भज रही हैं, उसके पीछे किन का क्या योगदान रहा और वे किस प्रकार की कठिनाइयों से गुज़रे, उस पर प्रकाश डालते हुए और हमें हुई प्राप्ति की महत्ता समझाने के लिए, **शिकागो** के मुक्तों ने संक्षिप्त ऑडियो-वीडियो द्वारा दर्शन करवा कर, **गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी एवं उन्हें सहकार देने वाली वीरांगनाओं को नमन किया।**

तत्पश्चात् **प.पू. आनंदी दीदी** ने शताब्दी वंदना की–

...महाराज और सब गुणातीत स्वरूपों की महाप्रसादी की भूमि सांकरदा पर जब से कदम रखा है, तब से इस फंक्शन का सारा माहौल देख कर दिल में एकदम दिव्यता-दिव्यता भर जाती है। अभी-अभी 5-6 दिन पहले ही मुझे मल्कानी अंकल ने पूछा था–आनंदी इतने बड़े-बड़े फंक्शन क्यों करते होंगे? तो, मैंने उन्हें बताया–इसके बहुत सारे हेतु होते हैं। पर, सबसे ज़्यादा ***इन फंक्शन्स के पीछे यह हेतु लगता है कि सेवा से एक-दूसरे के नज़दीक आते हैं और आत्मीयता व महिमा बढ़ती है।*** *वाक़ई, ऐसा ही इस भूमि पर महसूस हो रहा है। काकाजी तो कई बार भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी और उनके द्वारा दिए गए इन सब प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों को करोड़ों वंदन-धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद कहते थे... इन सबके द्वारा हमें सनाथ रखा है।* ***गुरुजी भी कहते हैं कि हम अखंड सौभाग्यवान हैं।*** *बहुत सालों पहले जब मैंने भजन की एक लाइन सुनी थी–'चूड़ी ने चांदलो क्यारे य भूंसाय ना...' तभी मुझे ऐसा आश्चर्य हो गया कि अहो! भगवान के साथ एकरूपता होने कारण हमारी चूड़ी और माथे की बिंदी भी कभी नहीं उतरेगी!*

काकाजी-पप्पाजी ने हमारे जीवन में कैसा काम किया है? यहाँ हमारे साथ दिल्ली से हम करीब 200 हरिभक्त आए हैं, जिसमें नॉन गुजराती ज़्यादा हैं। कइयों को गुजराती में होती बातें समझ में नहीं आ रही होंगी। लेकिन, वे सब यहाँ पर सबकी सेवा-उमंग देख रहे हैं। जैसे कि कल गुरुजी ने कहा था कि यह एक ऐतिहासिक फंक्शन है। कभी न भूलने वाला फंक्शन है। तो ***सब यहां से सबका केवल गुण भी लेकर जाएंगे, तो भी बहुत पुण्य उदय हो जाएगा।*** *इसलिए* ***कुछ संभाला जा सका हो या न संभाला जा सका हो, उसे गिने बिना सिर्फ गुण लेकर यहाँ से जाएँ। यदि ऐसा करेंगे तो आध्यात्मिकता में हम एक कदम और आगे जाएँगे।***

काकाजी-पप्पाजी *ने हमेशा प्रेम बरसाया है। हमारी चेतना और स्थूल की जिम्मेदारी उन्होंने ली ही है। मुझे याद है एक बार गुणातीत ज्योत से कुमुद बहन दिल्ली आई थीं। हम आपस में बात कर रहे थे। तो अपने जीवन प्रसंगों की बात करते हुए उन्होंने बताया कि मुंबई से वे चप्पल लाई थीं, लेकिन वह थोड़ी छोटी लग रही थी। एक दिन वे पहन कर थोड़ा चल कर देख रही थीं, तभी प्रभु कृपा में से पप्पाजी आए और कहने लगे–कुमुद, ये छोटी चप्पल क्यों पहनी है? उनके मन में भी यही बात थी कि जब मुंबई जाऊँगी, तो एक नंबर बड़ी लेकर आऊँगी। वही बात पप्पाजी ने कह दी। तो, उन्हें एहसास हुआ कि इतनी स्थूल चीज़ जो हमारी नोट करते हैं, तो आध्यात्मिकता की तो बात ही क्या?*

ऐसे ही थोड़े समय में काकाजी का भी जीवन देखने का चांस मिला। दरअसल, हम मायिक दृष्टि से ही इन स्वरूपों को ज़्यादा निहारते हैं, इसलिए हमारी प्रगति नहीं हो पाती है। एक बार काकाजी दिल्ली आए थे, तब मधु जीजी सत्संग में नई ही आई थीं। काकाजी ने उनका हाथ पकड़ कर एक जॅस्चर किया। वहाँ बैठे हुए सबको हुआ कि बड़ी मुश्किल से तो ये सत्संग में आने के लिए तैयार हुई हैं और अब काकाजी के ऐसे जॅस्चर से कहीं वे सत्संग से हट न जाएँ। पर, काकाजी के इस जॅस्चर के बाद मधु जीजी ने गुरुजी को लिख कर भेजा कि जब मैं भागवत पढ़ती थी, तब मुझे मन में ऐसा होता था कि श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का हाथ पकड़ा था; यदि वर्तमान समय में भगवान धरती पर प्रगट ही हैं, तो उन्हें मेरा हाथ पकड़ना चाहिए। अब हमारी मायिक दृष्टि से इन गुणातीत स्वरूपों को कैसे पहचान सकेंगे ?

स्वामीजी *के बारे में मैंने सुना है कि एक बार दो-ढाई घंटे की खानगी करने के बाद जैसे ही उठने लगे, वैसे ही कोई अन्य सेवक खानगी करने के लिए आया। संतों ने स्वामीजी से कहा भी – पहले आप बाथरूम जा आइए। स्वामीजी ने कहा – नहीं-नहीं बाद में चला जाऊँगा। एक-एक चीज देखें तो हमारे जीवन में ये गुणातीत पुरुष कितना परिश्रम करते हैं।*

आज बहनों का जीवन देखें... जब भी उत्तर भारत में ज़्यादा बरसात या भूकंप इत्यादि की खबर आए, तुरंत ही ***दीदी*** *का फोन ज़रूर आता है कि वहाँ सब ठीक हो न ! कई बार हमें तो पता ही नहीं होता था कि भूकंप कब आया और चला गया। आज ही मैं ज्योति बहन को याद कर रही थी कि लास्ट इयर 2017 दिसंबर के फंक्शन में ज्योति बहन ने मुझे अपनी गोद में बिठाया था और अभी दीदी ने मुझे अपनी गोद में बिठा लिया।*

एक बार यहाँ ज्योत में लंदन के किसी हरिभक्त ने ***ज्योति बहन*** *से बहनों को पीज़ा खिलाने के लिए कहा होगा। तब कोई दिल्ली आ रहा था, तो ज्योति बहन ने पीज़ा बेझ़ दिल्ली-अक्षरज्योति भेजे। मैंने ज्योति बहन को फोन किया कि आप तो कमाल हो, पीज़ा बेझ़ भेज दिए। उन्होंने तुरंत कहा – हम अकेले -अकेले कैसे खायेंगे ? तुम भी हमारे साथ पीज़ा खाओ, इसलिए भेजे हैं। बातें बहुत छोटी-छोटी हैं, लेकिन खूब स्पर्श करती हैं।*

इसी साल मार्च में साहेबजी के प्राकट्य दिन निमित्त मोगरी आना हुआ था। जिस दिन दिल्ली लौटना था, तब शाम की फ्लाइट से निकलना था। पर, दोपहर के चार बजे ***अश्विनभाई*** *हमें सी-ऑफ करने के लिए गाड़ी के पास खड़े थे। जैसे ही मैं गाड़ी में बैठी, तो उन्होंने देखा कि मेरे चेहरे पर धूप आ रही है। उन्होंने तभी साथ खड़ी एक भाभी की चुन्नी ली और शीशा नीचे करके वहाँ लगा दी ताकि मेरे फेस पर धूप न आए। ऐसे कॅरींग स्वरूप हमें मिले हैं !!*

दिल्ली रहते हुए गुरुजी का जीवन देखते हैं, तो आध्यात्मिकता का दर्शन भी खूब होता है। साधु की मर्यादा में रहते हुए वे हम सबकी परवरिश कर रहे हैं। मुझे कई बार लगता है कि उन्हें क्या स्वार्थ है ? कुछ भी तो नहीं। बीस साल पहले ***गुरुजी*** *ने एक बार मुझे लिख कर भिजवाया था–*

आनंदी, हमें सेवकों को लाड़ जरूर लड़ाने हैं, लेकिन उनकी वृत्तियों का पोषण नहीं करना है।

यह एक ही बात मुझे अब भी बहुत मदद रूप होती है... अभी-अभी दिल्ली के मुक्तों को मैंने बात करी थी कि साधु या स्वरूप से जुड़ा समाज ही उसका असली परिचय बनता है कि ये समाज जब ऐसा है, तो इसके गुरु कैसे होंगे ? तो, ***हम सब इन गुणातीत स्वरूपों का सच्चे अर्थ में परिचय बनें। सिर्फ कहने के लिए नहीं, पर लोग***

सोचने पर मजबूर हो जाएँ कि इनके गुरु कैसे होंगे? *ऐसा हमें वर्तन में लाना है। हम सब उस मार्ग पर चलें– यही प्रार्थना...*

सभी के विचार, प्रार्थना और भावनाओं से यही एहसास होता है कि यदि गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी ने हमें अपनाया नहीं होता, तो हमारा हाल क्या होता? आज उन्हीं की बदौलत गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरभारत एवं विदेश में बहनें प्रत्यक्ष सत्पुरुषों की निश्रा में रह कर जो भगवान भज रही हैं, उन सबकी ओर से **गुणातीत ज्योत** की बहनों ने **'श्रीजी संकल्पना डंका'** नृत्यनाटिका में गुजरात, महाराष्ट्र एवं उत्तरभारत का प्रतिनिधित्व करते हुए धन्यवाद दिया। तत्पश्चात् इस महोत्सव के सभी कार्यों के प्रेरणा स्रोत **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** एवं **पू. घनश्यामभाई** को पुष्प हार एवं शाल अर्पण करके गुणातीत प्रकाश के भाइयों ने अभिवादन किया। गुरुहरि काकाजी एवं गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तियों को बहनों द्वारा हार अर्पण करने के बाद **प.पू. हंसा दीदी** ने आशीर्वाद दिया–

...मुझे बस इतना ही कहना है कि – ***'हम कहाँ हैं और हमें कहाँ पहुँचना है।' यह निशान अहोनिश याद रखें, ताकि हमें ख्याल रहे कि हमें जो भगवान मिले हैं, हमने जिन्हें प्रत्यक्ष माना, उन्होंने हमें जो शब्द, स्मृति, शास्त्र के रूप में जो कुछ भी दिया, उसके अनुसार अपने जीवन को ढाला? कितना ढाला? उन्होंने हमें कितना अच्छा जोग दिया, लेकिन हम जहाँ थे वहीं रहे?*** *रोज़-रोज़ हमारे लिए तो अपनी साधना के सिवा अन्य किसी कार्य के लिए पल होती ही नहीं, प्रत्येक पल साधना की ही होती है। और फिर हम पर हमारे भगवान की प्रसन्नता होनी चाहिए। उनसे बल माँगना चाहिए। अपने बल से लड़ने जाएँगे, तो लड़ नहीं पाएँगे और जीत हासिल नहीं होगी। उनका बल लेंगे, तो वे हमें खुद राह दिखाएँगे और जीत भी हासिल कराएँगे। उन्हें हम जैसे चाहिए, वैसे हमें बनाएँगे...* ***पप्पाजी-काकाजी की स्मृति करना, उनके होकर रहना इसे हमारी जीवन यात्रा कही जाए। हमें ऐसा जीवन जीना है, ऐसी प्राप्ति करनी है कि हमारे अंतर में वे सदा निवास करके रहें।***

उन्हें बापा ने जिस हेतु पसंद किया था - कार्य सौंपा था, दोनों बापा के वफ़ादार बन के जिए। अब हम उनके वफ़ादार बन कर जिएँ। *हम सब के प्रत्येक पल के संकल्प, भाव और क्रिया वे जानते हैं... मैंने प्रत्यक्ष देखा है कि जब अटलादरा मंदिर बन रहा था, तब प.पू.शास्त्रीजी महाराज स्वयं ईंटें तोड़ते थे और उठाते भी थे। भले ही खूब साधारण साधु लगते थे, पर कितना भव्य कार्य कर ड़ाला! ऐसे ही बापा भी खूब साधारण लगते थे। शास्त्रीजी महाराज स्वधाम पधारे, तो सभी ऐसा कहते थे कि यह जोगी क्या करेगा? पर, झट् गढ़पुर में मूर्तियाँ पधरा कर अद्भुत कार्य किया। ऐसे* ***जोगीबापा ने मानो हमारे किस जन्म की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, हमें पप्पाजी, काकाजी और बा की भेंट दी। पूरा गुणातीत समाज पप्पा, काका और बा का ऋणी है।***

इस स्थान पर महाराज पधारे थे, तो कितना प्रसादी का स्थान है। परंतु, जिसके अंतर में स्वयं महाराज विराजमान हैं, जिनमें रह कर महाराज कार्य कर सकें, ऐसे स्वरूप तैयार किए। ऐसे काका और पप्पा की शताब्दी का अंतिम सोपान मनाया। अब हम सच में अपनी जीवनयात्रा माहात्म्य युक्त करें। उन्हीं का बल लें और वे बल ज़रूर देंगे। बस निःशंक होकर दृढ़ करें कि ***किसी का दोष देखना ही नहीं। सिर्फ भजन और स्मृति करें,*** *ऐसा हम सब सहज करते हो जाएँ–ऐसी उनके चरणों में प्रार्थना!*

तबियत के कारण **प.पू. देवी बहन** माईक पर ज़्यादा बात नहीं करती हैं, लेकिन शताब्दी के इस अंतिम सोपान

पर उन्हें इतनी उमंग थी कि उन्होंने खुद सामने से माईक माँग कर, हँसते-हँसाते हुए दो मिनिट आशिष वर्षा की– ***काकाजी - पप्पाजी ने कहा था हमें पृथ्वी पर स्वर्ग लाना है, तो आज वह स्वर्ग नीचे आ गया... अक्षरधाम रूप! आज किसी के मन में कोई विचार ही नहीं उठ रहा, बस 'अद्भुत काकाजी - अद्भुत पप्पाजी!' अद्भुत योगीजी महाराज!!*** *क्योंकि उन्होंने ऐसे दो भव्यातिभव्य सत्पुरुषों का जोग दिया। जिसको जिस स्वरूप की ज़रुरत थी, उसको उसी का जोग दे दिया। किसी को काकाजी का - किसी को पप्पाजी का।* ***आज किसी के भी मन में कोई भेदभाव रहा नहीं।*** *हमारे साहेब दादा, शांतिभाई-अश्विनभाई, फिर भरतभाई-वशीभाई, फिर अमेरिका वाले दिनकरभाई, फिर अक्षरविहारीस्वामीजी और हरिप्रसादस्वामीजी, (किसी ने बीच में कहा गुरुजी! तो प.पू. देवी बहन बोलीं) वह तो इस समाज में मुख्य!*

जैसे कि काकाजी-पप्पाजी ने कहा कि स्वर्ग उतारना है, तो आज सच में उतर गया है... घनश्यामभाई को तो हम बचपन से देखते हैं, उन्होंने यह सारा प्लान किया... ***बस इस सभा की स्मृति रोज़ करना, सभी स्वरुप यहाँ प्रगट हैं ही और बैठे-बैठे राज़ी होते हैं।*** *हम संप, सुहृदभाव और एकता से माहात्म्य में जीते हो जाएँ यही प्रार्थना।*

तदोपरांत सभी मुक्तों को गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की पोस्टल स्टेम्प शताब्दी की स्मृति भेंट के रूप में दी गई और... विडीयो द्वारा **गुरुहरि काकाजी** का आशीर्वाद प्राप्त किया –

...जोगी महाराज गए ही नहीं हैं, वे प्रगट हैं, हैं और हैं ही। शांतिभाई ने ज्ञानश्रुति के पहले पन्ने पर 9 बार लिखा है कि वे प्रगट हैं, हैं और हैं ही। महाराज गए ही नहीं हैं। दादाखाचर को पुनः दर्शन दिए। महाराज के स्वधामगमन होने के बाद, गुणातीतानंदस्वामी जब भी उनके वियोग से दुःखी हुए, तब-तब महाराज ने प्रगट होकर गुणातीतानंदस्वामी से कहा– मैं कहाँ गया हूँ? आप में मैं अखंड प्रगट रहा हूँ, अखंड प्रगट रहा हूँ, अखंड प्रगट रहा हूँ। वह वारसा पप्पाजी, काकाजी, स्वामिजी, बा, बेन, ज्योतिबेन, ताराबेन, हंसाबेन, देवी बेन, साहेब, हरिभाई साहेब, अक्षरविहारीस्वामीजी हम सब ने रखा है।

इतनी ऑथेन्टीक बात और कौन करेगा? *किसी ने कहा कि क्या आप प्रकृति पुरुष से पर का टेलीविज़न बताओगे? मैंने कहा–हाँ, मैंने देखा है। कौन इतनी ओथेन्टीक बात करेगा? प्रकृति पुरुष के पर की बात कौन करेगा?* ***अगर आपको निर्विकल्प निश्चय पक्का होगा कि मुझे मिले महाराज सर्वोपरि हैं, तो काल, कर्म, माया, प्रकृति, स्वभाव का क़ायदा दूसरों को लागू पड़ेगा, पर प्रहलाद् को नहीं। क्योंकि प्रहलाद् किसका था? प्रभु का था। प्रहलाद को प्रभु का खूब भरोसा था। आपको ऐसा भरोसा बापा का है?*** *पहला प्रश्न यह है। चौथे प्रकरण की 140वीं बात सिर्फ बोला करें, उसके बजाय साथ में एक कॉरोलरी लगाओ कि दूसरों को समझाने का जितना आग्रह है, वैसा खुद को समझने का हो। दूसरों के दोष देखने का स्वभाव है, तो प्रथम 16 के मुताबिक अंतर्दृष्टि करने से सारी कसर टल जाएगी।* ***तप, त्याग, योग, व्रत, दान करो, पर किसी से भी ईर्ष्या मत करना। दूसरों का देखा तो सब ख़तम, आपके मार्क्स माइनस में चले जाएँगे।*** *अगर बहुत हेत हो, खूब हेत हो तो आत्मबुद्धि और प्रीति के दावे से आप निर्देश कर सकते हो, पर उसका अपमान मत करो; वर्ना प्रभुसत्ता का आपने द्रोह किया, महाराज की सार्वभौम, सुप्रिमसी का आपने द्रोह किया। बिलकुल द्रोह कर रहे हैं;*

मैं भी करता था, तो आप की तो बात ही क्या? 24 लाख का क्रिमीनल केस होने पर बापा ने मुझसे कहा–हाथ हिलाते जाना। तब भी मैंने मेरी जड़ बुद्धि के आधार पर बापा की बात उस वक्त नहीं मानी। अनुभवी, साक्षात्कार वाला पुरुष! अक्षरधाम में जाकर वापिस आया हुआ रॉकेट। वो लक्ष्मण बापा को 20 साल की जेल हुई थी, पर निर्दोष! सभा में साक्षी सहित बात हो रही है।

तो, बड़े पुरुष जैसे हैं वैसे पहचाने नहीं जाएँगे। यह चर्मचक्षु से पहचाने जाएँगे, तो उनके समागम में रह नहीं पाएँगे। यदि रह पाए तो उनकी अनुवृति के मुताबिक बरत नहीं पाएँगे। बरत पाएँगे तो कहीं कुछ एक-दो आनी कसर रह जाएगी। वह गुणातीत निकालेगा। पप्पा कहते हैं डिस्टील्ड वॉटर, मैंने एक शब्द और कहा कि शुद्धता के साथ पवित्रता–दोनों चाहिए। एक नहीं, दोनों चाहिए। ये अवतार पुरुष हैं।

क्रीएटीव इन्टेलीजन्स कहो या और कुछ कहो यह भी एक प्रकार की अवेरनेस है। ***आप अवेरनेस से भी ऊपर जाओ तो वहाँ मौन है।*** *आध्यात्मिक मौन यानि दृष्टा–जहाँ भी देखो, वाह मेरे प्रभु ! वाह मेरे प्रभु ! वहां टोटल दृष्टि ही बदल जाए, लीला देखने के बाद का मौन है।*

अंत में वीडियो द्वारा **गुरुहरि पप्पाजी** से भी आशिष पाया–

गुणातीत समाज के चार अंग –संत, युवक, बहनें और गृहस्थ। ये चारों ब्रह्मनियंत्रित ही बरतते हैं। *भजन बहुत जबरदस्त बात है। एक-एक व्यक्ति जो हरिप्रसाद, काका, बा, साहेब, बेन, भाई, अश्विनभाई, शांतिभाई, सनतभाई, तारा बहन, ज्योति बहन, देवी बहन या जिससे भी जुड़ा हो, वह उसको वैसा ही ब्रह्मनियंत्रित माने।* ***आज का ब्रह्म सूत्र है कि सभी में निर्दोषबुद्धि! आध्यात्मिक समताभरी निर्दोषबुद्धि उसमें भी रखें और स्वरुप में भी रखें।*** *हम काका से जुड़े हैं और कोई हमें कितने ही अपशब्द कहे, तो मानना काकाजी मेरा ही दोष निकालने के लिए कह रहे हैं। ऐसी अंतर्दृष्टि करें।* ***अमेरिका में दिनकरभाई काका के होकर साधु जैसा जीवन जीते हैं। हम यहाँ ऐसे नहीं जीते होंगे...*** *दूर हो या पास इसका कोई मेल नहीं है। आप जहां भी हो, वहाँ* ***जो गुणातीत स्वरुप आपको मिला है, उसमें अपने मन और तन सहित निर्दोषबुद्धि रखो... ब्रह्मनियंत्रित ब्रह्मसमाज है।*** *आपको जो मिले हैं, वे ब्रह्मस्वरुप हैं यह मानते हो या केवल कहते ही हो? काका तो कई बार पूछते हैं कि आप बोलते हो, पर मानते हो? फिर रौफ से वे ही कहते कि नहीं मानते; वर्ना तो हम उनके जैसे बन ही जाएँ, उनके गुण हम में भी आने ही चाहिए।* ***महाराज कहते–जो मुझे कर्ता-हर्ता नहीं मानते, वे मेरा द्रोह करते हैं। सदा दिव्य साकार नहीं मानते, वे मेरा द्रोह करते हैं। एकांतिक द्वारा प्रगट हूँ, ऐसा मान कर वर्तना पड़ता है।*** *विचार, वाणी और वर्तन उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही हो। केवल आप राज़ी हों।*

सुबह संघध्यान के बाद माँग लेते हैं कि प्रभु! हम में कोई ताक़त नहीं है, आप ही बल देना। मैं तो कहता हूँ कि ***आध्यात्मिक समताभरी निर्दोषबुद्धि सब में रखो, जगत के जीव में भी रखो। जगत हमारे लिए तो है ही नहीं, हम और ठाकुर!*** *आपके बल से ही यह होने वाला है। गृहस्थ हो या त्यागी उसे जो मिले हैं, उनकी स्वधर्म युक्त सेवा... हमें जहाँ भी रखा है उनके होकर जीते हो जाएँ, मध्यबिंदु उन्हें रख कर जिएँ। हमारा जो भी कार्य कौशल्य हो, वह उनके लिए यूज करें, एक-दूसरे के प्रेरक बनें और अखंड चिदाकाश रुप रहते हो जाएँ यही आज की प्रार्थना और याचना।*

विसर्जन प्रार्थना के साथ महिला सम्मेलन के समापन के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

30 दिसंबर की सुबह पूर्णाहुति की सभा के लिए **आर्मी पाईप बैन्ड** की जोशीली ध्वनि के साथ गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तियों का 'सुहृदम्' में प्रवेश हुआ। सभी हर्ष से ऐसे झूम रहे थे कि हरिभक्त भाइयों ने प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई (पवई) एवं पू. घनश्यामभाई को गोद में उठा लिया। दूसरी ओर, मंच पर उपस्थित संतभगवंत प.पू. साहेबजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. प्रेमस्वामीजी, प.पू. भरतभाई अत्यंत आनंदित होकर दर्शन दे रहे थे... मूर्तियों को मंच पर विराजित करने के बाद समापन सभा के आरंभ में **पू. हेमंतभाई मोदी** ने महोत्सव का हेतु व्यक्त करते हुए, सभी की ओर से शताब्दी की प्रार्थना की और... **प.पू. भरतभाई** ने स्वागत उद्‌बोधन करते हुए कहा–

...चार दिन से हम सब अद्‌भुत आनंद कर रहे हैं। शताब्दी महोत्सव में दूर-दूर से आने वाले बहुत सारे भक्तों का स्वागत करते हैं। कितनी कठिनाई, मुश्किल, तकलीफ़ सहन करके यहाँ सब भक्त आए हैं! जो भी भक्त मिलते हैं, वे यही कहते हैं कि इतना आनंद आया है कि बात मत पूछो, इतनी सारी स्मृतियाँ ऐसी मिली हैं कि वो सारी इदम् हो गई हैं। तो सब भक्तों का स्वागत तो क्या करना, लेकिन सबका दर्शन करके बहुत-बहुत आनंद होता है। सबसे पहले मैं अक्षरविहारीस्वामीजी का खूब-खूब आभार मानता हूँ क्योंकि जब यह प्रस्ताव दिया कि यह मंदिर दोबारा बनाएँ, तो उन्होंने सहज स्वीकार कर लिया। इतना ही नहीं पूरा मंदिर केवल तीन दिन में खाली करवा दिया और जहाँ बहनें रहती थीं, वहाँ खुद चले गए। इसी प्रकार, बहनें अपनी जगह खाली करके छोटी-सी बिल्डिंग में रहने के लिए चली गईं। तो मैं उन्हें भी धन्यवाद करता हूँ।

इतने बड़े मंदिर का आज हमें जो दर्शन हो रहा है, भेंट में मिला है वो सब उनकी करुणा है। अक्षरविहारीस्वामीजी, खूब-खूब आशीर्वाद देना। मंदिर से सबको पॉज़ीटिव वाइब्रेशन्स मिलेगी। जितने लोग सहभागी हुए और होंगे, उन्हें बहुत सारा पुण्य मिलने वाला है। हमारे निर्मलस्वामीजी यहाँ पधारे हैं, उनका भी स्वागत है। ज्ञानस्वरूपस्वामीजी की तबियत के कारण तीन दिन से वे आ नहीं पाए थे... पू. गुरुजी पूरे मंडल को लेकर यहां पधारे हैं। दीदी पधारे हैं उन सबका हम स्वागत करते हैं। साहेबजी, अश्विन दादा, शांतिभाई साहेब और सभी संत भाई एवं पूरा अनुपम मिशन परिवार जिस भक्तिभाव से, अपनेपन से महोत्सव में जुड़े हैं, उसके लिए उनका कोई स्वागत करना या उनका धन्यवाद करना अलग बात है; ये अपना ही उत्सव है और अपने महोत्सव में सब आए हैं। इसी प्रकार, दिनकरभाई पूरे शिकागो मंडल के साथ, पेरिस से प्रवीणभाई वगैरह सब यहाँ आए हैं, उन सबका स्वागत करते हैं। हमारे दिलीपभाई भोजाणी और ये पंडाल में बैठे सबका स्वागत है। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की तबियत अच्छी नहीं होने के बावजूद और भावनगर में 7 तारीख को दूसरा उत्सव ही है, फिर भी प्रेमस्वरूपस्वामी, शास्त्रीस्वामी, हरिधाम के संतों ने यहाँ जो पूरा साथ दिया और तैयारी करने में सहाय रूप हुए हैं, उसके लिए उन्हें भी बहुत-बहुत धन्यवाद है। गुणातीत ज्योत की सभी बहनों और प्रकाश के भाइयों – ख़ास तो सूरत मंडल ने जो एग्ज़ीबीशन में मदद की है, उन सबका मैं स्वागत और धन्यवाद करता हूँ...

काकाजी-पप्पाजी शताब्दी महोत्सव हमने पूरे चार दिन मनाया। काकाजी-पप्पाजी की बातों में हम डूबे रहे और इतनी सारी बातें बार-बार सुनते रहे हैं। दो दिन पहले 8 साल का एक लड़का मिला था। मैंने उससे पूछा कि आपने महोत्सव में क्या समझा ? वह बोला – कुछ समझा, कुछ नहीं समझा। तब मुझे एक प्रसंग याद आया – रविन्द्रनाथ टॅगोर बचपन में बच्चों के साथ खेल रहे थे, उसमें से एक बच्चे ने चश्मा पहना था। उस समय में वो नई

बात थी। तो, रविन्द्रनाथ टॅगोर ने कौतुक से पूछा– चश्मा पहन कर क्यों आया है ? और उसका चश्मा खींच कर खुद पहन लिया। तो, उनको एकदम सरप्राइज़ हुआ कि मैं बहुत कुछ देख सकता हूँ, दूर तक देख सकता हूँ। मेरी दृष्टि से भी ज़्यादा दूर तक देख सकता हूँ। चश्मे में ऐसा प्रभाव है। उनको लगा कि मैं जो देखता हूँ, उससे कई ज़्यादा लोग दिखेंगे। लेकिन, मेरी दृष्टि के कारण मुझे वो दिखाई देता है।

यूँ, ऐसे स्वरूपों को जो दिखता है, वो अलग बात है और वे तो हमें दृष्टि देते हैं – वे हमें दिव्यता का चश्मा देते हैं, तभी हम सब मुक्तों को दिव्यदृष्टि से देख सकते हैं। सही बात यही है कि हम जो देखते हैं, वो बहुत अल्प है। भगवान का दर्शन करना, वे जैसे हैं उन्हें वैसे पहचानना वो बात बिलकुल अपने बस की है ही नहीं। हम कितनी भी विशाल दृष्टि करें, कितना भी दिव्यता से देखें, लेकिन हमारा वो प्रयास हमेशा ही अल्प रहेगा। ***काकाजी -पप्पाजी का माहात्म्य ऐसा ही है। हम कितना भी माहात्म्य गायेंगे, लेकिन वो अल्प ही रहने वाला है। वो पूर्ण होने वाला नहीं है। क्योंकि हमारी दृष्टि ही सीमित है।*** *सो, हम इन सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि हमें वो माहात्म्य समझने की दृष्टि दो, उसके लिए चश्मा दो, ताकि जैसा है वैसा हम माहात्म्य समझ पाएँ।*

योगीजी महाराज कहते थे– जब से शास्त्रीजी महाराज मिले हैं, तब से मैं एक ही प्रार्थना करता हूँ कि हे शास्त्रीजी महाराज! आपका स्वरूप जैसा है, वैसा मैं पहचान पाऊँ। काकाजी के पास हम सभी बैठे थे, तो काकाजी सबको बता रहे थे कि आपकी ये कसर है, आपकी ये कसर है... जब मैंने पूछा कि मेरी क्या कसर है ? तो काकाजी ने इतना ही कहा– महिमा समझने की कसर है। तो, माहात्म्य जैसा है वह समझना वो हाईएस्ट कक्षा है। ऐसा माहात्म्य हम समझें। ऐसा माहात्म्य व गुणातीत ज्ञान को समझने के लिए, सच्चे भक्त-सत्संगी और साधु बनने के लिए यहाँ आए हैं।

यहाँ आने के लिए तैयारी भी होनी चाहिए। क्या तैयारी होनी चाहिए ? काकाजी बहुत बार पूछते थे– 'आपको सही अर्थ में प्रभु को पाना है ? आपकी दृष्टि से स्त्री-पुरुषभाव चला गया है ? आपको स्वामीजी, पप्पाजी, साहेबजी और सब गुणातीत स्वरूप दिव्य लगते हैं, उनमें कभी भी मनुष्यभाव और मायिकभाव नहीं आ रहा है ? यह सब अपने आपको पूछो।'

...एक जगह टेलीग्राफिक ऑपरेटर का इंटरव्यू था। ऑपरेटर की बहुत सारी अर्जी आई और उसमें से स्क्रुटीनाईज़ करके 20-25 लोगों को बुलाया गया। जब इंटरव्यू के लिए सब इकट्ठे हुए, तो सब बुलावे की वेट कर रहे थे। इतने में एक केंडिडेट आकर बैठा और तुरंत ही किसी से कुछ पूछे बिना उस केबिन में चला गया। थोड़ी देर के बाद केबिन में से ऑफिसर बाहर आया और कहा कि आप सब जा सकते हैं, ये सेलेक्ट हो गया है। सबने कहा कि हमारा इंटरव्यू भी नहीं लिया और आप कहते हो कि जा सकते हो और आपने इसे सेलेक्ट भी कर लिया। आपने कुछ ब्राइब लिया है ? तो ऑफिसर बोला – ऐसा नहीं है। उसने समझाया कि आप 20 लोग कब से बैठे हैं और यहाँ एक बात लगातार टेलीग्राफिक लैंग्वेज में कही जा रही है कि इफ यू वॉन्ट जॉब, प्लीज़ कम इन, जॉब इज़ यॉर्स। लेकिन, आपको वो भाषा समझ में ही नहीं आती है। तो, आप यहाँ क्या जॉब करोगे ? ये पहला आदमी आया, जिसने वो सुना और तुरंत अंदर आया और उसको जॉब मिली। इसी प्रकार हमें गुरु राज्य में – स्वामिनारायण भगवान के राज्य में प्रवेश करना है, तो उनकी भाषा समझनी पड़ेगी।

हंसा दीदी, देवी बहन सभी बहनें दिव्य हैं। सब बहनों ने खूब मेहनत की है। हमारे पवई में भी सबने इतनी

मेहनत की कि बात मत पूछो। सबका धन्यवाद करके काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी, दिनकरभाई, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामीजी और ऐसे सभी गुणातीत स्वरूपों से मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप हमें ऐसा आशीर्वाद देना कि यहाँ जो लैंग्वेज है, जो गुणातीत ज्ञान की रीति है वो सच्चे अर्थ में हम समझें और दासत्व से-माहात्म्य से हमेशा हर पल हम जीवन जी पाएँ।

तत्पश्चात् गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की मूर्तियों को हार अर्पित करके आशीर्वाद लेने के बाद, प्रत्यक्ष स्वरूपों को शताब्दी निमित्त विशिष्ट हार अर्पण करके स्वागत किया गया। गुणातीत प्रकाश के वरिष्ठ **पू. विरेनभाई** ने शताब्दी वंदना की–

कब से फंक्शन की तैयारियाँ कर रहे थे और ये तीन दिन कहाँ चले गए पता ही नहीं चला, मानो समय थम गया! काकाजी और पप्पाजी का जिन्होंने स्पर्श पाया है, उनकी कृपा से (आध्यात्मिक) स्थिति प्राप्त करके जो सुखी हो गए हैं, ऐसे सभी संत, भक्त व बहनें आज इस भूमि पर एकत्र हुए हैं। हमें गुणातीतानंदस्वामीजी का प्रसंग पता है कि श्रीजी महाराज ने जिस दिन 500 परमहंस बनाए, उस रात को गुणातीतानंदस्वामी ने पूरी रात पीपलाणा गाँव की प्रदक्षिणा करी। वह इसलिए कि श्रीजी महाराज के वचन से जो भी साधु हुए, वे सभी एक साथ उस धरती पर मौजूद थे। वैसा ही लाभ आज हमें भी मिला है। ***काकाजी और पप्पाजी ने जिस समाज की रचना की और जिन्होंने अपना जीवन उन्हें समर्पित कर दिया, वह समाज आज यहाँ एकत्र हुआ है। काकाजी कहते थे– मुझे और पप्पाजी को अलग नहीं समझना।*** *तो, भरतभाई और वशीभाई उसी प्रकार जी रहे हैं।* ***काकाजी की लाक्षणिक अदा और धुन का ब्रह्मनाद आज भी कानों में गुंजता है।*** *कृपा के कारण हम सब खूब उनके जोग में आ गए। पीछे मुड़ कर जब देखते हैं, तो लगता है कि* ***इन सत्पुरुषों के संसर्ग और दृष्टि में आ गए, वही हमारा अहोभाग्य! काकाजी कहते थे कि किसी एकांतिक को खुश कर दो, तो आपका काम पूरा हो जाएगा।*** *सच, हमें कुछ करना ही नहीं पड़ा। केवल उनकी दृष्टि से ही सारा काम हो गया।*

एक बार पियुषभाई ने पप्पाजी से पूछा – आप ऐसे प्रसंग खड़े करते हैं कि सामने वाला व्यक्ति अपनी ही गरज़ से सेवा के लिए आ जाता है। ***तब पप्पाजी बोले– गरज़ भी किसे है? वो भी हमें ही है।*** *सो, भजन-प्रार्थना करके गरज़ भी उन्होंने जगाई है, हमारी तो कोई ताक़त नहीं थी। शास्त्रीजी महाराज ने स्थावर मंदिर बंधवाए, योगीजी महाराज ने जंगम मंदिर बनवाए...*

एक बार पप्पाजी से किसी ने पूछा– आपका अभिप्राय क्या? सहज ही उन्होंने कहा – बहनों की सेवा! सो, उस सेवा के प्रताप से उन्होंने हमें ग्रहण किया है। गुणातीत प्रकाश के सभी भाई पप्पाजी की कृपा से अपना अंतर भगवा बना रहे हैं... ***पप्पाजी ने 2006 में देहत्याग किया, पर आज भी वे प्रगट ही हैं, ऐसी अनुभूति करवा रहे हैं...*** *कल आनंदी दीदी ने भी बहुत अच्छी बात करी कि हमारे वाणी, विचार और वर्तन से सभी पूछने को मज़बूर हों कि हमारे गुरु कौन हैं! कल पू. देवी बेन भी खूब राज़ी हो गए, क्योंकि सारा फंक्शन संप, सुहृदभाव और एकता के आधार पर हुआ है। तो सभी स्वरुपों के चरणों में प्रार्थना कि आप राजी हों वैसे ही संप, सुहृदभाव, एकता से हम जिएँ।*

दिल्ली मंदिर की ओर से गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी को हार अर्पित करके, पू. वच्छराजजी एवं पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को एक स्मृति भेंट दी। विशेषता यह थी कि उसमें गुरुहरि काकाजी एवं गुरुहरि पप्पाजी के प्राकट्य दिन की संख्या वाली एक रुपये से लेकर दो सौ रुपये तक की नोट का

समावेश किया गया था। इसी प्रकार, प.पू. दिनकरभाई को भी गुरुहरि काकाजी के प्राकट्य दिन और उनके सॅलीब्रेशन्स के दिनाँकों को दर्शाती एक ऑल्बम दी।

तदोपरांत सांकरदा के **पू. स्नहेलस्वामीजी** ने माहात्म्यगान किया –

आज खूब आनंद का दिन है, हमें सभी स्वरुपों के आशीर्वाद मिले। इन स्वरुपों की स्मृति में डूबे रहेंगे, तो संप, सुहृदभाव और एकता अपने आप ही दृढ़ होता जाएगा... योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी की योजना थी कि हम जंगम तीर्थ - महामानव बनें। बापा कहते – मुझे कुछ नया करके दिखाना है। तब हमें कुछ ख्याल ही नहीं पड़ता था, सो बापा से पूछा तो उन्होंने बताया – मुझे आप सबको महंतस्वामी, भगतजी महाराज, जागास्वामी और शास्त्रीजी महाराज जैसा बनाना है। ऐसे ही आशीर्वाद काकाजी -पप्पाजी ने दिए थे। एक बार अक्षरविहारीस्वामीजी से हमने पूछा कि बापा ने सुनृत में जो लिखा है – 'अंत्य प्रकरण का 2 वचनामृत रात - दिन पढ़ते रहना' –उसका अर्थ क्या ? तब स्वामीजी ने अर्थ समझाया – जब भी बापा के पास जाओ, तब ऐसी भावना रख कर जाना कि ये पूर्ण पुरुषोत्तम का स्वरुप हैं। ऐसे भाव से हम वर्तेंगे और सेवा करेंगे, तो वे राज़ी होंगे।

एक बार जोगी महाराज को स्नान करवाते हुए, मैं प्रकरण 3 की 67 वीं बात याद कर रहा था कि सगुण -निर्गुण तो मूर्ति का अलौकिक ऐश्वर्य है और दोनों स्वरुपों को धारण किए हुए तो ये जोगी महाराज हैं। तभी योगी बापा ने अपने मुँह में भरा हुआ पानी मेरी ओर उड़ा कर स्मृति दी ! वह मेरे जीवन की धन्यतम घड़ी सच में अद्‌भुत और अवर्णनीय है। ***आज योगीजी महाराज ने अपने जैसे ही काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी की भेंट दी। उन्होंने हमें खूब संभाला और इस कक्षा पर ले आये।*** *स्वामीजी ने बहुत परिश्रम किया है... बापा ने अक्षरविहारीस्वामीजी को एटम बम (माला) दी थी। उन्होंने वह खूब फिराई और हमें आध्यात्मिक भूमिका में ले आये और अनुभव ज्ञान के लिए उन्होंने आशीर्वाद दिया कि ये सभी स्मृतियाँ तुम ईदम् कर लेना। ईदम् करके जो तुम माँगोगे, वह तुम्हें मिलेगा। तो, बंधुजोड़ी शताब्दी के पर्व पर आप सभी के चरणों में ऐसी प्रार्थना कि जैसे बापा कहते कि आज प्रार्थना करें, वो कल भूल न जाएँ। उसकी जुगाली करा करेंगे, तो माँगने पर ये स्वरुप ज़रूर देंगे ही।*

इसी दौरान प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी ने प्रवेश किया, सो हार अर्पण करके उनका स्वागत किया गया। पू. स्नेहलस्वामी की शताब्दी वंदना पूरी होने के बाद **प.पू. महेन्द्र बापु** ने अपने उद्‌गार कहे –

...'न भूतो न भविष्यति' ! ***काकाजी का ये सपना था कि हम सब संयुक्तभाव से जीवन जिएँ और आज इस उत्सव के रूप में वह मूर्त दिखता है। हर एक केन्द्र के संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों ने दिल से सेवा करके यह उत्सव मनाया है।*** *महसूस होता है कि प्रभु ने ही भक्तों में प्रवेश करके यह सब काम किया है। सब यहाँ से आनंदित होकर जा रहे हैं...*

काकाजी और पप्पाजी ने 100 साल तक हमारी बहुत हिफ़ाजत - रक्षा की है, बहुत प्यार दिया है और आज स्वामीजी भी इतना ही प्यार देते हैं। ऐसे ही गुणातीत स्वरूपों के द्वारा हम आगे बढ़ते हैं। अब हमारी सेकेंड लाइन ऑफ लीडरशिप की जिम्मेवारी बढ़ गई है। काकाजी ने 26 जनवरी, 1986 को मॅग्नाकार्टा रूप जो संदेश दिया था, वो इनका अंतिम व ऐतिहासिक प्रवचन था जब कहा था – आप सब कनिष्ठ मुक्त की कक्षा में हैं, आपको उससे आगे बढ़ना है। तो, आज महाराज कृपा करें... उस समय स्वामीजी ने कुछ बोला तो काकाजी ने बताया कि इवन पॉइंट नोट, नोट, नोट, नोट वन जितनी भी कसर गुणातीत स्वरुप में होगी, तो रॉकेट किसी और दिशा में चला जाएगा।

*कहने का मतलब यह था कि **हमें कितना भी मान-सम्मान मिले, लेकिन हमारी दृष्टि साधना की तरफ रहनी चाहिए...** स्वामीजी कहते हैं कि जब तक अक्षरब्रह्म का देह नहीं मिलता, तब तक हम ब्रह्म में प्रवेश नहीं कर सकते। 78 में काकाजी का 60वाँ प्रागट्य दिवस मनाया, तब वे बोले थे –*

'मेरा जन्मदिन मना रहे हो। आपने मेरा बहुत गुणगान गाया। पर, मैंने कुछ नहीं किया; जो भी कुछ किया वो मेरे प्रभु को राज़ी करने के लिए किया। फिर भी आपने मेरा सम्मान किया, तो मैं आपका अभिवादन करता हूँ और आज जो यहाँ अपना काम छोड़कर आए हैं, जिस-जिसने सेवा की है उन सबका अब तक का प्रारब्ध माफ़। आपका जो प्रारब्ध हो वो काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, बा हम सब बाँट लेंगे।'

*आज भी हम काकाजी-पप्पाजी का प्राकट्यदिन मना रहे हैं। आज भी हम सब यहाँ आए हैं और वैसे ही गुणातीत स्वरूप यहाँ प्रगट हैं, तो आज से ही हमको निश्चिंत बन जाना है। लेकिन, फिर नया प्रारब्ध खड़ा नहीं करना है। नया प्रारब्ध खड़ा न हो उसके लिए सेवा, स्मृति, स्वाध्याय, संत समागम, सत्कर्म और नाईट प्रेयर हमेशा करते रहना। इतना संकल्प करके जाना। नाईट प्रेयर इज़ एड्वांस प्रेयर फॉर टु-मॉरो। हम प्रभु की गोद में बैठे हुए हैं, तो कोई समस्या आने पर अंतर्दृष्टि करके प्रार्थना करना कि हे प्रभु! हमें वर्तमान में ही जीना है... धीस सत्संग इज़ नॉट एन आर्ट ऑफ लाईफ। बट् अवर सत्संग इज़ टु लिव! धेन वी विल बी एन्ज्योईंग धी फ्रूट ऑफ धिस सत्संग। हे महाराज! हे स्वामी! हे काकाजी! आपने अपने गुरु को राज़ी करने के लिए तो जीवन जी लिया। अभी आप हमको यहाँ तक लाये हैं, इतना मौका दिया, इतना सुगम सत्संग किया, तो हम भी कुछ जाग्रत होकर ऐसा जीवन जीएँ। यह अंतर्दृष्टि का जीवन है और इसी में दिव्य जीवन समाया है। **यदि अंतर्मुखी बनेंगे, तो हमें किसी का दोष नज़र नहीं आएगा।** काकाजी का सूत्र था–'वेरी डिफिकल्ट, बट वेरी इज़ी इफ वी लिव विथ अवेरनेस...।' स्वामीजी ने भी हमें सूत्र दिया है–'कोई आत्मीय बने कि न बने, मुझे आत्मीय बनना है।' ये सूत्र पहली बार न्यूजर्सी में डिक्लेर किया था, जब स्वामीजी ने काकाजी का जन्मदिन मनाया था। तब स्वामीजी ने कहा था ये तो पहली कक्षा का सूत्र दिया है। असली सूत्र तो यह है कि सभी आत्मीय हैं और मुझे आत्मीय बनना है। ऐसी दृष्टि, दिव्यता हमें देखनी है। आज स्वामीजी का पल-पल एक ही शब्द है, हठ, मान और ईर्ष्या के भाव को पकड़ो। इससे यदि परे होंगे, तभी संप, सुहृदभाव और एकता रहेगी। **काकाजी ने हमारी साधना सरल करने के लिए अच्छा सूत्र दिया – दो विरोध प्रकृति वालों के साथ पक्की दोस्ती रखोगे, तो आपकी अस्मिता का विसर्जन हो जाएगा...** भगत को आगे रखकर, भगवान में रह कर जितना जिएँगे, उतना पल-पल अनुभव होगा कि हमें इससे भी आगे जाना है – न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे – तू ही रहे और तेरी आरजू रहे। हे महाराज! हे स्वामी! ऐसा आशीर्वाद यहां मंचस्थ सभी स्वरूपों से प्रार्थना करके मांगता हूँ...*

तत्पश्चात् विभिन्न केन्द्रों के मुक्तों ने गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। सांकरदा के मंदिर का पुनः निर्माण और महोत्सव की कई सेवाओं में जिन मुक्तों ने योगदान दिया था, उनका भी हार अथवा स्मृति भेंट से अभिवादन करने के बाद **प.पू. निर्मलस्वामीजी** ने आशीर्वाद दिया–

स्वामिनारायण भगवान की दिव्य चेतना प्रगट गुरुहरि स्वामीजी और साहेबजी द्वारा प्रगट है... सांकरदा मंदिर की प्रतिष्ठा हुई, तब सालों पहले पप्पाजी ने कहा था – चार प्रकार के मंदिर होते हैं। एक तीर्थ का मंदिर, दूसरा गाँव का

27 दिसंबर 2018, प्रातः
गुणातीत स्वरूपों द्वारा 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' का मंगल प्रारंभ

27 दिसंबर 2018, सायं

आज हम जो आपस में एक-दूसरे की महिमा समझने लगे हैं,
उसके पीछे काकाजी-पप्पाजी का मार्गदर्शन है और सोनाबा का अद्भुत प्रेम है।

– प.पू. अश्विनभाई

1967-68 के वर्षों में पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने दिल्ली में प.पू. गुरुजी की जो सेवा की थी,
उसे प.पू. गुरुजी भूले नहीं...

28 दिसंबर 2018, प्रातः

काकाजी का ये सपना था कि हम सब संयुक्तभाव से जीवन जिएँ
और
आज इस उत्सव के रूप में वह मूर्त दिखता है।

– प.पू. महेन्द्र बापु

28 दिसंबर 2018, सायं

काकाजी-पप्पाजी ने हमारे जीवन में बहुत कुछ किया है,
जिसका हम शब्दों में वर्णन नहीं कर सकते; लेकिन उसकी अनुभूति करते हैं।

– संत भगवंत प.पू. साहेबजी

जिनके द्वारा हमने ज्ञान पाया, ऐसे अपने गुरु को समाज में ज़ाहिर करना,
उनका प्रचार करना बहुत बड़ी सेवा है... यह एक ऐतिहासिक फंक्शन है।

– प.पू. गुरुजी

28 दिसंबर 2018, सायं
पप्पाजी -काकाजी की स्मृति करना, उनके होकर रहना
यही हमारी जीवन यात्रा कही जाए।
– प.पू.हंसा दीदी

29 दिसंबर 2018, प्रातः

हम सभी को शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी जैसे सनातन दिव्य पुरुषों की बहुत शोभा बढ़ानी है।

– प.पू. स्वामीजी

29 दिसंबर 2018, सायं

आज किसी के भी मन में कोई भेदभाव रहा नहीं...

बस, अद्भुत काकाजी -अद्भुत पप्पाजी! अद्भुत योगीजी महाराज!!

–प.पू. देवी बहन

30 दिसंबर 2018, प्रातः
मैं हरिधाम का, मैं सांकरदा का, मैं विद्यानगर का...
यह जब भूलेंगे वही सुहृदभाव है।
– को.प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी

*मंदिर, तीसरा घर का मंदिर और चौथा देहरूपी मंदिर। तीर्थ के मंदिर की यानि – चार धाम की यात्रा शायद हम न कर पाएँ, पर गांव के मंदिर में तो जा सकते हैं। पप्पाजी ने इससे आगे कहा – शायद गाँव के मंदिर में दर्शन करने जाने से भी हम चूक सकते हैं, तो अपने घर में मंदिर बनाओ। कई बार जल्दी में घर के मंदिर का दर्शन करना भी भूल जाते हैं, तो पप्पाजी ने बताया चलता-फिरता देहरूपी मंदिर प्रभु ने दिया है, वह तो आप जहाँ भी जाओगे, आपके साथ ही रहने वाला है। हम सब दिव्य सभा में बैठे हैं। किसी ने एक बहुत अच्छी बात करी है कि जहाँ-जहाँ मेरी नज़र पहुँचे, वहाँ-वहाँ मेरे गुरुजी के दर्शन हो रहे हैं। यूँ सर्वत्र अपने गुरुजी का दर्शन हो, तब ही उत्सव मनाया गया कहा जाए। गीता के 11 वें श्लोक में कहा है कि जब कृष्ण ने द्रौपदी को अपना पीतांबर पहनाया, तब सभी को द्रौपदी में मुकुट और बांसुरी धारे हुए कृष्ण के दर्शन हुए और जब कृष्ण ने द्रौपदी के वस्त्र धारण करे, तो सभी को कृष्ण में द्रौपदी के दर्शन हुए। आज हमें सभी में अपने गुरुजी के दर्शन होने चाहिए। जो नीचे बैठे हुए हैं, उन्हें खूब-खूब धन्यवाद हैं। हम तो यहाँ खड़े रह कर कुछ भी बोल जाते हैं, लेकिन आप सब सुन रहे हो, तो आपको धन्यवाद है। आप सब तो परमहंस के समान हो... धारी वाले बाबा ने सबको हिला दिया। आज हम दर्शन कर सकते हैं कि योगीजी महाराज कैसे पुरुष थे! **गुणातीत समाज की जब स्थापना करनी थी, तब गोंडल में शास्त्रीजी महाराज के कमरे में योगीजी महाराज ने काकाजी और पप्पाजी को बुलाकर 6 संकल्प करवाये और कहा था कि हमें कोई प्रचार नहीं करना।** मेरे संकल्प से ऐसा समाज तैयार करो, जो मूर्ति के सुख से सुखी हो... धाम में जाने से पहले एक बार बापा ने मुझसे कहा – यह तो मृत्यलोक है, जोगी हमेशा रहने वाला नहीं है। तब मैंने उनसे पूछा था – बापा, फिर हमारा क्या होगा? बापा ने कहा था – सोखड़ा में हरिप्रसादस्वामी के पास जाना। बापा इशारा दे गए हैं कि स्वामीजी, साहेबजी द्वारा वे प्रगट ही हैं।*

*काकाजी-पप्पाजी ऐसा दिव्य समाज तैयार करके गए हैं। **हम जो यह उत्सव मना रहे हैं, उसका सारा आयोजन देख कर हृदय में बस गुण ही लेंगे कि उत्सव बहुत अच्छा हुआ, तो भी हमारे सारे काम हो जाएँगे।** काकाजी - पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब हमारे जीवन में हृदय की भक्ति प्रगटायें – यही प्रार्थना।*

गुरुहरि काकाजी जिन्हें **'साधुराम'** कहते थे, ऐसे **प.पू. अश्विनभाई** (मोगरी) ने आशिष देते हुए कहा – *हमारे समय के संत, साधक और भक्त खूब भाग्यशाली हैं कि उन्हें बापा, पप्पा और काका का प्रत्यक्ष प्रेम प्राप्त हुआ। **काकाजी-पप्पाजी और सोनाबा** ने मिलकर गुणातीत समाज की जो अद्भुत रचना की, वो ब्रह्मस्वरुप योगीजी महाराज के संकल्प का फल है। पप्पाजी के पास शाम की सभा में जब बैठते थे, तो पप्पाजी कहते – योगीजी महाराज का जो प्लान है, वो धीरे-धीरे अनफोल्ड होता रहेगा। उनको सब दिखता था और वे हमें बता रहे थे। **हम देह से साथ में रहें, मन से जुड़े हैं और वे हमारे दिल में आ बसे!** वह हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है। **आज हम जो आपस में एक-दूसरे की महिमा समझने लगे हैं, उसके पीछे काकाजी-पप्पाजी का मार्गदर्शन है और सोनाबा का अद्भुत प्रेम है।** उस समय में कांतिकाका और हरिभाई साहेब ने सर्मपण के जो अद्भुत पाठ पढ़ाए, उससे प्रेरणा लेकर **सत्संग में चार पंखुड़ी वाले ऐसे आदर्श समर्पित भक्तों सहित संतों, व्रतधारी साधकों, बहनों की अलग पहचान बापा के संकल्प से काकाजी और पप्पाजी ने दी।** आज हम आपस में जो एक-दूसरे को मान देते हैं - सम्मान करते हैं, महिमा समझते हैं, वह **संस्कार हमें काकाजी-पप्पाजी से मिले हैं।** योगी बापा ने **संबंधवालों की महिमा समझने का मूलभूत ज्ञान** जो सिखाया, **उसकी शुरुआत काकाजी-***

पप्पाजी ने हमें प्रॅक्टिस करवा के प्रॅक्टिकली एप्लीकेशन में लाना सिखाया। उन पुरुषों के साथ बिताया हुआ समय, उनकी मूर्ति की स्मृति ! तभी तो प्रदर्शन हॉल का अद्‌भुत नाम दिया है – व्हाला तारी स्मृतिना सहारे।

जब पप्पाजी सदैव के लिए वल्लभ विद्यानगर में निवास करने आए, तब उनकी उम्र 50 साल थी। काकाजी ने जब अक्षरपुरुषोत्तम के छात्रालय के कन्स्ट्रक्शन की जिम्मेदारी योगी बापा की आज्ञा से स्वीकारी और वल्लभ विद्यानगर के युवकों की जिम्मेदारी लेनी शुरु की, तब उनकी उम्र 47 साल की थी। 50 - 50 साल के उनके साथ बिताए वे दिन, वह सुहाना समय ! वे गुणातीत अस्मिता के धारक थे। **हम जिन्हें प्रगट गुणातीत सत्पुरुष कहते हैं, वे गुणातीत अस्मिता के धारक तो थे, बल्कि वाहक भी बने।** हम सभी के बीच गुणातीत समाज की अस्मिता, एकरुपता, सुहृदभाव और एकता की भावना का विकास संभव बना। उन्होंने हमारे लिए जो कुछ भी किया है, उसका जो ऋण है, उसके लिए हम कुछ भी नहीं कर पाएँगे, पर उनके साथ के संबंध - जुड़ाव से धन्यता का जो भाव है, वह हमेशा अपने हृदय में धारकर जियें! काकाजी की जो निष्ठा थी, उनका जो क़ैफ़ - मस्ती थी वह बेजोड़ थी। **1966 से काकाजी और पप्पाजी को बहुत करीब से देखा है कि वे सतत इसी भाव से जिये कि उनके कर्ता-हर्ता योगी महाराज है और यही भाव उन्होंने हम सब को भी जबरन् दृढ़ कराया। हमारी समझ और मान्यता अलग थी। हम अलग तरीके से उसका प्रतिभाव करते थे। पर, उनका प्रभाव - भाव ऐसा था कि मेरा जोगी ही सब कुछ कर रहा है; हमें आख़िर वही भाव हुआ ! हमें कोई और कुतर्क न हो, इसलिए उन्होंने सतत भजन करवाया।** कल ही हम स्मृति करते थे कि दादुकाका यानि धुन की मूर्ति। 'दो मिनट धुन कर लें' – कहकर कितने समय तक धुन करते रहते और अन्यों को भी साथ में जोड़े रखते; जिससे हम किसी भी प्रकार से कुतर्क न करें और खुद को जो मूर्ति मिली है उसमें रसबस रहें। **हम जब भी धुन करें, तब दादुकाका की वह 'धबड़क, धबड़क, धबड़क' घोड़े की गति से चलती धुन और उनके मुख में उछलती उस जीभ की स्मृति यदि धुन करते - करते हो जाए, तो भी हमारी धुन सफल हो जाती है।** और...

पप्पाजी की ध्यान मूर्ति ! दोनों की भाव समाधि - गुणातीत समाधि। उन्होंने खुद तो गुणातीत अस्मिता धारण करके जीकर दिखाया, पर साथ - साथ हमें योगीजी महाराज और उनके संबंध वाले भक्तों का माहात्म्य भी समझाया और वर्तमान में जो हमारे गुणातीत स्वरुप हैं, उनकी महिमा भी समझाई। **हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी, गुरुहरि साहेबजी सब एक ही समय में साथ ही थे, पर वे कुछ विशेष, महान, कृपापात्र और गुणातीत समाज के ज्योतिर्धर हैं, ऐसी महिमा भी हमारे हृदय में स्थापित करने के लिए काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा ने अपूर्व प्रेम का सिंचन किया है।**

आज उनकी जन्म शताब्दी पर उनके बारे क्या बात करें ? पर, **जब** इतनी धामधूम से **गुणातीत समाज की चारों पंखुडियाँ साथ में काम कर रही हैं, तो सुहृदभाव, दासत्वभाव सिद्ध करने की बात जो स्वामीजी सीखा रहे हैं, उसे नज़र में रख कर यत्किंचित सेवा में हम सब लग पड़े हैं - जुड़ गए हैं,** तब हम सबकी जिम्मेदारी बढ़ रही है। हमारी वाणी, विचार और जीवन व्यवहार द्वारा हमें मिले गुरुहरि की महिमा का विस्तार बढ़ाना, एक शिष्य - भक्त के नाते उनकी सुवास फैलाना हम सब का फर्ज़ बनता है।

1966 के समय में हमारा एक लेबल था या लेबल दिया गया था – 'दादुभाई वाले !' आज भी हम दादुभाई वाले के नाते अपने विचार, वाणी और व्यवहार द्वारा इस जन्म शताब्दी पर काकाजी - पप्पाजी

को संकल्प सहित अर्घ्य दें *कि हमारे जीवनव्यवहार द्वारा हमें हमारे समय में मिले ऐसे युगपुरुषों और योगी बापा ने जो अतिशय कृपा की, उस कृपा के ऋण स्वरुप हम मनमुखी न होकर, सतत गुरुमुखी बनकर, गुरु की प्रसन्नता के हेतु ही अपना शेष जीवन अर्पण कर सकें – ऐसी जन्म शताब्दी पर मंगल प्रार्थना।*

तदोपरांत गुणातीत समाज के शिरछत्र **प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी** ने आशिषवर्षा की –

समग्र गुणातीत समाज को बापा अद्‌भुत पुरुष देकर गए। काकाजी - पप्पाजी ने अद्‌भुत दर्शन कराया। ***बापा*** *खुद का नाम लेते नहीं थे। हमें गोंडल, सारंगपुर और गढडा में कहा था –* ***शास्त्रीजी महाराज को पहचानना हो, तो काकाजी - पप्पाजी का लाभ लेना।*** *सभी युवकों ने यह बात कई बार सुनी होगी।*

आप सबसे भी एक ही बात करनी है कि आज एक अद्‌भुत समाज में स्थान मिला है, तो ***हमारा परम पवित्र फर्ज़ है कि किसी भी संजोगों में ऐसे पुरुषों को कभी भी विवश न करें।*** *बापा ने काकाजी - पप्पाजी का नाम देकर कहा था – शास्त्रीजी महाराज की अद्‌भुत सेवा कर रहे हैं। महंतस्वामी, संस्था की अद्‌भुत सेवा कर रहे हैं। हमें उनके संबंध वालों के भी दास का दास बनना है। हम सब दास बन के जीने के लिए आए हैं। दंभ, दिखावा, प्रदर्शन करने के लिए हम नहीं आए। 'मैं' में रह कर जीने नहीं आए। गुणातीत पुरुषों के साथ जैसे - जैसे सरलता और मैत्री बढ़ती जाएगी, वैसे - वैसे हम में दासत्व और सरलता प्रगटेगी। जब तक हमारे भीतर सरलता और दासत्व नहीं प्रगटेगा, तब तक हमारे भीतर से हठ, मान, और ईर्ष्या नहीं जाएगी। हमारा यदि कोई दुश्मन है, तो हठ,मान और ईर्ष्या हैं। अपने इस स्वभाव को किसी भी प्रकार बाहर निकाल फेंकना है।*

काकाजी और पप्पाजी ने हमारे समाज के लिए खूब परिश्रम किया है, वो हम कभी भूलें नहीं। *काकाजी ने युवकों के लिए खूब परिश्रम किया है, पप्पाजी ने बहनों के लिए खूब परिश्रम किया है। इन दोनों पुरुषों का ऋण हम कभी अदा नहीं कर पाऐंगे। काकाजी जब भी अटलादरा, गोंडल, सारंगपुर, गढ़डा आते, सोते ही नहीं थे। वे युवकों के साथ गोष्ठि करते ही रहते और सब आनंद में आ जाते थे।* ***काकाजी-पप्पाजी के मिलने से ख्याल पड़ा कि योगीजी महाराज जैसे पुरुष कैसे राजी होंगे, गुणातीत पुरुषों के साथ संबंध कैसे दृढ़ होगा। इन दोनों पुरुषों का सेवन करने से हमें शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का सम्यक् दर्शन होता है,*** *जिसके फलस्वरुप संबंध दृढ़ हो जाए... सबको अद्‌भुत जोग मिला है। हमारा एक ही फर्ज़ है कि दास बनकर जिएँ।*

'दास का दास होकर, रहे जो सत्संग में, भक्ति उसकी नेक जानू मैं, नाचूँगा उसकी ताल में...'

इस सूत्र पर सोचना।

भगवान स्वामिनारायण ने एक – निजात्मानं ब्रह्मरुपं... और दूसरा – दास का दास होकर जो रहे सत्संग में... ये दो सूत्र दिए हैं। इन्हें पकड़ कर जीते हो जाओ - दौड़ो। काकाजी और पप्पाजी के परिश्रम को हम सब जानते हैं। किसी भी कीमत पर डूब जाना है, सरल हो जाना है। हठ, मान, ईर्ष्या और काम, क्रोध, लोभ ने हमें जकड़ा है। ये छः हमारे दुश्मन हैं। इन्हें दूर करने के लिए संतों का समागम और उनसे मैत्री अनिवार्य है। माँ जैसे संतों के द्वारा ही यह सिद्ध हो सकता है।

काकाजी - पप्पाजी ने हमारे लिए खूब परिश्रम उठाया है, इतनी बातें करी हैं, हमारे पीछे लगे ही रहे हैं, उनका परिश्रम सफल हो, उसके लिए अब हमें लग पड़ना है। *हमें बस इतना ही करना है, उठाव लेकर उन्हें राज़ी करना है। फलस्वरुप सरलता, दासत्व, भक्ति प्रगटेगी।* ***शून्य बनकर जियेंगे तो हठ, मान, ईर्ष्या***

की पूणाहुति हो जाएगी। *प्रभु की मूर्ति ही रहे। सभी स्वरुप हमें ऐसा बुद्धियोग दें कि आलस, प्रमाद बिलकुल न रहे, यह मौका न गँवायें – यही प्रार्थना।*

प.पू. स्वामीजी द्वारा आशिष प्रसाद प्राप्त करने के बाद, मंचस्थ सभी स्वरूपों एवं बहनों के विभाग में वडील बहनों द्वारा काटे गए शताब्दी के लोगो वाले **केक** के प्रसाद का वितरण हुआ। सांकरदा की पुण्य भूमि पर पुनःनिर्मित मंदिर के प्रति हर्ष व्यक्त करते हुए **दिल्ली मंदिर के युवकों ने भावनृत्य प्रस्तुत किया** और... फिर प.पू. स्वामीजी ने 'सुहृदम्' से प्रस्थान किया। एक वर्ष पूर्व जब **प.पू. ज्योति बहन** स्थूल देह से हाज़िर थीं, तभी उन्होंने बहनों से स्वयं सांकरदा मंदिर के श्री ठाकुरजी के लिए हार बनवाए थे। सो, गुणातीत प्रकाश के **पू. विजयभाई** ने वे हार **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** को अर्पण किए। तत्पश्चात् **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने आशीर्वाद प्रदान किया –

स्वामीजी ने कहा कि हम काकाजी - पप्पाजी का तो क्या ऋण अदा कर सकेंगे? उन पुरुषों ने हमारे लिए खूब परिश्रम उठाया है, जो हमने देखा है। ***बापा ने जब संत बनाए और कांदीवली में रखे, तब संतों के लिए काकाजी-पप्पाजी को एक कंधे पर थैला और हाथ में डिब्बा लेकर आते देखा है। संतों के लिए वे नाश्ता वगैरह लेकर आते। हमें होगा इसमें क्या? पर, हम स्वयं यदि ऐसा करके देखें, तो ख्याल आए।*** *इससे अधिक उन्होंने खूब अपमान सहा है। बापा की हाज़िरी में भी उनसे हिसाब मांगा जाता। यह इतिहास हम सब जानते हैं। इन पुरुषों ने कभी भी अपना बचाव नहीं किया है। वे हमें वर्तन से सिखा कर गए हैं और जिस समाज ने उनका विरोध किया, उनके साथ भी कभी सुहृदभाव का खंडन होने नहीं दिया – यह बहुत बड़ी बात है।*

आज सभी के चरणों में यह प्रार्थना करनी है कि जैसे स्वामीजी ने सूचन किया कि इन पुरुषों को कभी भी विवश न करें। इसका अर्थ मेरे लिए तो यही है कि ***हम सबका आपस में सुहृदभाव बना रहे।*** *मैं हरिधाम के संतों के साथ सुहृदभाव रखूँगा, पर वैसा ही सुहृदभाव शांतिभाई और अश्विनभाई के साथ, वैसा ही सुहृदभाव विज्ञानस्वामी और निष्कामस्वामी के साथ, वैसा ही सुहृदभाव मुझे भरतभाई और वशीभाई के साथ यदि रखना पड़े, तो मैं क्या सोचूँगा? क्या सच में रख पाऊँगा? शताब्दी के ऐसे उत्सव तो आएँगे और जाएँगे। यह तो हमारा सद्भाग्य है। धन्य हैं ये भाई कि जिन्होंने हमें सेवा देकर, हमें उनका ऋणी कर दिया है। हमें यहाँ सेवा का मौका दे दिया, वह बहुत बड़ी बात है। सेवा करके हमने कोई तीर नहीं मारा। सबने मिल कर यहाँ उत्सव मनाने का तै किया, हमें सेवा करने का मौका दिया, उनका ऋण क्या चुका सकेंगे?* ***काकाजी और पप्पाजी को समझना तो बहुत मुश्किल है। उनके सुहृदभाव को समझना बहुत मुश्किल है।*** *पर जैसे कि पहले मैंने कहा, सब एक-दूसरे के साथ वैसे सुहृदभाव से जिएँगे क्या?* ***मैं हरिधाम का, मैं सांकरदा का, मैं विद्यानगर का... यह जब भूलेंगे वही सुहृदभाव है। बाकी तो उत्सव आएँगे और जाएँगे।*** *हम मिलेंगे और बिछडेंगे। अच्छी बात है, पर गुणातीत पुरुष कभी भी बेवकूफ नहीं बनेंगे। बहुत अच्छी-अच्छी बातें करके पॉलिश लगाते रहे, इसका उन पर कोई असर होने वाला नहीं है। ये पुरुष अंतर पढ़ लेते हैं; सामान्य पुरुष नहीं हैं। योगीबापा कई बार कहते – तन की जाने, मन की जाने, जाने चित्त की चोरी! उसके आगे क्या छिपाएँ, जिसके हाथ में जीवन डोरी। योगी बापा जब यह बात करते, तो हमें लगता कि जनरल मास के लिए कर रहे हैं। पर, क्या हमने बापा को पहचाना है? ये पुरुष सच में पहचाने जाएँ वैसे नहीं हैं।*

काकाजी कहते – चरणो में शीश नामी, दीनता उच्चारिए। स्वामीजी ने आज दासत्व की कितनी सारी बातें करी। यदि सच में सुहृदभाव रखना है, तो मुझे अपने आप को शून्य बनाना पड़ेगा। सच में सुहृदभाव रखना हो, तो

प्रेमस्वरुप को मरना पड़ेगा, सब के आगे झुक कर बरतना पड़ेगा। यदि सच में सुहृदभाव रखना है, तो मोमबत्ती की तरह पिघल जाना पड़ेगा। ***इन पुरुषों के वचन से यदि पिघल कर जियेंगे, तो सुहृदभाव वे दृढ़ करवाएँगे।*** *हमसे तो सेंका हुआ पापड़ भी टूट नहीं सकता। मुझे और हम सबको सुरुचि रखनी है। भगवान स्वामिनारायण ने तो अपना मीष देकर वचनामृत में मुक्त का वर्णन किया है। यूँ इन पुरुषों का वर्णन तो हम कर ही नहीं सकते। पर, प्रार्थना कर सकते हैं कि हम जैसे भी हैं, प्रभु आपके ही हैं, हरेक पल और श्वास में आपका होकर ही जीना है। आपको जो पसंद हो वही करना है, अन्य हमें कुछ नहीं करना।*

योगीजी महाराज संप, सुहृदभाव और एकता का जो मिशन लेकर धरती पर आए हैं, उनका वचन काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, दिनकरभाई घर - घर पहुँचा रहे हैं। जैसे स्वामीजी ने कहा – हमारी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। इस समाज का संबंध मिला, इससे बड़ा कोई भाग्य नहीं है। ***यदि सच में सुख लेना हो, इन पुरुषों की प्रसन्नता प्राप्त करनी हो, तो मिट जाना पड़ेगा।*** *काकाजी कहते – जीकर मरें और मरकर जिएँ। पप्पाजी भी गुणातीतानंदस्वामी की बात करते – जीकर मरे यानि – खुद को पिघाल कर...* ***'हाँजी भला साधु' तो वे हैं।*** *इन पुरुषों ने योगीजी महाराज की कितनी शान बढ़ाई! बस* ***अब हमारा फर्ज़ है कि काकाजी - पप्पाजी और इन गुणातीत पुरुषों की हम शान बढ़ाएँ!*** *हम अपने ज्ञान, शिष्यवाद, मिल्कतवाद, समाजवाद में न जाएँ, बस आपका ही एक वाद रहे, सुहृदभाव से जीते हो जाएँ, ऐसे आशीर्वाद - बुद्धियोग देना, वही आपके श्री चरणों में प्रार्थना।*

जिन मुक्तों के सहयोग से महोत्सव के लिए भूमि मिली या अन्य विविध कार्य संपन्न हुए, उनका बहुमान करते हुए, उनके श्रेय के लिए **पू. निष्कामजीवनस्वामीजी** (गुरुजी , सांकरदा) ने स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना की और **प.पू. गुरुजी** ने आशिषवर्षा की –

प्रेमस्वरुपस्वामी, अश्विनभाई, बापु और सबने जो बातें करी, वे सारी हमने सुनीं। आज महंतस्वामी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी इतनी ऊँची कक्षा पर होने के बावजूद ये पुरुष कैसा जीवन जिये! आप जानते हो कि पहले अक्षरभुवन में काकाजी,पप्पाजी, स्वामीजी – सबकी बातें करने की बारी होती थी। एक बार महंतस्वामी बातें कर रहे थे, तब उन्होंने कहा कि अपना बचाव करना भी एक मान है। हम सब ने उनकी बातें सुनी थी। शाम को करीब 4 बजे कुछ मिटिंग हुई होगी; जैसे कि सब ने बात करी तो काकाजी - पप्पाजी पर आक्षेप लगे थे कि संस्था के पैसे खा गए हैं, ऐसा है - वैसा है। बहनों की गुणातीत ज्योत बनाना है, इसलिए पैसे निकाल लिये हैं। किसी ने पप्पाजी से कहा – आप तो रोज़ का हिसाब रोज़ लिख लेते हो, पेन डाउन करते हो, तो आप किताब लाकर दिखा दो न! और उनसे कह दो कि यह हिसाब है, देख लो कहाँ खोट है और पैसा कहाँ गया है। हक़ीक़त यह थी कि अक्षरभुवन के नीचे के फ्लोर पर सोल्डर नाम का एक अंग्रेज़ रहता था। उसको मकान खाली करने के लिए कहा था। उसे उसी की पसंद का एक फ्लॅट देना था। काकाजी ने तब बताया था कि उसे कम से कम 8 फ्लॅट दिखाये होंगे, पर वह मानने को तैयार ही नहीं हो रहा था। बाद में कुछ समझौता हुआ होगा और उसे 60-70,000 देने का तै हुआ था। उस एकाउंट का सारा आक्षेप चल रहा था। तो, सबने कहा कि इस बारे में ट्रस्टियों को तो पता ही है, तो आप उन्हें यह बात समझा दो। पप्पाजी बोले – सुबह महंतस्वामी ने क्या बातें करी थी? ***'बचाव करना वह भी मान है।'*** *हम सब सोच में पड़ गए कि पप्पाजी ने यह क्या बात करी! हमें मन में हुआ कि बातें तो हम भी सुनते हैं, पर ऐसा अगर हमारे साथ हो, तो हम तो तुरंत कह ही दें कि मेरी चोरी है ही नहीं और यह उसका सबूत है। यह तो इतना*

बड़ा आक्षेप था और तब भी पप्पाजी ने ऐसा कहा– बचाव करना भी मान है। ***सब सहन करते रहना वह कोई बिलकुल अलग ही कक्षा है।*** *अभी सब बात कर रहे थे कि हमने ये बातें सुनी हैं, इन पुरुषों को देखा भी है। पर, हमने उन्हें अपनी दृष्टि से देखा है, लेकिन उन्हें उन्हीं की दृष्टि से - दिव्यदृष्टि से देखें।*

एक बार काकाजी ने मुझसे पूछा था– तुमने बापा को देखा है? यह प्रश्न भी विचार करने योग्य है कि उन्हें देखने की दृष्टि अलग होनी चाहिए थी। काकाजी के पूछने का तात्पर्य यह था कि बापा को तत्त्व से देखा था? तत्त्व से पहचाना है? हम बोलते तो हैं कि कर्ता हर्ता वे ही हैं, पर जब मुक्त कुछ बे-ढंगे तरीके से बरतते हों, तब हम वह मान नहीं सकेंगे। एक बार ब्रह्मज्योति पर मैंने पप्पाजी से कुछ ऐसी बात करी, तो वे एकदम बोले– तूने काका को धारा है? यह सुनने के बाद तो मुझे कुछ बोलना बाकी ही नहीं था। पर, मैं सोच में चला गया कि उन्होंने यह क्या बात करी? अभी भी ऐसी कोई कसर रह गई होगी और बापा के सिवा अन्य कोई कर्ता माना जाता होगा। एक बार पप्पाजी से मैंने किसी के बारे में कहा कि उसका स्वभाव ही ऐसा है। तब उन्होंने मुझे फट् कहा– बापा से ज़्यादा उसका स्वभाव बलिष्ठ हो गया न? तो, उसकी पूजा कर। बापा की मूर्ति क्यों रखता है?

ये पुरुष पल-पल ऐसा जिये हैं, तो हमें मार्गदर्शन दिया है। अपनी जड़ता कैसी है कि वह मार्गदर्शन हम पकड़ते हैं, पर छोड़ भी देते हैं। *आज शताब्दी पर सब बात कर रहे थे, तो मैं यही सोच रहा था कि जिस दृष्टि से स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी ने योगीजी महाराज का दर्शन किया, उस दृष्टि से क्या मैंने काका और पप्पा को देखा? हम सब जो काका और पप्पा के साथ जुड़े हुए पुराने जोगी कहे जाते हैं, वे आज सोचें।* ***आज का दिन अंतःर्दृष्टि करने का है कि यहाँ जो ये बातें हुईं, इन मुक्तों ने जो हमें बातें करीं, वैसे हम सच में 100 परसेन्ट क्या इन पुरुषों के प्रति वैसे वफादार होकर जिये? कितनी चालाकियाँ करी? कितनी मन की चोरियाँ रखी हैं? कितनी बातें छुपाईं? उसके बावजूद हमारा हक़दावा यह रहा है कि हम तो काकाजी के– पप्पाजी के हैं। बस यह एक ही विचार अपने भीतर में पूछें कि क्या सच में हम काकाजी - पप्पाजी के बने हैं? उसका जवाब यदि 'हाँ' आए, तो सच में मानना कि हम यह शताब्दी मनाने योग्य हैं। वर्ना तो बीच में अहं का कोई देवता आकर, उत्सव का हमारा सारा मुनाफ़ा लूट लेगा और हम कोरे के कोरे ही रह जाएँगे।*** *ऐसा न बने इस हेतु स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी हमें आशीर्वाद और एक नई दृष्टि बख़्शिश दें। हमारे प्रयास से वह आयेगी ही नहीं। हम सोचें कि हम भजन करके ऐसे बन जाएँ। पर, भजन करके हमें उनके पास ही माँगना पड़ेगा कि हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे स्वामीजी, हे साहेबजी जिस समझदारी से आप हमें पल-पल वरताना चाहते हैं, वैसा हो जाए।*

वह समझदारी क्या कि भीतर में पल-पल उनका स्मरण करके काम करते जाएँगे, तो वे रक्षा करते रहेंगे। यह एक आदत बना लें, जिसे पप्पाजी कहते कि ***हम 'योगी कॉन्सियसनेस' में रहें। हम 'ब्राह्मीक कॉन्सियसनेस' में रहें।*** *काकाजी मुझसे पूछते कि बापा की कॉन्सियसनेस में चौबीस घंटे रहते हो? उनका कहना यह था कि मुझे याद करके हर काम करते हो? पर, हम भूल जाते हैं। वो न हो– यह आज के दिन ऐसी बख़्शिश मिले, ऐसी स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी और सभी स्वरुप हम पर मेहर करें– यह प्रार्थना।*

प.पू. दिनकरभाई ने तो संक्षिप्त आशिष से मानो शताब्दी महोत्सव का सार बता दिया–

आज सब बहुत तप कर रहे हैं। इतने घंटे से एक आसन पर बैठ कर तप किया है, तो सब आसनसिद्ध हो गए हैं।

भरतभाई की एक भावना थी कि ज्ञानस्वरूपस्वामीजी की तबियत अच्छी नहीं है। विज्ञानस्वामीजी की तबियत का भी समाचार सुना और ऐसे कितने हरिभक्त हैं, जो आना चाहते थे लेकिन तबियत के कारण आ नहीं पाए। हम यहाँ छः हज़ार हरिभक्त हैं, यदि हम उनके लिए धुन करेंगे तो 2000 मिनिट की धुन होने से 18,000 माला हो जाएगी। दो मिनिट की बजाय तीन मिनिट की धुन कहता हूँ। काकाजी और पप्पाजी ने मिल कर तीन मिनिट की धुन कही है। तो, धुन करते हैं... (धुन के बाद) सबसे बड़ी बात यही है कि ***काकाजी-पप्पाजी की जोड़ी है, वह हमारा आदर्श है।*** *तो, आज आप सब बैठे हैं, तो एक-दूसरे की जोड़ बना कर, एक-दूसरे में काकाजी-पप्पाजी का दर्शन करके गले लग जाओ–वही मेरी प्रार्थना है।*

तत्पश्चात् संतभगवंत **प.पू. साहेबजी** ने आशीर्दान दिया–

...चार दिन के अद्‌भुत समैया की आज पूर्णाहुति हो रही है। सबको मालूम है कि जब दरियाई रास्ता नहीं था, हवाई मार्ग भी नहीं चलता था और भूमि के रास्ते भारत आना पड़ता, तो वाया ख़ैबरघाट ही आना पड़ता था। इसी तरह खेड़ा जिला में से सोखड़ा जाना हो, तो सांकरदा होकर ही जाना पड़ता था। इसलिए शास्त्रीजी महाराज ने ***सांकरदा*** *को 'ख़ैबरघाट' कह कर नवाज़ा। सोखड़ा, सांकरदा, बड़ौदा का एरिया अटलादरा मंदिर के अधिकार में आता है। तो जो भी धर्मादा आता, वह अटलादरा मंदिर में अवश्य ही पहुँचता था। लेकिन, योगीजी महाराज कहते थे कि सोखड़ा, सांकरदा और वासना से जो धर्मादा आता है, वह मैं गोंडल ले जाऊँगा। क्योंकि ये तीनों गाँव शास्त्रीजी महाराज ने मुझे नज़राने में दिए हैं। ये मेरे गाँव हैं... हम जानते हैं जब हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी के साथ संतों को संस्था से निकाला गया, तो पहले वे ताड़देव और जन्माष्टमी बिल्डिंग पहुँचे। हम काकाजी-पप्पाजी के सान्निध्य में विद्यानगर थे। वहाँ फोन आया कि ऐसा हुआ है और सब संत ताड़देव और जन्माष्टमी पहुँचे थे। सब को हरिप्रसादस्वामी के प्रति खूब भाव था, यह काकाजी भी जानते थे। सो, काकाजी बोले–कल हम सोखड़ा में मिटिंग रखेंगे। सो, अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई वगैरह गए और वहाँ के जो बड़े थे, उन्हें भी मंदिर में बुलाया। हम सभी पहुँचे और काकाजी ने प्रवचन किया। हम जानते हैं कि काकाजी बापा और संतों की इतनी महिमा गाते थे। उन्होंने कहा कि सब संत योगीजी महाराज के बनाए हुए हैं, वे बापा के लड़के हैं। अब संस्था ने निकाल दिया है, उन्हें कहाँ रखेंगे? ऐसा कह कर काकाजी सभा में फूट-फूट कर रो पड़े थे। सामने सोखड़ा के पटेल लोग बैठे थे, मेरे कुटुंबी जन थे। सबने कहा कि इस मंदिर में रहो, इधर हम सेवा करेंगे। काकाजी खूब विचक्षण, खूब दूर का देखने वाले और सब जानते थे कि क्या घटना बनी है। तो, काकाजी ने कहा– संत लोग रहने के लिए आ जाएँगे और आप भले सेवा भी करेंगे। लेकिन, यदि संस्था से दबाव आएगा या प्रमुखस्वामी खुद कहेंगे कि आप संतों को इधर से निकाल दो, तो? तब सब गाँव वालों ने बताया–देखो, ये मंदिर योगीजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज ने बनवाया है, लेकिन यह संस्था का मंदिर नहीं है, गाँव का मंदिर है। इसलिए हम पर दबाव नहीं डाल सकते। सो, हम संतों को किसी भी संजोगों में यहीं रखेंगे। सबने काकाजी को ऐसा वचन दिया। फिर काकाजी ने हरिप्रसादस्वामीजी और संतों को फोन करके कहा कि आप यहाँ आ जाओ। यूँ, सब सोखड़ा में आ गए।*

आप सब आए हो, तो टाइम मिलने पर सोखड़ा गाँव के उस मंदिर का दर्शन करना। वह स्वयं शास्त्रीजी महाराज ने यज्ञ करके योगीजी महाराज द्वारा बनवाया है। ***इतने छोटे मंदिर में 40 संत रहते थे। एक ही टायलेट था और कूएँ से पानी निकाल कर स्नान करना पड़ता था।*** *ये गुरुजी तो पहले से कभी गाँव में रहे ही नहीं थे। उस*

समय जून के महीने में इतनी ज्यादा गर्मी होती थी। मुंबई में रहने वालों को ज़्यादा गर्मी लगती है। ऐसी स्थिति में भी वे रहे। फिर जून-जुलाई में बरसात पड़ी, तो कच्चे रास्ते के कारण एसटी बसों का आना-जाना बंद हो जाता था। पैदल चल कर जाना पड़ता था। योगीजी महाराज ने गुरुजी और संतों को संस्कृत पढ़ने की आज्ञा की थी। इनके गुरुजी – पू. जयनारायण पाठकजी बड़ौदा से आते थे, वे बरसात के कारण नहीं आ सकते थे। तब काकाजी ने कहा – संस्कृत तो पढ़नी ही है, क्योंकि योगीजी महाराज की आज्ञा में तो रहना ही है। फिर काकाजी ने सांकरदा को पसंद किया और विचार किया कि जो संस्कृत पढ़ते हैं, उन्हें सांकरदा रखा जाए। सांकरदा मेईन रोड पर होने के कारण वहाँ बस आती-जाती थी। सांकरदा मेरा ननिहाल है। सो, उन्होंने मेरे सभी संबंधियों (मामाओं) की एक मिटिंग गाँव के मंदिर में की। सोखड़ा की तरह उन्हें भी काकाजी ने बात की। वैसे सांकरदा वरताल से ज़्यादा जुड़ा हुआ है, लेकिन शास्त्रीजी महाराज के लगाव और प्रेम से वहाँ के गाँव वालों ने कहा कि वैसे यह वरताल का मंदिर है, लेकिन गाँव का स्वतंत्र मंदिर है। इसलिए वरताल वाले हमें कह नहीं सकते कि संतों को यहाँ से निकाल दो। संतों को यहाँ रख सकते हैं। इस तरह जिसे –

* ***शास्त्रीजी महाराज*** *ने ख़ैबरघाट की उपाधि दी,*
* ***योगीजी महाराज*** *ने सोखड़ा, सांकरदा और वासना को भेंट में माना और*
* ***काकाजी*** *ने गुजरात में संतों के रहने के लिए जिसे स्पेश्यल पसंद किया,*

ऐसे सांकरदा महातीर्थ स्थान में काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी की शताब्दी की पूर्णाहुति चल रही है। तो हम खूब भाग्यशाली हैं कि इन दिव्य पुरुषों ने जो कार्य किया है, उसका तो कितने भी उत्सव मना कर या किसी भी प्रकार से वर्णन नहीं कर सकते। बस, कुछ भक्ति अदा करने के लिए सभी एकत्र हुए हैं।

हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी के आशीर्वाद से, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई इन सभी ने जो परिश्रम किया है। गुणातीत ज्योत की संत बहनों-भक्तों, अनुपम मिशन के संतों-भक्तों एवं सभी विभाग में सेवा करने वाले मुक्त तो शायद ही किसी सभा में आए होंगे। सच, सबसे बड़ा पुण्य तो इन्हें मिलने वाला है। घबराना मत, आप सब का पुण्य भी कम नहीं होने वाला... ***काकाजी ने जिनकी स्थापना की, उन सभी केन्द्रों के भक्त यहाँ सेवा के प्रत्येक विभाग में लगे हुए हैं। अक्षररूप होने का मार्ग जिन्होंने खूब सरल और आनंददायक बनाया है, ऐसे दिव्य पुरुषों का ऋण अदा करने के लिए, जी हज़ूरी करने के लिए सभी केन्द्रों के भाई व बहनों ने उत्सव में उपस्थिति दी है।*** *स्वयंसेवकों ने अद्भुत सेवा की है।*

विशेष तो ***घनश्याम*** *को खूब अभिनंदन! सच्चा सम्मान तो उसका करना चाहिए कि भरतभाई-वशीभाई की आज्ञा से खराब तबियत में भी उसने काम किया है। यूनीक बेटा है। कांतिकाका, ललिताबा ने जन्म दिया। बा की गोद में बड़ा हुआ है। सारा परिवार बापा, काका, पप्पा के लिए याहोम हो गया। इसे दीदी, ज्योति बहन, देवी बहन का जो प्रेम मिला, उससे यह बड़ा हुआ है। हमारे व्रतधारी भाइयों को जब व्रत देने का निर्णय ले रहे थे, तब घनश्याम भी व्रत लेने वाला था। पर, काकाजी ने वीटो इस्तेमाल किया कि याद रखना! मेरी बात सुनो, घनश्याम को तुम दीक्षा देने वाले हो, पर मैं घनश्याम की शादी कराने वाला हूँ... जब उसकी शादी का पक्का हुआ तो दीदी वगैरह ने इला लड़की भी ऐसी दी कि जिसने सौ प्रतिशत इस कार्य में साथ दिया। सच में इसने रात-दिन देखे बिना बहुत सेवा की है...*

*संपूर्ण गुरुमुखी है, मनमुखी नहीं है। भरतभाई, वशीभाई की जो भी आज्ञा होती है वह पूरी करते हैं और फिर शांतिभाई और अश्विनभाई की भी बहुत हूँफ है। इसलिए ज्योत, अनुपम मिशन, हरिधाम, योगी डिवाईन सोसाईटी-सभी के प्रति हृदय से भाव है। **काकाजी के कहे मुताब़िक सर्वदेशीयता, निर्दोषभाव का मूर्तिमान स्वरूप घनश्याम है।** इस बेटे को जितना धन्यवाद दें, उतना कम है। उसे कोई बुलाए न बुलाए, पूछे के न पूछे, उसे संभाले या न संभाले, यह सब गिने बिना भरतभाई-वशीभाई की आज्ञा के अनुरूप भक्ति अदा की है। यूँ सभी के साथ-सहकार से निर्दोषभाव युक्त भक्ति करने वाले भक्तों के कारण यह उत्सव मनाने का अद्‌भुत आनंद आया। उत्सव में आनंद आए, उसका कारण **गुरुजी ने** जैसे **बताया कि भगवान यहाँ प्रगट हैं। जहाँ संप, सुहृदभाव, एकता हो, मिलजुल कर कार्य करने की भावना हो, एक-दूसरे को मान देने की, एक-दूसरे की महिमा गाने की जहाँ भावना हो, वहाँ भगवान स्वयं कहते हैं कि मैं प्रगट हूँ, हूँ और हूँ।** प्रगटीकरण की ऐसी अनुभूति यहाँ आए हुए सभी को हो...*

*ये चार दिनों में हमें अनंत प्रकार की स्मृतियाँ मिली हैं, परावाणी रूप आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। दर्शन का अद्‌भुत मौका प्राप्त हुआ है। मिलजुल कर उत्सव मनाने का लाभ मिला है। इन सभी स्मृतियों का निरंतर स्मरण करते रहें... **काकाजी-पप्पाजी के सिद्धांतों पर यदि चलें, तो उन्हें माना कहा जाए।** पप्पाजी ने जो हमें संबंध वाले की महिमा समझाई कि संबंध वाला कैसा भी हो... देह को मत देखो, प्रभु के भाव से देखो। पप्पाजी स्वयं ऐसा वर्ते, तो उनका दर्शन करने से अपने आप प्रभाव पड़ा है कि कोई अद्‌भुत विभूति है... काकाजी निर्दोषबुद्धि के राजा! हमने काकाजी का अपमान होते देखा है, उन्हें गालियाँ देते थे। तब भी काकाजी उन्हें प्रेम से लगाते, उन्हें भोजन कराते। वह आश्चर्यकारक बात थी। मन, बुद्धि, अहंकार की भूमिका से परे तुम जीवन जीओ, तभी यह संभव है। भले आप गले मिलो, लेकिन मुँह तो चढ़ा हुआ ही होता है... कुछ बना ही न हो, ऐसे भाव से काकाजी जिये... उनके कारण हमें योगीजी महाराज का दिव्य स्वरूप में दर्शन हुआ। अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना हमारे हृदय में स्थापित की। गुणातीत होने की अद्‌भुत साधना हमारे लिए आनंददायक बनाई, ऐसे दिव्य पुरुषों की शताब्दी मनाने के लिए हम एकत्र हुए हैं... जो-जो उपस्थित हुए हैं, जिन-जिन्होंने हाज़िरी दी है, साथ दिया है, हूँफ और बल दिया है, इस उत्सव को सफल बनाने में जो हाज़िर रहे हैं, उनमें रही भक्ति पूर्णतः खिले, निर्दोषभाव-दिव्यभाव भी खूब बढ़े। संबंध की महिमा समझ कर, सभी को प्रभु का स्वरूप मान कर सेवा-भक्ति का मौका प्राप्त करके, प्रभु की प्रसन्नता का पात्र बन कर, काकाजी-पप्पाजी के कहे अनुसार जीतेजी अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद प्राप्त करने का यह मार्ग है। देह मंदिर बन जाए और हम सभी को चलते-फिरते जंगम मंदिर बनाने का मौका मिल रहा है, तो वह चूक न जाएँ ऐसे जाग्रत बनें...*

पश्चात् जिनकी शताब्दी मनाने के लिए सभी एकत्र हुए थे, तो उनके आशीर्वाद से कैसे वंचित रहते! अतः विडीयो द्वारा प्रथम **गुरुहरि पप्पाजी** के दर्शन के साथ आशीर्वाद प्राप्त किया –

*मेरे एक मित्र मेघाणी, जोगीबापा से पूछने गए कि **सोखड़ा व सांकरदा में रहते हुए जो संत व बहनें** भगवान भजती हैं, उन्हें घर वापिस भेज देना है? योगीबापा ने कहा–नहीं, **उन सभी को संभालना है। वे मेरे चालीस साल के संकल्प का फल हैं।** तो, बापा के संकल्प का विजयदिन मना रहे हैं। काकाजी, बा, कांतिकाका का कुटुंब निमित्त बना... भव्यातिभव्य-कल्पना से परे स्वरूप पृथ्वी पर प्रगट हुआ और सबसे बड़ी बात यह हुई कि हमें*

उनका संबंध हुआ, लेकिन पहचाना नहीं। पर, सबसे बड़ा कैफ़ और मस्ती यह है कि जोगी महाराज ने हमें अपना माना। वर्ना उन्हें तो अपना काम करना ही था, पर उन्होंने हमें अपना माना वो बहुत बड़ी बात हो गई ! साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम मिले थे। पूर्णता का आनंद नहीं, लेकिन वे पूर्ण थे – उन्हें पहचाना और उन्होंने हमें ग्रहण किया ! वे जब थे, तब भी वे हमारा काम करते थे और अब स्थूल रूप से नहीं हैं फिर भी अपना काम करने वाले हैं। ***उन्होंने हमें जो सौंपा है, वह करना है। उसी से अक्षरधाम की समाधि का सुख प्राप्त होता है...*** *हमारे संत, युवक, बहनें प्रभु का कार्य कर रहे हैं। जोगी महाराज की कृपा के बिना वो संभव नहीं है। बड़े पुरुष के आशीर्वाद तो फलते ही हैं।* ***जो-जो जहाँ जिस स्वरूप या संत से जुड़ा हुआ है, वहाँ उनकी आज्ञा में रह कर अहंता, ममतारहित होकर डिस्टिल्ड वॉटर बन जाये यही प्रार्थना और आशीर्वाद !***

तत्पश्चात् **गुरुहरि काकाजी** के दर्शन एवं आशीर्वाद पाया–

निष्ठा में सूतभर भी फ़रक़ होगा, तो सभी को बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। तुम जिसे मानते हो, उसे एकांतिक जानो। मुफ़्त में विरासत मिली है। ***बालक – अज्ञानी बन कर, गद्गद् कंठ से प्रार्थना करो।*** *वच. सारंगपुर 10, गढडा मध्य 62 के मुताबिक जाग्रत रहेंगे, तो गुण हावी नहीं होगा। अभाव की बातें करनी या सुननी नहीं। पप्पाजी के कहे अनुसार आध्यात्मिक समताभरी निर्दोषबुद्धि सभी रखेंगे, तो आज ही आत्यंतिक कल्याण हो सकेगा। यह बात जीव में बिठानी है। बापा कहते – 60 गुणातीत स्वरूप बन सकते हैं। मैं कहता हूँ कि सभी बन सकते हैं। सार्वभौम सत्ता को मान्यता दो। वह अक्षरब्रह्म का ऐश्वर्य है। किसी भी स्वरूप को मानो, लेकिन बस किसी का भी दोष, स्वभाव देखना नहीं। सद्भाव रखोगे तो भी सब निर्दोष हो जायेंगे और यदि सद्भाव न हो, तो 'बहुत अच्छा है' ऐसा कहना। ऐसा गुण लेने का सभी को बल मिले यही प्रार्थना।*

तदोपरांत **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** ने आशीर्वाद दिया–

...सब कुछ तो हमें याद नहीं रहेगा और उच्च कोटि का ज्ञान हम पचा भी नहीं पाएँगे। लेकिन, मेरे अनुभव के अनुसार इसमें से ***यदि हमें थोड़ा भी याद रह जाएगा, एकाध सूत्र याद रह जाएँगे, तो हमारा जीवन बदल जाएगा। काकाजी*** *के कहे अनुसार यहाँ आए हुए हम सभी एकांतिक-जीवनमुक्त हैं। महाराज अक्षरधाम से हमें साथ में लाये हैं और अपने साथ ले जायेंगे।*

पप्पाजी *कहते – प्राप्ति का कैफ़ रखें कि हमें कौन मिला है। स्वामीजी, साहेबजी, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, निर्मलस्वामी, गुरुजी जैसे दिव्य स्वरूप मिले हैं।*

अभी काकाजी ने कहा कि तुम यह बात भूल जाना कि एक ही स्वरूप होता है। बापा इतने समर्थ हैं कि असंख्य स्वरूप प्रगटा सकते हैं। काकाजी-पप्पाजी भी ऐसे ही अद्भुत पुरुष हैं कि जो संपूर्णतः समर्पितभाव से उनके साथ वर्ते, उन्हें सौ प्रतिशत अक्षरधाम के सुख के भोक्ता जीतेजी बना देंगे। लेकिन, हमें संपूर्ण रूप से उनकी शरणागति स्वीकारनी पड़े... भले ही हमें कुछ समझ न आए, लेकिन इन दिव्य पुरुषों का हम पर ऐसा दिव्य अनुग्रह है कि हमारे लिए जो ज़रूरी होगा, वह ऑटोमेटीकली हमारे मन या वर्तन में आ जाएगा। सो, कोई चिंता करने जैसी नहीं है।

सच, यह महोत्सव अद्भुत हुआ। ***काकाजी-पप्पाजी के संप, सुहृदभाव, एकता के सिद्धांत से चिपके रह कर, इस उत्सव को अपना मान कर सभी केन्द्रों के मुक्त वर्ते हैं और खूब सेवा का लाभ लिया है... यह सिद्धांत हम हमेशा के लिए याद रखें...*** *पप्पाजी कहते कि संबंध वाले किसी का दोष, स्वभाव या प्रकृति*

दिखाई दे, तो हमें विचार करना चाहिए कि हमें कौन मिले हैं? जो हमें मिले हैं, वे ही उसे मिले हैं। जो हमें एकांतिक, ब्रह्मरूप बना कर हमारा शुद्धिकरण करेंगे, वे उसका भी करेंगे। हमें कौन-सी जल्दी है। लेकिन किसी का भी दोष, प्रकृति, स्वभाव जीव में बिठाना ही नहीं। सेवा-भजन करते हुए ब्रह्मानंद करना। ***ब्रह्मानंद 'ब्रह्म' का गुण है। सो, यदि हम ब्रह्मानंद कर सकेंगे, तो ब्रह्मरूप वर्त पायेंगे।*** *इस प्रकार हम सभी को यहाँ से जो भी याद रह जाए, वह लेकर जायें... काकाजी-पप्पाजी सबकी प्रगति करा कर आगे ले जाएँ और सुखी करे दें ऐसी मेरे अंतर की भावना है।*

अंत में **अमदावाद** के मुक्तों ने गुरुहरि योगीजी महाराज को प्रिय पंचाला का रास **'जुओ-जुओने साहेलीओ आज रसीयो रास रमे...'** किया। यूँ महोत्सव का विसर्जन हुआ।

प.पू. गुरुजी की अंतर से इच्छा थी कि शताब्दी वर्ष में **गुरुहरि काकाजी के जन्मस्थान 'नड़ियाद'** का दर्शन करना है। सो, दोपहर को प्रसाद लेने के बाद प.पू. गुरुजी एवं दिल्ली से गए सभी मुक्त नड़ियाद गये। वहाँ से अनुपम मिशन द्वारा संचालित स्कूल **'शारदा मंदिर'** गये। यहाँ संतभगवंत प.पू. साहेबजी की आज्ञा से अल्पाहार की बहुत अच्छी व्यवस्था करी हुई थी। प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्तों की दूसरे दिन सुबह अमदावाद से जल्दी की फ्लाईट थी, इसलिए वे मुक्त अनुपम मिशन-मोगरी, पप्पाजी तीर्थ और जन्मस्थान का दर्शन करने के बाद सीधा अमदावाद चले गये। अन्य सभी, जिनकी दूसरे दिन दोपहर की फ्लाईट थी, वे बाद में पप्पाजी तीर्थ पर दर्शन करते हुए अनुपम मिशन मोगरी पहुँचे। **सबकी राह देखते हुए संतभगवंत प.पू. साहेबजी 'पारमिता' मंदिर में विराजमान थे।** गुरुहरि काकाजी के समाधि स्थल पर परिक्रमा करने के बाद सभी ने प्रसाद लिया। प्रसाद की बहुत अच्छी व्यवस्था की हुई थी। यहाँ से पुनः 'पारमिता' में गये और संतभगवंत प.पू. साहेबजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने अपनी सीधी-सादी भाषा में सबको खूब आनंद कराया और हाथ से व पैर से भंगड़े के एक्शन करते हुए कहा–

गुणातीत समाज के किसी उत्सव में यदि पता लगाना हो कि दिल्ली से मुक्त आये हैं क्या? तो, ढोल बजा देना; वे जहाँ भी होंगे, नाचने के लिए आ जायेंगे...

यूँ उन्होंने एक अनोखी स्मृति दी। अंत में आइसक्रीम का प्रसाद लेकर सभी 'हरिधाम' गये। महोत्सव के चारों दिन दिल्ली से गये सभी मुक्त **'हरिधाम'** में ही ठहरे थे और उस दौरान **वहाँ सभी को अपनेपन-आत्मीयता का खूब एहसास हुआ...**

गुणातीत समाज की चारों पंखुड़ियों के सहयोग से गुरुहरि योगीजी महाराज के 'संप-सुहृदभाव-एकता' के सिद्धांत का दर्शन कराते, सांकरदा में योजित शताब्दी महोत्सव की स्मृतियाँ करते हुए **31 दिसंबर** की सुबह से लेकर रात्रि नौ बजे तक सभी मुक्त मंदिर आ गये और... दस बजे **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में मध्यरात्रि महापूजा में एकत्र होकर, रात बारह बजे आरती करके नए वर्ष **2019** में प्रविष्ट हुए।

सच, **सांकरदा में हुए बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव में सभी स्वरूपों से जो आध्यात्मिक नैवेद्य प्राप्त हुआ, वह हमारे जीव की प्रगति के लिए संजीवनी के समान है।** ऐसी दिव्य सौगात का निरंतर मनन-चिंतन करते हुए, हम हमारे **प्रगट स्वरूपों से दिन-प्रतिदिन अपना संबंध दृढ़ करते जायें, वही शताब्दी की फलश्रुति कही जायेगी।** प्रगट स्वरूप ही हमें ऐसा बल-बुद्धियोग दें–ऐसी नूतन वर्ष पर प्रार्थना...

अहो ! दिल्ली मंदिर के प्रांगण में गुरुहरि काकाजी के जंगम मंदिर का अमृतपर्व...

वर्ष 2019 की **12** जनवरी दिल्ली मंदिर के लिए अविस्मरणीय बन गई ! **गुरुहरि काकाजी** ने अपने हृदय की धड़कन समान **प.पू. दिनकरभाई** का **75वाँ प्राकट्य दिन-अमृतपर्व** मनाने का सर्वप्रथम मौका दिल्ली के मुक्तों को वर्ष के प्रारंभ में दे दिया। सो, गुरुहरि काकाजी को कोटि-कोटि धन्यवाद !

पिछले कई वर्षों से जनवरी महीने में भारत में होने के कारण प.पू. दिनकरभाई अकसर प.पू. दीदी के प्राकट्य दिन निमित्त दिल्ली दर्शन देने के लिए आ ही जाते हैं। अबकी बार **14 जनवरी** को **प.पू. ज्योति बहन** को स्थूल रूप से विदा हुए एक वर्ष पूरा हो रहा था और मुंबई के मुक्त उनसे खूब जुड़े हुए हैं, सो उनकी भावना को पूर्ण करने के लिए प.पू. ज्योति बहन की अस्थियों का विसर्जन करने गुणातीत ज्योत की बहनों ने हरिद्वार में विशिष्ट आयोजन किया था। अतः हरिद्वार जाने वाले पवई के कई मुक्त 11 जनवरी की सायं एवं 12 जनवरी की सुबह तक **प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. माधुरी बहन** के साथ दिल्ली मंदिर आ गये।

प्रति वर्ष मंदिर के **'कल्पवृक्ष'** हॉल में बहनें-भाभियाँ प.पू. दीदी का प्राकट्य दिन मनाती हैं। सो, 12 की सायं **प.पू. दिनकरभाई** के **अमृतपर्व** के अंतर्गत **प.पू. दीदी** का **58वाँ प्राकट्य दिन** मनाया जाना था। लेकिन, 12 की सुबह **प.पू. गुरुजी ने सेवकों से कहा–**

बहनों की सभा न करके केवल प.पू. दिनकरभाई का 75वाँ प्राकट्य दिन ही मनाया जाए और दीदी का प्राकट्य दिन आप 16 जनवरी को मना लेना।

लेकिन, आख़िर यह तै हुआ कि प.पू. गुरुजी की निश्रा में भाइयों की सभा करेंगे और तब ही बहनों के विभाग में सिर्फ हारविधि करके, प.पू. दीदी का प्राकट्य दिन औपचारिक रूप से मना लेंगे।

यूँ, सायं साढ़े पाँच बजे प.पू. दिनकरभाई के अमृतपर्व मनाने के लिए सभी 'कल्पवृक्ष' हॉल में एकत्र हुए। डॅकोरेशन के कन्सेप्ट के मुताब्रिक हर जगह नेत्रों का दर्शन हो रहा था, जिसमें गहन रहस्य छुपा था। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे अंकित उन्हीं के नेत्रों में प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी और संतभगवंत प.पू. साहेबजी की मूर्ति दिखती थी। स्वरूपों के प्रति **प.पू. गुरुजी** के भाव को दर्शाते हुए सूत्र भी वहाँ लिखा था–

स्वरूपों की तरफ, सदा रहती नज़र, अखंड उनमें करते, काकाजी का दर्शन...

इसी प्रकार, **प.पू. दिनकरभाई** के आसन के पीछे भी उन्हीं के नेत्रों में गुरुहरि काकाजी एवं गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति दिखती थी और उनकी विशेषता दर्शाते हुए सूत्र लिखा था–

मूर्ति में जो मगन उसे हर कोई प्रत्यक्ष प्रभु ही दिखता है...

ऐसे ही **प.पू. दीदी** के आसन के पीछे प.पू. दीदी के नेत्रों में प.पू. गुरुजी की मूर्ति दिखती थी और प्रगट प्रभु के प्रति उनका समर्पण दर्शाते हुए सूत्र लिखा था–

आँखों के नूर में तेरी, छलके मूर्ति की आभा...

श्री ठाकुरजी के सिंहासन के समक्ष, सभी मुक्तों का प्रतिनिधित्व करते हुए कुछ **मुक्तों** के नेत्र दर्शा कर, सभी की

ओर से प्रगट प्रभु से प्रार्थना की थी–

नयनों में तुम बस जाओ, जहाँ देखूँ तुम्हीं तुम हो...

स्वरूपों के विराजमान होने के बाद, *'पधारोने सहजानंदजी हो, गुनाह करीने माफ़'* प्रार्थना के साथ पू. राकेशभाई एवं पू. डॉ. दिव्यांग ने उत्सव का शुभारंभ करके, प.पू. दिनकरभाई को अर्पित भजन– *'काकाजी का जंगम मंदिर बन गए हैं जो...'* प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् **पू. डॉ. दिव्यांग** ने अपने अनुभवों का दर्शन कराते हुए प्रार्थना की –

...गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में रहने को मिला है, उससे ही लगता है कि मेरी लाईफ़ कम्पलीट है। कुछ माँगने जैसा शेष रहता नहीं है। बस, आपके प्रति जो भाव है वह हमेशा रहे...

प.पू. दिनकरभाई के साथ शिकागो से आए **पू. पंकजभाई** ने प्रसंगों द्वारा बताया कि प.पू. दिनकरभाई से संबंध होने के बाद, उनकी साधुता - विनम्रता - समता युक्त वर्तन के कारण उनके जीवन में किस प्रकार रुपांतर हुआ।

तत्पश्चात् प्राकट्य पर्व एवं स्वागत निमित्त दिल्ली एवं पवई केन्द्र के मुक्तों ने स्वरूपों को हार अर्पण किया। मुंबई के **पू. ओ.पी. अग्रवालजी, पू. अनिलभाई माणेक एवं पू. दीपक अग्रवाल** ने सभी की ओर से प्रार्थना रूप कार्ड के साथ, अब तक भारत सरकार द्वारा जारी हुई, स्वामिनारायण संप्रदाय की सभी डाक टिकिटों को एकत्र करके, फ्रेम के रूप में प.पू. दिनकरभाई को अर्पित की। इसी प्रकार, 'माई स्टेम्प' स्कीम के अंतर्गत बनाई प.पू. दीदी की स्टेम्प की फ्रेम भी बहनों के विभाग में **पू. प्रियंका पुरी** एवं **पू. मानसी अग्रवाल** ने प.पू. दीदी को दी। तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी की प्रेरणा से पू. राकेशभाई** द्वारा प.पू. दिनकरभाई के अमृतपर्व के लिए **रचित विशिष्ट भजन** *'अक्षरब्रह्म का तेजपुंज, काकाजी के दिनकर...'* **पू. डॉ. दिव्यांग** ने प्रस्तुत किया।

प.पू. दिनकरभाई की पॉज़ीटीवीटी और मुक्तों के माहात्म्य को उजागर करते प्रसंगों द्वारा **पू. राकेशभाई शाह** ने अनुभव दर्शन कराया। इसी प्रकार, प.पू. दिनकरभाई की गुणातीत स्थिति एवं प.पू. दीदी के माँ समान वात्सल्य का एहसास **पू. किशोरभाई मास्टर्स** ने कराया।

तत्पश्चात् साधक के आत्ममंथन और प्रगट प्रभु द्वारा उसे प्राप्त होते हल का वर्णन करते भजन – *'मुक्तों की महिमा जानूँ, उनको सच्चे सगे दिल से मानूँ'* – को पू. राकेशभाई एवं पू. डॉ. दिव्यांग ने प्रस्तुत किया और... **प.पू. भरतभाई** ने आशीष याचना की –

...अद्‌भुत आनंद का दिन... जब से मैं यहां आया हूँ, मुझे 2007 की बात याद आ रही है। 2007 में यहाँ पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठित करनी थी, उससे एक महीना पहले पप्पाजी के अस्थि विसर्जन के लिए ज्योत से बहनें मंडल लेकर हरिद्वार आई थीं। तब सभी बात कर रहे थे – गुरुजी के प्रागट्यदिन और पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठा के समय हम नहीं आ पाएँगे। पर, दिनकरभाई ने कहा था कि ***जब पप्पाजी की मूर्ति की प्रतिष्ठा का इतना बड़ा अवसर हमें मिल रहा है, तो यदि हम अक्षरधाम में गए होंगे, तो भी वहाँ से वापिस आएँगे।*** *यह बात सुनने के बाद सभी ने पक्का कर लिया कि वे मूर्तिप्रतिष्ठा में आएँगे। दरअसल, दिनकरभाई दिल की सच्चाई से महिमा समझते हैं, इसलिए इनकी बात बड़े से बड़े और छोटे से छोटे मुक्त के गले उतर जाती है। आज भी हम ऐसे ही अवसर पर आए हैं, जब ज्योति बहन के अस्थि विसर्जन का प्रोग्राम है...*

गुरुजी ने बखूबी दिनकरभाई के 75वें प्रागट्य दिन के सेलिब्रेशन का पहला सोपान मना लिया। दिनकरभाई और दीदी दोनों का प्रागट्य दिन मना रहे हैं। दोनों के जो साम्यगुण है, वो बताऊँगा... **दिनकरभाई को काकाजी की छोटी से छोटी क्रिया में भी कभी मनुष्यभाव नहीं आया।** काकाजी जब वॉकिंग जाते, तो दिनकरभाई से कहते कि आप दोपहर का भोजन मेरे साथ करना। दिनकरभाई का ऑफिस बगल में ही था। सो, खाना खाने के लिए ऑफिस से काकाजी के पास आते थे। तब काकाजी उनसे कहते कि लेटर पोस्ट करवाना है। देखा जाए वहाँ बाहर ही लेटर बॉक्स होता था, जिसमें लेटर डालने पर पोस्टमेन आकर वह ले जाता था। यह बात काकाजी भलीभाँति जानते भी थे, लेकिन इस बहाने वे उन्हें अपना लाभ देना चाहते थे और तब दिनकरभाई को बहुत खुशी होती थी... **काकाजी का अल्प सूचन भी दिनकरभाई पूरी तरह से मान लेते...** काकाजी के शरीर छोड़ने से पहले दिनकरभाई ताड़देव आए थे। एक दिन के लिए उन्हें अपने भानजे की सगाई के लिए बड़ौदा जाना था। उन्होंने सोचा कि सगाई का फंक्शन निपटा कर फिर मुंबई लौट आएँगे और 3 फरवरी का उत्सव एटेन्ड करेंगे। अपने जाने के बारे में उन्होंने काकाजी से कहा, तो काकाजी ने सहज ही कहा कि हमें अब इन सब में नहीं पड़ना है। दिनकरभाई उसका मर्म समझ गए थे कि अब मुझे क्या करना है ? बड़ौदा जाने के लिए दिनकरभाई बापु के साथ स्टेशन पर गए। दोनों ट्रेन में बैठ गए और वह चलने में 10-15 मिनिट बाकी थे कि एकदम दिनकरभाई ने बापु से कहा– अब नहीं जाना है। चलो, हम वापिस चलते हैं। और... ताड़देव लौट आए। ताड़देव पहुँच कर काकाजी को सारी बात बताई, तो वे बहुत राज़ी हुए कि दिनकरभाई ने मेरी मरज़ी समझी। सच्चे अर्थ में पावर-शक्ति यही है। दिनकरभाई के पास ऐसे सभी गुण हैं। **हम बाह्य गुणों की बात करते हैं कि धीर, पॉज़ीटिव इत्यादि हैं, पर सबसे बड़ी बात यह है कि वे काकाजी के साथ दिव्यभाव और माहात्म्य से जुड़े थे। मनुष्यभाव का कोई स्थान ही नहीं था, ऐसा दिनकरभाई का जीवन है।** इसलिए **स्वामीजी, साहेबजी व सभी स्वरूप राज़ी हैं और गुरुजी भी उन पर एकदम फ़िदा हैं** कि दिनकरभाई जो कहेंगे, वो मान्य है। दिनकरभाई के जीवन की यह पावर है।

...ऐसे ही **दीदी, गुरुजी के साथ दिव्यभाव महिमा और सेवकभाव से जो जुड़ी हैं, वो ही उनकी शक्ति है - पावर है।** सभी को वे स्माइलींग दिखती हैं, पर वो जो स्माइल करती हैं अलग बात है। ऐसा ही हमें बनना है। काकाजी बहुत बार कहते – योगीजी महाराज को कौन निर्दोष नहीं मानता था ? फिर भी हम क्यों निर्दोष नहीं हुए ? कहने का तात्पर्य यह था कि दिव्य मानना वो अलग बात है और यदि हमेशा मानेंगे, तो उनके जैसी पावर हम सब में आ सकती है। हमारी ऐसी कोई कसर दूर हो जाये और ऐसे निर्दोषभाव व दिव्यभाव में अखंड जीवन जीते हो जाएँ – यही आज प्रार्थना है।

दिनकरभाई के जीवन के दो-चार प्रसंग बताता हूँ कि वे कितने माहात्म्य से जीवन जीते हैं और मुक्त को कैसी दृष्टि से देखते हैं। एक दफ़ा एक नए भक्त के यहाँ दिनकरभाई गए, तो वे हाथ जोड़कर दिनकरभाई से कहने लगे कि आप तो साधुता की मूरत हो, आपका दर्शन करके हमारे अंतर में शांति-शांति हो जाती है, आपमें काकाजी का साक्षात् दर्शन होता है वगैरह-वगैरह। दिनकरभाई ने एकदम हाथ जोड़कर उनसे कहा कि मैं तो दर्पण हूँ, आप सब जैसे हो वही आपको मुझमें दिखता है। कितनी बड़ी बात है कि मैं तो दर्पण हूँ; आप जो मेरे लिए बोल रहे हो, वो

आपका गुण है।

*एक बार **रामकृष्णन साहेब** अमेरिका जाने से पहले ताड़देव आए थे। तब वशीभाई और हम सब भाइयों से मिले थे। तब हमने उनसे कहा – आप अमेरिका जा रहे हो, तो दिनकरभाई को ज़रूर मिलना। वे ऐसे साधु पुरुष हैं कि उन्हें मिलने से आपको बहुत कुछ मिलेगा। आपको शांति और आनंद मिलेगा। वे खूब जीनियस, इंटॅलिजंट और काकाजी को धारण किये हुए हैं।*

वे जब अमेरिका से लौटे और हमसे मिलने आये और हमने पूछा – आप दिनकरभाई से मिले ?

*उन्होंने कहा – मैंने बचपन में ताजमहल के बारे में बहुत सुनता था कि वह आश्चर्य है, उसे देखना चाहिए। बड़े होकर जब ताजमहल देखा, तो मुझे ऐसा लगा कि मेरा पैसा वेस्ट हो गया। सब जो वर्णन करते हैं, ऐसा उसमें तो कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। लेकिन, **अमेरिका में जब दिनकरभाई का दर्शन किया, तो** आपसे **जो वर्णन सुना था, वो भी कुछ नहीं है। उससे कई गुणा दिनकरभाई ऊपर हैं।***

*देखो, थोड़े से संबंध में उन्होंने ऐसा बताया। ऐसे **दिनकरभाई की महिमा अपार है। सबके प्रति उन्हें जो दिव्यभाव, माहात्म्य है वो अद्‌भुत है। उनकी धीरज अद्‌भुत है।** वे हमेशा महिमा की ही दृष्टि से देखते हैं और छोटे-छोटे प्रसंग में, छोटी-छोटी बातों से हमें समझाते हैं कि हमें कैसी महिमा से रहना चाहिए। महिमा क्या चीज़ है, वह वे बताते हैं।*

*एक बार हम किचन में बैठे थे। दिनकरभाई को ब्रह्मरसायन खाने के लिए दिया। दिनकरभाई ने कृपा बहन को थोड़ा दिया। उसका स्वाद पसंद न आने के कारण कृपा बहन का मुँह थोड़ा बिगड़ गया। वही ब्रह्मरसायन दिनकरभाई और मैंने भी खाया, तो हमने अच्छी तरह से खाया। दिनकरभाई बोले – देखो, हमें इसकी महिमा है तो यह अच्छा लगता है। ऐसी छोटी-छोटी बातों से हमें बताते हैं कि **यदि महिमा है, तो सब दिव्य-दिव्य और अच्छा लगेगा कि अहोहो, किसका संबंध है ! और यदि माहात्म्य में कसर है, तो सब अच्छा नहीं लगेगा, सबका स्वभाव दिखेगा।***

तो, आज यही प्रार्थना करनी है – हे दिनकरदादा ! हे दीदी ! ये जो सबकी आंखें दिखाई हैं, उसका मतलब यह है कि मेरी आँखों में भगवान बिठा देना। हमारी दृष्टि दिव्य हो जाए – यही आज के दिन स्वामिनारायण भगवान और सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है।

तत्पश्चात् मुंबई के **पू. रमेशभाई त्रिवेदी** ने अलंकारिक भाषा में प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी के माहात्म्य का दर्शन कराया और *‘जननीनी जोड़ सखी नहीं मळे रे लोल...’* गुजराती कविता की कुछ ऑडियो पंक्तियों द्वारा मुंबई की **पू. नयना बहन मर्चंट** की प.पू. दीदी के प्रति की भावना का सभी ने एहसास किया।

सन् 2018 में सांकरदा की पुण्यभूमि पर सभी केन्द्रों के मुक्तों ने मिलजुल कर सुहृदभाव से जो उठाव लिया, उससे राज़ी होकर प.पू. गुरुजी को विचार आया कि इन्हें **‘गुणातीत समाज’ का बॅज** दिया जाये। इसके बारे में प.पू. गुरुजी ने संतभगवंत प.पू. साहेबजी से भी जिक्र किया और उन्होंने भी इसका अनुमोदन किया। प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं पू. घनश्यामभाई सहित कुछ मुक्तों को भी यह बॅज देकर, ‘धाम, धामी और मुक्तों’ को जीवन में प्राथमिकता देने के लिए **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया –

बाहर ठंड है या नहीं – यह कैसे पता लग रहा है ? आप सब यहाँ गरम कपड़े पहन कर बैठे हैं इससे। बाहर यदि ठंड न होती, तो आप सब गरम कपड़े पहन कर नहीं बैठते। इसी तरह, अंदर दाख़िल होते ही हर एक को ख्याल पड़ता है कि दिनकरभाई हैं। कैसे ? तो, जैसे ये ठंडक इमीज्येट्ली फील होती है, वैसे ही हॉल में दाख़िल होते ही भीतर में एकदम शांति आ जाती है। पहले एक भजन सुनते थे– शांति पमाडे तेने संत कहीए। यह पंक्ति ऐसे साधु के संबंध में चरितार्थ होती है। फिर अंदर आकर ये फोटोज़, लोगो, आँखों का सारा नज़ारा नज़र आता है और इस पर काफ़ी बातें भी हुई। मुझे वो बातें समझने में देर भी लग गई। फिर मैंने सोचा, छोड़ो इन बातों को; हरेक में प्रभु को देखो करो... ऐसा ही एक सवाल मैंने काकाजी से पूछा था, तो उन्होंने यही कहा था –

तू सब में मुझे क्यों नहीं देखता ? पप्पा में मुझे क्यों नहीं देखता ?

काकाजी तो लॉजिक के राजा !

मुझसे कहने लगे – एक बात का जवाब दे, मेरे में कर्ताहर्ता कौन ?

मैंने कहा – जोगी बापा।

तुझे मानो पप्पा मुझसे विरुद्ध वर्तते दिखाई दें, तो उनमें भी कर्ताहर्ता कौन ?

तब मैं कुछ बोला नहीं क्योंकि अगर मैं बोलता तो पकड़ा जाता।

फिर उन्होंने खुद ही कहा – उनमें भी कर्ताहर्ता तो बापा ही हैं न ! तो, बापा कभी भी किसी का अहित करेंगे ? उनके द्वारा भी किसी के लिए जिस रीति से वर्तते होंगे, उसके हित में ही वर्तते होंगे। ऐसे ही तेरे भी हित में वर्तते होंगे, अगर तू उनके प्रति दिव्यभाव रखे तो !

अभी सारी दिव्यभाव की बातें चल रही थीं, तो मुझे यह प्रसंग याद आया। इन्होंने यह ज्ञान हमारे जीव में बैठा ही दिया है। और... **दिव्यभाव रखने का सीधा-सादा तरीका भी यही है कि 'सर्वोपरि महाराज' – और सभी में उन्हें कर्ता-हर्ता मानकर, उनके वचनानुसार हम जीवन जिएँ।** मैं नहीं कहता कि बहुत बड़ी-बड़ी और गहरी बातों को पकड़ें। शायद हम पकड़ न भी पायें, पर वे जो आज्ञा करें, उतना तो कर ही सकते हैं।

दूसरी बात क्या ? अभी किशोरभाई मास्टर्स गुणातीत की बात कर रहे थे। गुणातीतानंदस्वामी का एक प्रसंग था, जो दिनकरभाई के प्रसंग से मॅच करता है। जनरली काकाजी रात को उठकर थोड़ा पढ़ते और चाय-नाश्ता करते थे। एक बार दिनकरभाई आने वाले थे, सो शायद काकाजी जगे रहे और सोये ही नहीं थे।

मैंने पूछा – इतना जल्दी कैसे जगे हुए हैं ?

उन्होंने बताया – दिनकरभाई आने वाले हैं।

दिनकरभाई पहली बार आने वाले थे, तो मुझे उत्सुकता भी थी। क्योंकि काकाजी उनकी खूब तारीफ़ करते थे।

मैंने काकाजी से सहज ही पूछा – चाय पीयेंगे ?

काकाजी बोले – दिनकरभाई आएँगे, तब साथ में पीयेंगे।

मैं कुछ बोला नहीं। फिर जब काकाजी ने दिनकरभाई से काकाजी ने पूछा – चाय पीयोगे या काफ़ी ?

दिनकरभाई ने तुरंत कहा – चाय पीऊँगा।

यह देख कर मुझे आश्चर्य हुआ कि काकाजी तो दिनकरभाई के दासत्वभाव, सरलता, विनम्रता इत्यादि की बातें

बता रहे थे। मुझे ऐसा था कि इतनी देर रात होने के कारण काकाजी के पूछने पर दिनकरभाई स्वाभाविक ही कह देंगे कि अभी कुछ नहीं, ताकि काकाजी को इतनी देर बैठा न रहना पड़े और हम सबको भी नींद आ रही थी। पर, दिनकरभाई ने तो कह दिया–चाय।

काकाजी तो हमारे मन के सारे संकल्प पकड़ लेते थे। सुबह उन्होंने मुझसे बात करी – तेरे मन में यह था न कि ***दिनकरभाई*** *मना करेंगे, पर* ***मेरी मरज़ी को*** *वो* ***जानते हैं। जबकि आप जो साथ में रहते हो, वे नहीं समझ पाते।***

यह तो स्थूल एग्ज़ाम्पल देकर उन्होंने हमें समझाया। यह प्रसंग गुणातीतानंदस्वामी के प्रसंग से मिलता हुआ है। महाराज ने एक बार बीमारी ग्रहण की थी और जहाँ ठहरे थे वहाँ के लिए कहा था कि किसी को यहाँ आने नहीं देना। कोई निजी यदि आना चाहता हो, तो उसे पीछे से ले आना। पर, गुणातीतानंदस्वामी तो गाँव में से होकर महाराज के पास पहुँचे। क्योंकि वे तो कामिल-काबिल हुन्नर से सबकी वृत्तियाँ ही खींच लेने वाले थे, तो कौन उन्हें देखता? यूँ, महाराज के पास पहुँच कर उन्होंने दंडवत किया।

महाराज ने पूछा – कहाँ से आए?

गुणातीतानंदस्वामी ने उत्तर दिया – पीछे से।

यह सुन कर स्वाभाविक ही किसी को ऐसा लगे कि महाराज के समक्ष झूठ बोले! पर, इस बात को काकाजी ने समझाया था कि स्वामी झूठ नहीं बोले थे, वे महाराज की मरज़ी को जानते थे। ऐसे ही दिनकरभाई को ख्याल था कि काकाजी की इच्छा चाय पीने की है, इसीलिए चाय के लिए 'हाँ' कही। भरतभाई ने जैसे अपनी बातों में कहा कि ये बातें बहुत गहन-अटपटी हैं, कोन्ट्राडीक्टरी भी लगेंगी। पर उसका एफ. आइ. आर. टेस्ट एक ही है कि ***अंदर आते ही हमें शांति हो, तो उसका मतलब कि कोई सच्चे संत यहाँ बैठे हैं...***

वच. गढडा मध्य 70 में जो 'स्थितप्रज्ञ' की बात लिखी है कि 'गुण के स्थितप्रज्ञ' तो होते हैं, लेकिन ***'स्वरूप का स्थितप्रज्ञ' यानि दिनकरभाई!*** *जैसे कि भरतभाई ने बात की कि दिनकरभाई को काकाजी के किसी भी चरित्र में मनुष्यभाव आया ही नहीं, अखंड दिव्यभाव ही रहा है...*

आज की विशिष्ट सभा के अंत में **प.पू. दिनकरभाई** ने आशीर्वाद दिया– *...हर साल दीदी के बर्थडे पर आने का दिल करता ही है। पर, इस साल थोड़ा नुकसान हुआ है, तो दीदी माफ़ करना। करीब एक सप्ताह पहले ही वॉट्सएप पर मॅसेज पढ़ कर मुझे भी आश्चर्य हो गया कि मेरा बर्थडे दिल्ली में मनाने वाले हैं। गुरुजी और आप सबका बहुत प्रेम है। सच,* ***दिल्ली हमारे लिए कभी भी दूर नहीं रही है, हम सभी साथ में ही हैं। अमेरिका, जापान, रशिया, चंद्रलोक में हों या तो गॅलेक्सी से बाहर भी हों, पर हम साथ में ही हैं, क्योंकि काकाजी ने संबंध बनाये रखा है। गुरुजी की महिमा काकाजी शिकागो में गाते थे, वो हमारे बहुत दिल में बैठ गई।*** *काकाजी की कोई भी बात गुरुजी दिल से स्वीकारते थे। उनका काकाजी से संबंध ही ऐसा अनोखा है।* ***काकाजी और गुरुजी आपस में जब से मिले हैं, तब से दोनों अंतर्यामी पुरुष एक-दूसरे को समझ लेते थे।*** *उसमें फ़ायदा हमें हो गया कि ऐसा दिव्य समाज हमें मिला... आज हम ऐसी भावना से ये दिन मनायें ताकि गुरुजी और दीदी हमसे जो करवाना चाहते हैं, वो चीज़ हमारे अंदर अच्छी तरह से बैठ जाए।*

कोई भी प्रसंग जब एक्सट्रीम लेवल पर आता है या कोई बहुत ज़ोरदार समस्या आएगी या फिर फ़ायदा-लाभ

एकदम हो गया हो, तो बात हमारे दिल में बैठ जाएगी। ये हमारी एक नॉर्मल सिच्युएशन है कि ऐसी चीज़ें हमारे अंदर बैठ जाती हैं। आज यहाँ हमें जो लाभ मिल रहा है, उसकी महिमा हमारे पॉज़ीटिव एलीवेशन से हम जितनी देखेंगे, उतना ज़्यादा फ़ायदा मिलेगा। तकलीफ की कोई बात हमारे लिए नहीं है। दिल्ली आने पर तो ***गुरुजी ने बहुत तप किया और हमारी दीदी ने भी बहुत तप किया। उसके फलरुप आज हमें सब मुफ़्त में मिला है।*** *ऐसे भाव और समझदारी से पकड़ें कि* ***हमें सचमुच गुरुजी का होकर जीना है।*** *गुरुजी की मरज़ी को अच्छी तरह समझना है और बड़े पुरुष का कोई भी चरित्र हमारे लिए हितकारी मानना ही है। डॉक्टर के पास हम जाते हैं, तो एक ही दर्द के लिए डॉक्टर अलग-अलग पेशन्ट्स को अलग-अलग दवाई प्रिस्क्राईब करता है। क्योंकि डॉक्टर को पता है कि कौन से मरीज़ को कितनी मात्रा में और कितने लेवल की दवाई चाहिए। ऐसे ही* ***हमारी चेतना को जैसी ज़रूरत होगी, वैसी दवाई सत्पुरुष हमें देंगे। उस तरह से हमारा ट्रीटमेन्ट करेंगे।*** *तब हम ऐसा कम्पेर न करें कि आपने फलां को ऐसा किया और मुझे ऐसा क्यों? क्योंकि वे जो भी करते हैं, हमारे भले के लिए करते हैं। यह हमें पकड़ कर रखना है।*

काकाजी मेरी वाइफ के गुरु थे। वे जब पहली बार अमेरिका आए थे, तब उन्होंने हमारे घर पर फोन किया था और बताया कि दो हफ्ते के बाद वे शिकागो आने वाले हैं। आप मुझे मिलने के लिए आना। जब काकाजी से मिलने गए, तो पूर्व के संबंध के कारण उनके साथ लव एट फर्स्ट साइट हो गया। आज पचास साल के बाद भी काकाजी का वो दर्शन-मूर्ति, वो गुलाबी फेस ईर्द है। रूम में दो दीवार के बीच में सोफे के पीछे तकिया रखा था, काकाजी के हाथ में लाल एपल था, जिसे वे फैंकते और पकड़ते थे। पूर्व का ऐसा कुछ होगा कि यह सब भीतर में बैठ गया है। इसी प्रकार हमारी लाइफ में भी गुरुजी, दीदी, भरतभाई और अन्यों के ऐसे प्रसंग भीतर में बैठ गए होंगे, जो कि हमारे लिए परमेनन्ट एसेट बन गये होंगे।

काकाजी ने भी हमसे संबंध बढ़ाने के लिए ऐसे प्रसंग खड़े किए... काकाजी के मिलने के दूसरे दिन से ही मुझे एपन्डीक्स का इतना दर्द होने लगा कि हॉस्पीटलाइज़ होना पड़ा और ऑप्रेशन करवाना पड़ा। सामान्य रीति से कोई यह सोचेगा कि ऐसे कैसे संत का दर्शन करके आये कि हॉस्पीटल में जाना पड़ा? लेकिन नहीं, हमारे प्रारब्ध को बदल कर, हमारे फेवर के लिए वे ऐसे प्रसंग लाते हैं। पर, जब हमारी समझ पॉज़ीटिव नहीं होती है, तो ग़लत सोचते हैं। इसलिए काकाजी बार-बार वचनामृत अंत्य का 11 'सीताजी जैसी समझदारी' का उदाहरण देते थे। सीताजी प्रेगनेन्ट थीं और बिना किसी वजह रामचन्द्रजी ने उन्हें जंगल में अकेले भेज दिया। लक्ष्मणजी से कहा कि छोड़कर लौट आना। वन में पहुँच कर सीताजी रोने लगीं; फिर उन्होंने लक्ष्मणजी से भगवान राम को कहलवाया कि मैं मेरे दुःख से नहीं रो रही। मुझे तो जंगल में बहुत अच्छा लगता है। मैंने आपके साथ 14 साल जंगल में गुज़ारे हैं। अब मैं अयोध्या में सफोकेट होने लगी थी और मुझे दोबारा जंगल में जाने की ही इच्छा थी... सीताजी को रुदन आ रहा था, लेकिन वे रामचंद्रजी का अवगुण-अभाव नहीं ले रही थीं।

स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत में प्रश्न पूछा है कि धर्म और वैराग्य बहुत कठिन हों, लेकिन जिसकी समझ सीताजी जैसी न हो, उसका संग करना चाहिए या नहीं? परम चैतन्यानंदस्वामी जो एक बार महाराज से

रूठ कर चले गए थे, उन्होंने उत्तर दिया है कि धर्म और वैराग्य कम हो, लेकिन सीताजी जैसी समझ जिसकी हो, उसका संग करना चाहिए।

आज काकाजी और सब गुणातीत स्वरूप हमें उस लेवल पर ले जा रहे हैं कि हरेक हरिभक्त और स्वरूप के प्रति हमारी ऐसी समझदारी होनी चाहिए कि हम कभी भी उनका नॅगेटिव न देखें, उनके अंदर मनुष्यभाव न लाएँ। मनुष्यभाव लाना या नहीं लाना वो भी हमारी समझदारी से ऊपर की बात है। जैसे गुरुजी ने अभी बताया कि गुणातीतानंदस्वामी से महाराज ने पूछा – आप गांव में से आए ? गुणातीतानंदस्वामी ने जवाब दिया कि हम तो पीछे के रास्ते से आए हैं, गांव में से नहीं आए हैं। तो, जो साथ में चलने वाले संत-हरिभक्त थे, वे तो डाउट करेंगे कि गुणातीतानंदस्वामी झूठ बोल रहे हैं। पर, गुरुजी ने अभी बहुत अच्छा बताया कि गुणातीतानंदस्वामी इतने पावरफुल थे कि ऐसे डिस्टर्बींग तत्वों को नल एन्ड वॉईड कर सकते थे। भगवान ने साधुओं को जो नियम दिए हैं कि बहनों को नहीं देखना-उनसे बात नहीं करनी, उस नियम से भी वे परे थे। उनको ऐसी कोई डिस्टर्बेन्स नहीं हुई। परंतु, भगवान को राज़ी करने के लिए उनकी मरज़ी समझ कर गुणातीतानंदस्वामी बोले कि मैं गांव में से नहीं आया हूँ। बड़े पुरुष के समक्ष हम लॉजिक लगाएँगे, तो फेल हो जाएंगे। वहाँ तो एक ही बात है – उनकी 'हाँ' में 'हाँ' और 'ना' में 'ना'। फिर बाकी की बातें छोड़ो, वो वे संभाल लेंगे। ये चीज़ आज हम यहाँ सचमुच में पक्की करें।

आज दीदी का प्रागट्य दिन है। ***दीदी ने इस समाज में भक्तों के साथ और ख़ास तो साधक बहनों के साथ जो संबंध बनाया है, जो महिमा गाकर उन्हें तैयार किया है, वो बहुत बड़ी बात है।*** *काकाजी को 1952 में जो समाधि हुई, उसमें काकाजी ने देखा कि स्वामिनारायण के सत्संग में बहनों को दुत्कारते हैं और अमेरिका में तो ऐसा चलता ही नहीं है। अमेरिका में जिन लोगों के यहाँ ऐसा होता था, तो लेडिज़ अपने हसबन्ड्स को डाँटती थीं कि आपके गुरु कैसे हैं ? हमने क्या गुनाह किया है ? लेडी हैं तो क्या हो गया ? यह बात काकाजी जानते-समझते थे कि अब ज़माना बदल रहा है और उसी के मुताब़िक यदि बहनों का काम होगा, बहनें शामिल होंगी तो सत्संग बढ़ेगा। आज सब हरिभक्त यहाँ हैं, उसमें कई शादीशुदा हैं। उनके* ***घर की लेडी से मिलजुल कर ही दीदी और उनका समाज काम कर सकता है। गुरुजी आशीर्वाद जरूर देंगे, मगर अंदर से जो दिव्यभाव लाना है, उसके लिए जो दवाई देनी है , वो तो दीदी ही दे सकती हैं, क्योंकि वो उनसे बात कर सकती हैं।*** *तो, काकाजी के मास्टर प्लान के मुताब़िक आज हमारा 'गुणातीत समाज' है। 1966 में हम अलग हुए, तो कइयों को ऐसा ही ख्याल था कि ये सब नार्मल ड्रेस पहन कर घर वापिस चले जाएँगे। आज देखते हैं कि वे कई मुमुक्षुओं का पालन-पोषण कर रहे हैं, उन्हें आगे ले रहे हैं।* ***उस समय काकाजी को दर्शन था कि बहनों की अब बहुत ज़रूरत है और बहनों से ही समाज की पुष्टि होने वाली है। वो चीज़ आज हम देख रहे हैं।*** *पप्पाजी, स्वामिजी, गुरुजी के समाज के अंदर बहनों की बड़ी सेवा है और ये समाज बढ़ने वाला ही है। इस समाज की बहुत पुष्टि होने ही वाली है और यही नहीं देश-परदेश में भी होने वाली है। अकेले गुजराती, हिन्दी भाषी या हमारे जैसे की लिमिट नहीं होगी, बल्कि हर कोई उसमें शामिल होगा। क्योंकि हमारा माल पक्का है। हमारी क्वॉलिटी बहुत अच्छी है... सहजानंदस्वामी महाराज की जय।*

विसर्जन प्रार्थना से सभा का समापन हुआ और सभी ने महाप्रसाद लिया।

दिल्ली मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा का रजत जयंती वर्ष
एवं
मार्च माह में गुणातीत विभूतियों का प्राकट्य पर्व...

अहो ! आनंद उर न समाए रे... जब **3 फरवरी 2019 गुरुहरि काकाजी के साक्षात्कार के 67वें पर्व** पर, दिल्ली मंदिर में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं गुणातीत स्वरूपों को विराजित हुए **25 वर्ष** पूर्ण हुए। अतः इस निमित्त प.पू. गुरुजी की निश्रा में **31 जनवरी, 1 और 2 फरवरी – रजतजयंती की पूर्व संध्या** तक आयोजित शिविर में मुक्तों ने प.पू. गुरुजी द्वारा गुरुहरि काकाजी की अमृतवाणी के एक-एक शब्द के मर्म को जान कर स्वयं को धन्य किया। **2 फरवरी** की सायं **पू. राकेशभाई, पू. वच्छराजजी, पू. ओ.पी. अग्रवालजी** एवं **पू. पुनीत गोयलजी** ने अपने अनुभवों से बताया –

यह रजत जयंती केवल मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा की नहीं, वरन् उसके प्राण समान संत के संबंधयोग से हम सभी जो निहाल हुए हैं और 'प्रगट प्रभु' को पाया है, उसकी है।

'मंदिर' एवं **'तीन फरवरी पार्क'** रोशनी से इतना जगमगा रहा था कि रास्ते पर जाने वाले राहगीर थम कर यह खूबसूरत नज़ारा देखते। रोशनी देखने के लिए प.पू. गुरुजी भी देर रात को स्वयं सड़क पार जाकर, हरिभक्तों के साथ तकरीबन एक घंटा बैठे और धुन कराई। मंदिर के आँगन में संख्या **'25'** एवं **'रजत जयंती'** शब्दों को थर्मोकॉल की कटिंग में रख कर, 1994 में हुई मूर्तिप्रतिष्ठा की पुरानी फोटोज़ भी स्मृतिरूप में लगाई गई थीं।

3 फरवरी, रविवार की सुबह साढ़े सात बजे 'अक्षरज्योति' में सभी सत्संगी परिवार एकत्र हुए। 25 वर्ष पूर्व हुई मूर्तिप्रतिष्ठा की स्मृतियाँ देने हेतु इनकी 25 नववधुओं को कलश उठाने का लाभ दिया। गुरुहरि काकाजी की मूर्ति की सेरेछाया में सुबह आठ बजे अक्षरज्योति से 'कलशयात्रा' शुरू हुई। बैंड-बाजे और ढोल की ताल पर स्वामिनारायण धुन गाते, नाचते और आनंद करते हुए करीब सवा नौ बजे मंदिर के द्वार पर सभी पहुँचे। यहाँ प.पू. गुरुजी सबको दर्शन देने के लिए बैठे हुए थे। प.पू. गुरुजी के समक्ष हरिभक्तों ने खूब आनंद किया और फिर गुणातीत समाज के ध्वज के रंगों वाले गुब्बारों के गुच्छे – जिनके नीचे रजत जयंती के प्रतीक रूप '25' लिखा था – उन्हें आकाश में बारी-बारी से उड़ा कर अपना हर्ष व्यक्त किया! तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी **'अक्षरतीर्थ'** पर गए और वहाँ से गुरुहरि काकाजी की प्रसादी के **'जामुन वृक्ष'** का दर्शन करने गए। 1985 में गुरुहरि काकाजी ने यहाँ पूजन किया था। प.पू. गुरुजी ने भी वृक्ष का पूजन करके वो स्मृति ईदम् करा दी ! तदोपरांत सभी **'कल्पवृक्ष'** हॉल में पाटोत्सव की महापूजा के लिए एकत्र हुए। पाटोत्सव विधि संपन्न होने के बाद **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा –

मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा को 25 वर्ष हुए। 31 तारीख से हम काकाजी की कथावार्ता सुन रहे हैं। आज इसकी पूर्णाहुति पर पाटोत्सव निमित्त मूर्तियों का पूजन व महापूजा करी। मूर्ति प्रतिष्ठा के समय पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामीजी सभी विराजमान थे। 25 वर्ष में सभी के सहयोग से यहाँ विकास हुआ। परंतु, काकाजी कहते

थे – अपना सच्चा विकास वो है कि हमारे पूरे तंत्र में प्रत्यक्ष स्वरूप विराजमान होकर, हमारी देह को ***'चैतन्य मंदिर'*** *बना दें। तो, जो-जो इस मंदिर के साथ किसी भी प्रकार से जुड़े हुए हों, चाहे वो यहाँ रहते हों, करीब या दूर रहते हों – हरेक मुक्त के भीतर अक्षरपुरुषोत्तम महाराज प्रत्यक्ष रूप से विराजमान रहकर काम करते हो जाएँ। गुणातीतानंदस्वामी का भी संकल्प था कि सब कार्य पूरे हुए, अब चैतन्य मंदिर बनते जाएँ – जो अविनाशी हैं। अब* ***जब ये मंदिर पूरा हो गया, तो इस साल महाराज हरेक को अक्षरधाम रूप रहता कर दें*** *– ऐसी प्रार्थना और शुभ संकल्प है !*

दोपहर साढ़े बारह बजे पाटोत्सव निमित्त अन्नकूट का थाल हुआ और सभी ने महाभोग प्राप्त किया। दोपहर ढाई बजे से लेकर सायं साढ़े पाँच बजे तक, मुक्तों ने आँगन में अपने परिवार सहित फोटोज़ खिंचवा कर आज के दिन की स्मृति प्राप्त की...

सच, रजत जयंती वर्ष का स्मरण करते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि समय तो मानो कहाँ पंख लगा कर उड़ गया ! क्योंकि मंदिर एवं मुक्तों के प्राण **प.पू. गुरुजी** की नित्य नवीन चेष्टाएँ तो प्रति दिन ऐसे उत्सव योजित करती हैं कि दिन के आठों प्रहर कम लगते हैं। उन्हीं की बदौलत सत्संग हरियाला नज़र आता है, उनसे ही मुक्तों के जीवन में बरकत है। फिर भी, ऐसे गुरु के स्थान पर होते हुए, प्रभु के अखंड धारक होने के बावजूद, किस प्रकार एक जाग्रत साधक की अदा से पल-पल बरत कर हमें प्रेरित करते हैं, उसे हाल का ही निम्न प्रसंग उजागर करता है– जनवरी 2019 महीने में प.पू. दीदी के प्राकट्य दिन के निमित्त पू. राकेशभाई, पू. डॉ. दिव्यांग, पू. परछाईं दीदी एवं पू. नित्या दीदी ने साधक के आत्ममंथन और प्रभु द्वारा उसे मिलते प्रत्युत्तर पर आधारित 'प्रार्थना भजन' बनाया था। पू. राकेशभाई एवं पू. डॉ. दिव्यांग ने वह भजन प.पू. गुरुजी को सुनाया।

भजन में स्थाई पंक्ति थी– *'मुक्तों की महिमा* ***जानें,*** *उनको सच्चे सगे दिल से मानें...'*

और... पहले पैरा में एक पंक्ति थी – किसी भी ख्यालों में न जा मन मेरे, **प्रभु** हैं हर पल संग तेरे।

प.पू. गुरुजी ने स्थाई पंक्ति में 'जानें' शब्द बदल कर **'जानूँ'** करवाया और 'प्रभु' की जगह **'काकाजी'** करवाया। प.पू. गुरुजी ने काकाजी शब्द करवाया तो ऐसा ही लगा कि अधिकतर भजनों में प.पू. गुरुजी 'काकाजी' का नाम रखवाते ही हैं, उसी प्रकार यह भी किया होगा। लेकिन, पूरा भजन सुनने के बाद **प.पू. गुरुजी** ने सहज ही कहा– ***इस भजन पर लिख दो, गुरुजी का भजन ! पंद्रह साल तक खूब रो-रोकर मैंने भजन किया है।***

यह सुन कर ख्याल पड़ा कि ओह ! अंतर्दृष्टि का यह भजन सुनते-सुनते प.पू. गुरुजी ने इसे अपने पर लागू कर लिया कि वे मुक्तों की महिमा जानें। प.पू. गुरुजी तो स्वयं माहात्म्य का मूर्तस्वरूप हैं, पर इस तरीके से वर्त कर वे हमें सीख देते हैं। एक बार किसी प्रसंग पर सेवकों से उन्होंने सहज ही कहा था – ***मैं तो अपने आपको हमेशा सेवक मानता हूँ।***

निरंतर अंतर्दृष्टि से भरी प.पू. गुरुजी की ऐसी जीवनशैली देख कर **प.पू. वशीभाई** अकसर कहते हैं–

एट धिस एईज़ ऑलसो, ही इज़ ए लर्नर...

सच, प.पू. गुरुजी के रोज़मर्रा के कई जॅस्चर्स ऐसे हैं, जो प्रति क्षण एक नई सूझ देते हैं। जाग्रतता से उन्हें निहार

कर अपने जीवन में ढालने की दृष्टि चाहिए, ताकि जैसे उन्होंने गुरुहरि काकाजी को राज़ी करके अपने हृदय में बसा लिया है; वैसे ही प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता पाकर हम उन्हें रोम-रोम में बसा लें। ऐसे दिव्य चक्षु एवं करामात प्रदान करने के लिए, **31 जनवरी** सायं से **2 फरवरी** की सायं की तीन सभाओं में प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी की अमृतवाणी का विश्लेषण करके जो विशिष्ट अनुग्रह किया है, उसकी गहनता समझें।

साथ ही, प.पू. गुरुजी ने सूत्र दिया है – ***रजत जैसे शुद्धभाव से मंदिर का 25वाँ प्रतिष्ठा वर्ष मनाएँ...***

तो, ऐसे भाव से **13 मार्च – प.पू. गुरुजी** के **82वें प्राकट्य दिन** निमित्त प्रार्थना करके अपने जीव को कृतार्थ करें...

31 जनवरी *सच्चा संत हमें अंधकार में से बाहर निकालता है।* ***हम अंधकार में यानि – जगत में जीते हैं। संत हमें वहाँ से निकाल कर भगत के ग्रुप में ऐसा डाल देते हैं कि तुम्हें फील हो जाए कि यही मेरा सच्चा परिवार है।*** *भले ही इंद्रिय-अंतःकरण जड़ता को पाए हों, लोग हमें रिश्तेदारों या कुटुंबियों में खींच रहे हों, लेकिन चेतना में ऐसा रहेगा ही कि सच्चे सगे तो सत्संगी ही हैं।*

जैसे कि काकाजी ने बताया कि हज़ारों साल से हिन्दुस्तान की वैदिक संस्कृति पर परत जम गई है। आँखों में मोतिया होने पर परत चढ़ जाती है, तो सब धुंधला नज़र आता है। फिर सच्चाई की पहचान नहीं हो पाती... ऐसे ही दो चीजें बन गईं – एक तो जड़ता की परत चढ़ गई और अंग्रेजों की गुलामी की टॅनडेन्सी बन गई। हर एक की जी हज़ूरी-'यस सर' करना सीख गए। ब्राह्मणों ने अपना ब्रह्मत्व खो दिया - बेच दिया। बेचने का मतलब यह कि इतनी पाठ पूजा कराओ तो इतने पैसे देने पड़ेंगे, इतना जाप कराओ, तो इतने पैसे देने पड़ेंगे। गंगा में स्नान करके हम अपने आप ही पवित्र हो जाएँगे, लेकिन ब्राह्मण कहेंगे कि इतने पैसे देकर जाना पड़ेगा। ब्राह्मणों ने ये सब बेचने का धंधा शुरु किया है...

हम अपनी मन्नत पूरी करने के लिए भजन करते हैं, लेकिन मन में ऐसा विश्वास नहीं होता कि मैंने भजन किया है, तो अब ये काम होगा ही होगा। दरअसल, भगवान तो सुनते ही हैं, क्योंकि वे हमारे हैं। यदि वे हमारी वॉन्ट्स एण्ड डिमान्ड्स पूरी नहीं करेंगे, तो और किसकी करेंगे ? पर, हमें मन में ऐसा रहता है कि करेंगे या नहीं करेंगे। काकाजी इसे 'श्रद्धालु नस्तिक' कहते। श्रद्धा भी है, लेकिन नास्तिकभाव भी है ! पर, ***अपना प्रगट का ज्ञान खोखला नहीं, ठोस है। जिस तरह खाना खाने के बाद डकार आती है और हमें तसल्ली होती है कि हमने खाना खाया, उसी प्रकार भजन करने के बाद भी तसल्ली होती है कि ये काम होगा ही...*** *वास्तव में तो हम सभी 'ब्रह्म' हैं, यदि मूर्तिमान साकार ब्रह्म से एकता कर लेंगे, तो हमारे भीतर का 'ब्रह्म' प्रगट हो जाएगा। एकता करने हम उनसे जुड़ जाएँ। पहले गुरु जो पढ़ाते थे, वो सब विश्वास से मान जाते थे। अब ज़माना बदल गया है ; अब लोगों को लॉजीकली कन्विन्स करना पड़ता है...*

हम अपने आप तैर कर समुंदर पार नहीं कर सकेंगे, क्वीन मॅरी जैसे स्टीमर में बैठकर जाना पड़ेगा और ऐसी बड़ी स्टीमर मिल गई, तो मौज करते-करते समुंदर को पार कर लेंगे। साधना करके प्रभु का साक्षात्कार करना कठिन

था, लेकिन महाराज ने हमारे लिए ऐसी सुविधा कर दी कि अति समर्थ संत की गोद में बिठा कर हम पार उतर जाएँगे, वे हमें अक्षरधाम पहुँचा देंगे। यह हमारी कल्पना से परे की बात है...

काकाजी ने बताया कि हम स्वतंत्र ज़रुर रहेंगे, पर स्वच्छंद नहीं रह सकते। भगवान और मुक्तों का दास होकर रहना पड़ेगा। दास के दास बनने का हम अभी प.पू. स्वामीजी से सुनते हैं। काकाजी भी कहते थे कि सेवक का सेवक बनो। मुझे भी कहा था – दीपक का सेवक बनो... काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी जैसे संत द्वारा भगवान का तत्व हमें प्रगट मिल गया है, तो हमें एक ही दृढ़ता करनी है कि मानव स्वरुप में मुझे प्रभु मिले हैं। उसके बाद वे ही हमारी साधना पूरी करते हैं। हमें सिर्फ इनके हर एक चरित्र को देख कर खुश रहना है और दिव्यभाव रखना है। ऐसा क्यों किया, ऐसा नहीं करना चाहिए था, ये नहीं बोलना चाहिए था या ये नहीं खा लेना चाहिए था – कुछ नहीं; ***उन्होंने जो किया वो ठीक ही नहीं, सत्य और दिव्य है।*** *सबके सामने भोजन करने के बाद भी दुर्वासा उपवासी थे। असल में उन्होंने भीतर में रहे हुए ब्रह्म को भोजन खिलाया था, इसलिए दुर्वासा सदा उपवासी कहलाए। हम भी खाने-पीने, उठने-बैठने, जागने-सोने या कोई भी क्रिया करें, तो भगवान को याद करके करें। जब बापा ये बातें करते थे तब समझ नहीं आती थी, पर अब समझ आती हैं। हमें ये कॉन्सियसनेस भूलनी नहीं चाहिए...*

भजन-ध्यान भले अकेले करा करें, सबके साथ भी बैठे हैं तब भी आँख बंद करके या कॉन्सियसनेस में कि 'मैं और मेरे स्वामी' – बस! भजन में सपोर्ट की ज़रुरत नहीं है। बाकी दूसरे हर काम एक-दूसरे के सपोर्ट से करें। यदि मन में आए कि मैंने अकेले किया तो समझना कि हमने अपने अहंकार के साथ एकता कर ली। हमने कोई काम सबका सपोर्ट लेकर भी किया हो, पर जब सक्सेसफुल हो जाते हैं, तब ऐसा होता है कि सबका साथ तो था, पर मैं था तो ये काम हो गया। यूँ, कई बार मन में ऐसी भ्रमणा रह जाती है। ऐसा नहीं होता कि सबका साथ था और प्रभु के आशीर्वाद से हो गया। ऊपर-ऊपर से बोलेंगे, लेकिन भीतर में वो दृढ़ता नहीं होती।

भगवान का आसरा, भक्तों के साथ निर्दोषबुद्धि, दिव्यभाव और हिल-मिल कर काम करते हुए भीतर से भजन-प्रार्थना करते रहेंगे, तो वे हमारा काम पार उतारेंगे ही उतारेंगे। ***सारी दुनिया भजन करती है, पर मानव स्वरुप में अपने यहाँ काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी जो प्रगट प्रभु हैं, उन्हें स्मृति में रखकर कार्य करना अलग बात है। बड़े संतों की स्मृति भी आशीर्वाद रुप होती है। जब काकाजी ने ये बातें करी थीं, तब ऐसी डॅवलपमेन्ट नहीं थी। पर, काकाजी ने जो-जो बोला है, वो आज हर जगह नज़र आता है।*** *काकाजी का यह सॅन्टेन्स भी समझना चाहिए कि मैं उनका गांडा-घेला (पगला-बुद्धू) लड़का हूँ। मतलब हम कैसे भी होंगे, हमारे अंदर, भजन या ध्यान में कोई बरकत भी नहीं होगी, लेकिन हम इनके हैं; तो भगवान हमारी बात को प्राथमिकता देंगे। हम क्या सोचते हैं कि वे तो बड़े-बड़े संतों की प्रार्थना पहले सुनते हैं, हमारी थोड़ी सुनेंगे? ऐसा नहीं है; हम उनके होने चाहिए। दरअसल तो जो ऐसे कमज़ोर हैं, भगवान उनका ज़्यादा ख्याल रखते हैं... बस हम भगवान के पक्के होने चाहिए। जो भगवान का 'एकनिष्ठ' सेवक नहीं होगा, फिर चाहे वो कितना पूजा-पाठ, धर्म-नियम में रहता हो या मंदिर जाता हो, पारायण में बैठता हो, व्रत करता हो, दान करता हो, तप करता हो इत्यादि सब बेकार है। सब कम्फर्टस को हम भले एन्जॉय करें, लेकिन भगवान की निष्ठा अगर पक्की होगी, तो ये चीज़ें कोई मायने*

नहीं रखती। हम भगवान के होने चाहिए। जैसे माँ-बाप के लिए 'बच्चा' अपना होना चाहिए। वो पड़ोस के बच्चे का इतना ख्याल नहीं रखेंगे...

काकाजी के रूप में हमें ब्रह्मशक्ति मानव स्वरुप में मूर्तिमान - 'टोटल' में मिली है। *लेकिन यह बात हमारे दिमाग़ - जीव में बैठनी चाहिए। जिसे भीतर में परोक्ष की भक्ति की भ्रांति पड़ी रही होगी, उसके लिए यह बात समझना मुश्किल है। छोटी आयु में हम सत्संग में आ गए, तो दूसरा कोई असर पड़ा नहीं। यदि सुख, शांति और आनंद जीवन में चाहिए, तो –*

*1. **भगवान** का भरोसा होना मतलब – भगवान का **आसरा** व **निष्ठा**।*

*2. उसके **संत** के साथ हमारा संपर्क नहीं, **संबंध** होना चाहिए।*

*3. **सत्संगी,** भक्तों के साथ **हिलमिल** के काम करना।*

यदि लड़ते - झगड़ते रहें, तब भी भीतर में ऐसा होना चाहिए कि हम एक हैं। इससे क्या होगा कि हमें एक - दूजे की हुँफ रहेगी। ये तीन चीज़ें रखेंगे, तो जीवन में सुख, शांति और आनंद बरक़रार रहेगा। काकाजी कहते थे – मुझे पूरा विश्वास है कि तुम यहाँ बैठे हो, कथा सुन रहे हो, पर तुम ये तीन बातें भूल जाओगे...

एक बात याद रखना कि ऐसी निष्ठा संत के द्वारा ही हो सकती है। हज़ारों बार मंदिर जाओ, कितनी ही पारायणें करो, पर ये निष्ठा नहीं हो पाएगी। प्रगट का संबंध होगा, तो उसकी कथा द्वारा ही पक्की निष्ठा होगी...

हम में और परोक्ष के भक्तों में फ़रक़ पड़ गया; वे ब्रह्मतत्व को मान कर जीवन जीते हैं और हम ब्रह्मतत्व के साथ जीवन जीते हैं। किसी को माँ मान कर जीवन जीना और माँ के साथ जीवन जीना – इतना फ़र्क पड़ता है...

1 फरवरी

*...हम समर्पित हैं नहीं, पर होने का दिखावा करते हैं कि महाराज हम आपके हैं। यहाँ (अंतर के दोष-स्वभाव-वृत्ति) टच मत करें ऐसा कंडीशनल - कुछ रिज़र्वेशन वाला सरन्डर होता है। इसलिए अपना काम बनता नहीं है। ऐसा मत सोचना कि काकाजी ने तो उस समय बात की थी। **ब्रह्मतत्व को स्थलभेद, जातिभेद, कालभेद – कोई भेद नहीं है। काकाजी की उस समय करी बात आज भी हमें इतनी ही लागू पड़ती है, यदि सिन्सियरली इस बात को हम अपने लिए सोचें तो...***

हम क्या कहते हैं – हे महाराज ! वैसे मैं टोटल आपका हूँ, पर मेरी ये चीज़, सिद्धांत, इज़्म को टच मत करना, इसके बिना तो मैं मर जाऊँगा। पर, महाराज भी कहते हैं कि तू तेरा सब वापिस ले ले, मुझे तो वही चाहिए जो तुझे रखना है। यही हमारी लड़ाई है। कई जन्मों से हम अपने मन के अधीन जीते आएँ हैं, इसलिए हमारी आदत छूटती नहीं है...

*काकाजी ने पोल खोल दी कि हम मंदिर में कुछ, घर में कुछ और समाज को दिखाने के लिए कुछ होते हैं। **हम डबल ही नहीं, ट्रिपल लाइफ जीते हैं। ये एक ऑपोर्च्युनिटी मिली है, तो मुट्ठी खोल दें। महाशक्ति क्या, ब्राह्मीशक्ति हमारे अंदर प्रगट हो जाएगी।** फिर हमें कहना नहीं पड़ेगा कि हमारे पास भगवान हैं। कहते हैं कि हम सब कुछ छोड़कर भगवान पाने के लिए आए हैं। हमारे बीहेव से सब अपने आप समझ जाएँगे कि इन्होंने भगवान*

सच में पाए हैं; वर्ना तो हास्यास्पद बनेंगे। सत्संग में कितने साल हो गए, अब तो अपनी ये प्रगति होनी चाहिए। ***प्रगट की परावाणी में बापा ने ऐसा कहा है – अब तो सफ़ेद बाल आ गए, कब समझेंगे और पकड़ेंगे...***

कोई काम न बनता हो या कोई मुराद पूरी न होती हो, तब साधु के प्रति मनुष्यभाव आता है। तब भी उन्हें ही प्रार्थना करनी चाहिए कि हे महाराज! मेरा मन नीरव, शुद्ध और स्थिर कर दो। काकाजी कहते थे कि इसके लिए दिल की सच्चाई से रो-रो के भजन-प्रार्थना करनी चाहिए, तब मन भीतर से डिस्टिल्ड वॉटर की तरह साफ़ हो जाएगा। मेरे हाथ में जो माला है वह ऑर्डिनरी क्रिस्टल की है, पर मंत्र से चार्ज होकर इसमें ट्रिमेन्डस पावर आ जाती है। यह बात दिखाई नहीं देती, पर यह आस्था और श्रद्धा का विषय है। काकाजी ऐसा कहते थे – जिस मनुष्य के जीवन में भगवान और संत के प्रति विश्वास, श्रद्धा और दिव्यभाव नहीं, वह व्यक्ति जड़बुद्धि कहा जाए।

2 फरवरी *काकाजी की बातें 1979 की हैं, लेकिन आज भी ऐसी लगती हैं कि अभी के लिए की हैं... बहुत समझने वाली बात है कि मंदिर बन जाते हैं, लेकिन समाज नहीं होता है। संस्थाएँ बन जाती हैं, लेकिन समाज नहीं होता और फिर ऑर्गेनाइज़र्स उसे अपनी बपौती समझ कर उस संस्था को चलाते रहते हैं। जबकि भगवान स्वामिनारायण ने एक अलग चीज़ की। उन्होंने एक समाज की स्थापना करी है, उसी सिद्धांत पर काकाजी ने दिल्ली आकर पहले एक छोटा-सा समाज तैयार किया। अपना तो चेपी चैतन्य है, तो एक में परिवर्तन देख कर दूसरे को सत्संग हुआ, दूसरे में परिवर्तन देख कर तीसरे को हुआ; फिर उससे समाज की बढ़ोतरी हुई।* ***व्यक्ति का परिवर्तन समाज को बढ़ाता है।*** *आगे भी हमें भीड़ इकट्ठी नहीं करनी है।* ***इस तरह समाज बढ़ा है और यह बहुत बड़ी 'भक्ति' है। हम प्रगट की निष्ठा जितनी फैलाएँ-ठोस करें, उतनी हमारी 'पराभक्ति' है।*** *आगे भी* ***हमें प्रवचनों से नहीं, बल्कि अपने बीहेव से सत्संग को आगे बढ़ाना है...***

भगवान स्वामिनारायण द्वारा फॅमिली बेईज़ पर एक समाज तैयार हुआ जिसके केन्द्र में भगवान हैं। ***केन्द्र में ऐसे प्रभु-विभूति पुरुष नहीं होंगे, तो साम्यभाव स्थापित नहीं होगा।*** *यहाँ भक्तों के बीच में कोई ऊँच-नीच नज़र नहीं आता है। हम सब एक सरीखे काकाजी के सेवक हैं। भले फाइनेन्शियली फ़रक़ होगा, लेकिन भक्तों के दिल में वो चीज़ भी मायने नहीं रहती है। यह सबसे बड़ी विशेषता है।*

भगवान का आसरा और भजन हर कोई करता है, लेकिन साथ में ऐसे संत चाहिएँ, इनके वचन से भगवान के तत्व को पहचान कर भजन करने से वह इन्स्टन्ट एण्ड मिरॅक्युलस्ली वर्क करता है। ***अशक्य घटना हो, तब भगवान और संत की स्मृति के साथ भजन करेंगे, तो फट् से काम हो जाता है।***

काकाजी ने 'प्रगट की उपासना' की बात करी है – भगवान स्वामिनारायण को धारे हुए भगवान के स्वरुप, उस स्वरुप को पहचाने हुए ऐसे संत, संत के वचन से उस स्वरुप का निश्चय और उनके संबंध वाले भक्तों की दिव्यभाव, सुहृदभाव और मिलजुल कर सेवा करें, तब जाकर धाम, धामी और मुक्त के तीन चक्र पूरे होते हैं। शास्त्रीजी महाराज ने धाम और धामी की मूर्तियाँ पधराईं। अब साहेब के यहाँ देखेंगे तो उनके यहाँ धाम, धामी और मुक्त की मूर्तियाँ हैं। यह बहुत बारीक चीज़ है। लेकिन हमारी स्पीडी और स्मूध प्रगति के लिए इन तीन बातों की पक्की दृढ़ता होना बहुत अनिवार्य है। अगर भगवान के भक्तों में दिव्यभाव रखेंगे, तो जीवन में कभी भी कोई

समस्या आएगी ही नहीं। यदि आएगी भी, तो हम कब उसमें से निकल जाएँगे पता भी नहीं चलेगा... **ईंट, सीमेंट के मंदिर तो बन जाएँ, लेकिन काकाजी का मिशन था कि सभी संत और भक्त 'चैतन्य मंदिर' बन जाएँ...**

संत हमें आध्यात्मिकता में 'शॉर्ट्कट्स' एन्ड 'स्पीडी वे' बताते हैं। महाराज ने ऐसे संतों की परंपरा अखंडित रख कर हम पर बहुत करुणा करी है। भले ही महाराज का ही भजन करते होते, पर **अगर काकाजी हमारे जीवन में नहीं होते, तो आश्वस्तता नहीं होती कि हमारा कोई बैठा हुआ है।** परसॉनीफ़ाइड् फॉर्म में डिविनिटि मस्ट बी मॅनिफॅस्टेड ऑन धी अर्थ। इससे भक्तों को जीव में हमेशा तसल्ली रहे कि जहाँ धबक-धबक होता है, वहाँ हमारे प्रभु विराजमान हैं। उसे जाग्रत करने का काम संत का है... काकाजी ने रहस्य को उजागर किया है कि अगर भगवान, संत और भगवदी – इन तीन तत्वों की परिपक्वता दिव्यभाव से रहेगी, तो जहाँ धबक-धबक होता है वहाँ असली नारायण हमारे भीतर में प्रगट हो जाएँगे – ऐसा हमें एहसास हो जाएगा। आँखें बंद करके बैठेंगे तो ख्याल पड़ जाएगा कि स्वामिनारायण का रटन शुरु हो गया है... यह भी रहस्य बताया कि कोई भी आध्यात्मिक, सांसारिक, सामाजिक क्रियायोग **जोड़ में करोगे,** उससे डायनेमीज़म आएगा - सफलता मिलेगी, तुम्हें एफर्ट नहीं करना पड़ेगा। क़ामयाबी और स्पीड मिल जाएगी...

काकाजी ने हमें अपनी आमदनी बढ़ाने का तरीका बता दिया कि **'देकर जिओ।'** मतलब भगवान, संत और निष्ठा वाले सत्संगी - भक्तों के लिये अपनी नॅचर के मुताब्रिक तनिक भी कंजूसी नहीं रखना। हाँ, निष्ठावान भक्त होना चाहिए; खाली स्वामिनारायण का टीका लगा लिया, ऐसा नहीं हो। काकाजी के संबंध से आप सब मेरे ही हो, इसमें कोई शंका है ही नहीं। आप सबके लिए मंदिर के दरवाज़े हमेशा खुले रहेंगे। हम कहते हैं कि गुणातीत समाज के हैं; तो यदि गुणातीतभावना को बरक़रार रखना है, तो 'लाओ, लाओ नहीं करना।' हम सब मिल कर - बाँट कर एक-दूसरे को देते रहेंगे तो हमारा विकास होता ही रहेगा। मैं नहीं कहता कि उड़ा दो। बस, संत के वचन से भगवान के भक्तों के लिए दिव्यभाव, महिमा और सुहृदभाव से खर्च करते रहेंगे, तो दस गुना वापिस मिलेगा... **काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब वगैरह को आगे रख कर, इनकी निश्रा और सेरेछाया में, इनके सिद्धांतों और नक्शेकदमों पर चलेंगे, तो हमारा हर प्रकार से-हर क्षेत्र में जय-जयकार बनता रहेगा...**

आज भी काकाजी के आशीर्वाद को सही समझें कि आज तक का सब माफ़ करके काकाजी ने अपने ऊपर ले लिया है, पर हम अब नए प्रारब्ध खड़े न करें। नए प्रारब्ध क्या कि सत्संग या मंदिर में रह कर फलां ऐसा-ढिकना ऐसा करा करें। हर एक का कॉन्ट्रोलिंग महाराज और संत का है। हर एक के लिए जो ज़रूरी होगा, वहाँ से उसे गुज़ारने के लिए यह प्रोसेस चलता होगा। हमें इसमें इन्डल्ज नहीं होना है। हमारे प्रकाश में कोई चीज़ आती है, तो हम भजन करें कि हम सबका श्रेय होता रहे... कोई भी क्रिया करने से पूर्व प्रभु के नाम का नमक डाल कर करें... जीवन में डिस्टर्बन्स आने पर हम प्रभु का संबंध भूल कर जीवभाव में चले जाते हैं। हमें तो सर्वोपरि मिले हैं; तो काल, कर्म, माया या कोई ग्रह-पनौती हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकती। अनन्यभाव से भगवान का आसरा रखे रखना है; हमारी निष्ठा की कसौटी होती है, पर वे हमारा अहित होने ही नहीं देंगे...

जीवन में सत्संग की प्रॉयरिटी रखें। वितरागी पुरुष, जिसे अपना कोई राग न हो उसके पास अपना मन छोड़ दें।

भगवत् कृपा के इस अंक का यदि सार देखें तो सभी प्रत्यक्ष स्वरूपों ने 'गुणातीत ज्ञान' परोस कर हम पर अत्यंत कृपा की है, मानो 'छप्पर फाड़ कर अपना सब कुछ दे दिया है।' तो, जैसे कि अब **20 मार्च** को **होली–अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** की जयंती आ रही है, तब सहज ही उनका समर्पण याद आता है कि जिस प्रकार प्रहलाद की भक्ति के प्रताप से अभय वरदान प्राप्त करके बैठी बुआ 'होलिका' भी 'प्रहलाद' को अग्नि से जला नहीं सकी, बल्कि ख़ुद ख़ाक हो गई! उसी प्रकार, **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज ने अपनी अचल भक्ति से मायारूपी होलिका पर विजय हासिल करके, मुमुक्षुओं को साधुता की पराकाष्ठा का दर्शन कराया।** अडिग स्वरूपनिष्ठा व देह का अनादर करके, केवल माहात्म्य में सराबोर रहने की अद्‌भुत सीख दी। उनके बढ़ते प्रभाव, महिमा को देख कर कई विरोधियों ने द्वेषभावना से उन्हें कई असहनीय कष्ट दिए, उपेक्षित किया; फिर भी अनादि महामुक्त भगतजी महाराज ने तो पल-पल यही माना कि इनके द्वारा **'गुणातीत' ही खेल रहे हैं और वे मेरा कभी अहित नहीं होने देंगे।** सो, उन्होंने न तो मुक्तों का अभाव लिया और न ही गुरु गुणातीत का! उनका तो एक ही जीवनमंत्र था–गुणातीत के लिए यह देह कुर्बान! तभी तो अपने संप्रदाय में अनादि महामुक्त भगतजी महाराज एवं उनके प्रसंग साधकों के लिए आदर्शरूप हैं।

जैसे कि भक्त प्रहलाद की होलिका पर विजय के आनंद को लोग अगले दिन रंगों से व्यक्त करते हैं, वैसे ही सबके जीवन में ब्रह्मानंद प्रगटाने-प्रगट प्रभु के रंग से जीवन को अमृतमय बनाने के लिए, **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** ने **धुलेन्डी** के पावन दिन प्रादुर्भाव करके, आश्रितों के मोक्ष की डोर स्वयं थाम ली, जो कि इस वर्ष **21 मार्च** को है। संतभगवंत प.पू. साहेबजी के जीवन प्रसंग निहारें तो हमेशा नवीन दर्शन ही होता है। अपनी विचक्षणता, सच्ची सूझ और अद्‌भुत प्रतिभा से कइयों को सहज मोह लें ऐसे हैं। परंतु, कभी भी किसी व्यक्ति, पदार्थ, प्रसंग, शक्ति या गुण के कारण, उनका व गुरुवर्य योगीजी महाराज का संबंध टूटा नहीं। उन्होंने न तो प.पू. बापा को कभी विवश किया और न ही उनके अध्यात्म जीवन में ज्वार-भाटा आया। प.पू. बापा को उन्होंने कभी भी 'ना' शब्द कहा ही नहीं। हमेशा हँसते हुए मुखारविंद के साथ आनंद-कल्लोल करते-कराते ही वे दिखे हैं। दरअसल, उदासी और बेचैनी तब आती है कि जब हमारी दृष्टि सत्पुरुष की ओर नहीं रहती और हम अपने बल से मनमुखी जीवन जीते हैं। पर, संतभगवंत प.पू. साहेबजी ने तो अन्यों को भी गुरुमुखी जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करके निहाल किया है। आज **गुरुस्थान पर होते हुए, कइयों के दिल की धड़कन-आधार बनने के बावजूद भी उनके प्रत्येक चरित्र-चेष्टा में यही दर्शन होता है कि सब कुछ प.पू. बापा की देन है और वे ही सबके तंत्र को चला रहे हैं।** तो, अक्षरधाम की ऐसी **दिव्य विभूतियों के प्राकट्य पर्व पर** भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में यही **प्रार्थना** कि अब केवल उनके गुणों का गान-ध्यान न करें, बल्कि प्रगट विभूतियों का पल-पल का वर्तन हमें जो सही अर्थ में **प्रभुप्रेरित जीवन जीने की दिशा** दिखाता है-**कला** सिखाता है, उसे योगीगीता के अनुसार **'चातक पक्षी' की भाँति आत्मसात् करें!**

Statement about ownership and other particulars about newspaper —

'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar - III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar - III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 11 March, 2019

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 13.3.'19, बुधवार – **प.पू. गुरुजी का 82वाँ प्राकट्य दिन**
प्राकट्योत्सव – सायं 5:00 बजे से 'ताड़देव' मंदिर में...

(2) दि. 17.3.'19, रविवार – एकादशी – व्रत

(3) दि. 20.3.'19, बुधवार – होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरुप भगतजी महाराज की जयंती**

(4) दि. 21.3.'19, गुरुवार – धुलेन्डी, **संतभगवंत प.पू. साहेबजी की प्राकट्य तिथि**
'ताड़देव' मंदिर में सुबह 9:00 बजे से चंदनोत्सव

(5) दि. 1.4.'19, सोमवार – एकादशी – व्रत

(6) दि. 14.4.'19, रविवार – रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती** – व्रत

(7) दि. 16.4.'19, मंगलवार – एकादशी – व्रत

(8) दि. 17.4.'19, बुधवार – गुरुहरि योगीजी महाराज की दीक्षा तिथि

(9) दि. 19.4.'19, शुक्रवार – हनुमान जयंती

12 जनवरी 2019, सायं

गुरुजी ने बखूबी दिनकरभाई के 75वें प्रागट्य दिन के सेलिब्रेशन का पहला सोपान मना लिया।

– प.पू. भरतभाई

'स्वरूप का स्थितप्रज्ञ' यानि दिनकरभाई!

– प.पू. गुरुजी

12 जनवरी 2019, सायं
दीदी, गुरुजी के साथ दिव्यभाव महिमा और सेवकभाव से जो जुड़ी हैं,
वो ही उनकी शक्ति है–पावर है।
– प.पू. भरतभाई

Air Mail **R.N.I. 28971/ 77**

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052